सनातन दर्शिका

विक्रम संवत् 2079

संस्करण- 2022-23

काशी उत्सव-वाराणसी

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

।।सं गच्छध्वम् सं वदध्वम्।।

सनातन | संस्कृति | सहयोग | समानता | सशक्तिकरण | सद्भावना | समर्पण

9435216657, 9935504660, 8601720961 brekamofficial@gmail.com www.bramharashtraekam.org

।। भविष्य की सेवाओं के लिए विचार ।।

सनातन मंच

यह ऐसा विशाल मंच है जो प्राचीन समय से सृष्टि की रचना के अनुसार जो व्यवस्था बनी है, उस सनातन व्यवस्था की संस्कृति, संस्कार एवं सभ्यता को ध्यान में रखते हुए सनातन धर्म के प्रमुख संतो, धर्म प्रचारकों एवं धार्मिक वक्ताओं को मंच प्रदान कर समाज को जागरूक करते हुए सनातन मूल्यों, परंपराओं एवं आदर्शों की स्थापना करेंगें।

सनातन सभा

समय- समय पर सनातन धर्म के पर्व, त्योहारों और विशेष दिवसों पर प्रबुद्ध एवं विद्वान लोगों की सभाएं आयोजित करेंगे और उनके विचारों से प्राप्त शिक्षाओं के द्वारा हम पूरे विश्व में सनातन धर्म की महत्ता उसकी वैज्ञानिकता, आध्यात्मिकता, योग एवं दर्शन का प्रचार प्रसार करते हुए सनातन धर्म की मजबूत पुनर्स्थापना करेंगे।

शैक्षणिक सेवाएं

ब्रह्मराष्ट्र एकम आर्थिक रूप से कमजोर, शिक्षा दीक्षा से वंचित बच्चों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है, साथ ही खिलाड़ियों के लिए आधारभूत सुविधाएं विकसित करना और उन्हें प्रदान करना तथा उच्च स्तर जैसे ओलंपिक, कॉमन वेल्थ या राष्ट्रीय खेलों में सहभागिता हेतु प्रयास करने वाले खिलाड़ियों और उनके परिवारों को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान किया जाता है।

धर्मार्थ सहायता

ब्रह्मराष्ट्र एकम सनातन धर्म से संबंधित कार्यों के लिए सदैव उपस्थित रहता है इसके अलावा धार्मिक कार्यों,उत्सवों, राष्ट्रीय पर्वों का जनता में प्रचार प्रसार करते हुए जनता को इनसे जोड़ने का कार्य करता है। इसके अलावा ब्रह्मराष्ट्र एकम सनातन धर्म का कार्य करने वाले लोगों व संस्थाओं को आर्थिक एवं बौद्धिक सहायता प्रदान करती है।

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

।।सं गच्छध्वम् सं वदध्वम्।।

काशी उत्सव

हर हर महादेव

श्रीबाबा विश्वनाथ

काशी

जय माँ

अन्नपूर्णेश्वरी

काशी

श्री पूज्य सनातन धर्मावलम्बियों का परम सान्निध्य-आशीर्वाद

भूमा पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी
अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज

श्री अन्नपूर्णा पीठाधीश्वर
पूज्य स्वामी शंकर पुरी जी

पद्मविभूषण पं. छन्नुलाल मिश्र जी
(प्राख्यात-शास्त्री गायक)

महामण्डलेश्वर सतुआ बाबा
महंत श्री संतोषदास जी

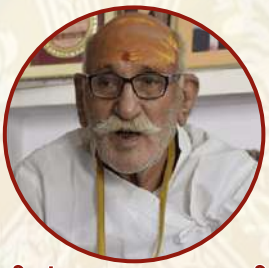

पद्मश्री पं. रामयत्न शुक्ल जी
अध्यक्ष-काशी विद्वत् परिषद्

राज्य मंत्री (आयुष मंत्रालय उ.प्र.)
संरक्षक ब्रम्हराष्ट्र एकम्

डॉ0 रीता बहुगुणा जोशी जी
(सांसद-प्रयागराज)

श्री गुरुदेव पं. दिवाकर द्विवेदी जी
संस्कार अध्यक्ष

पं. सतीशचन्द्र मिश्र जी
संचालन अध्यक्ष

श्री रविन्द्रनाथ मिश्र जी
प्रधान अध्यक्ष

संस्थापक अध्यक्ष

डॉ. सचिन सनातनी

सनातन | संस्कृति | सहयोग | समानता | सशक्तिकरण | सद्भावना | समर्पण

संख्या- G.512/C.M 2/2021.

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक 26 NOV 2021

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि ब्रह्मराष्ट्र, काशी द्वारा दिनांक 19 व 20 दिसम्बर, 2021 को अन्तर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शान्ति एकता यज्ञ आयोजित किया जा रहा है।

संत अपना जीवन लोक कल्याण के कार्यों में समर्पित करते हैं। समाज को सही दिशा प्रदान करने में संत समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके दृष्टिगत सनातन धर्म का प्रचार–प्रसार करते हुए सम्पूर्ण भारतवर्ष को एकता, अखण्डता एवं समानता के सूत्र में बांधने के प्रयास से अन्तर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शान्ति एकता यज्ञ का आयोजन सराहनीय है। मुझे आशा है कि प्रभु कृपा से यह कार्यक्रम अपने उद्देश्यों में सफल सिद्ध होगा।

आयोजन की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2236181 / 2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

सत्यमेव जयते

रविशंकर प्रसाद
संसद सदस्य, लोक सभा
(पूर्व केन्द्रीय मंत्री)

नई दिल्ली
दिनांकः ३०/१२/२०२२

संदेश

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही कि ब्रह्मराष्ट्र एकम्, काशी द्वारा 'राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन द्वितीय- विश्व शान्ति एवं मानव कल्याण यज्ञ' का आयोजन आगामी ११ व १२ फरवरी, २०२२ को हरिद्वार में किया जा रहा है जो अत्यन्त ही पुनीत कार्य है।

भारत सदियों से आध्यात्म एवं धार्मिक पंथों के लिए केन्द्र-विन्दु रहा हैं। विश्वभर से लोग ज्ञार्नाजन के लिए भारत आते रहे हैं। भारत की पावन भूमि में कई धार्मिक तीर्थस्थल हैं जहाँ शान्ति और आध्यात्म की आत्मा निवास करती हैं। ऐसे स्थानों में शान्ति और जीवन-दर्शन के लिए देश-विदेश से श्रद्धालु एवं आध्यात्मिक व्यक्तियों का आवागमन होता है। भारत ने सदैव विश्व को शान्ति, मानवता एवं भाईचारे का पाठ पढ़ाया है। प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि, साधु-संतो ने विश्व-कल्याण के लिए कठोर तपस्या एवं महायज्ञ करते थे। आज भी ऋषि-मुनियों की धरोहर को आगे बढ़ाते हुए विश्वकल्याण के लिए महायज्ञ, आध्यात्म-चिन्तन, अन्तराष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन जैसे अनेकों जनकल्याणकारी कार्यक्रम कर विश्व को भाईचारे के सूत्र में बाँधने का सतत् प्रयास होता रहता है। यह भारत की सनातन परम्परा रही है। भारत ही एक ऐसा देश है जो विश्व को एक परिवार मानता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के ध्येय के साथ भारत विश्व कल्याण की बात करता है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि 'ब्रह्मराष्ट्र एकम्' इसी दिशा में सतानत धर्म के संरक्षण एवं प्रवर्द्धन में प्रयासरत है। मुझे विश्वास है आने वालों दिनों में भी संस्था इसी भाँति समाज कल्याण के लिए कार्य करती रहेगी।

'राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन द्वितीय' के आयोजक समिति के सदस्यों एवं कार्यक्रम में उपस्थित होने वाले सभी सज्जनों को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

[रविशंकर प्रसाद]

श्री सचिन मिश्रा
आयोजक,
ब्रह्मराष्ट्र एकम, काशी

निवास : 21, मदर टेरेसा क्रिसेंट, नई दिल्ली – 110011, दूरभाष : 2379 3228 फैक्स: 2379 3691

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून– 248001
सचिवालय फोन: 0135–2716262
0135–2650433
फैक्स: 0135–2712827
विधान सभा फोन: 0135–2665100
0135–2665497
फैक्स: 0135–2666166
Email: cm-ua@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **ब्रह्मराष्ट्र एकम् वाराणसी उत्तर प्रदेश** अपने **द्वितीय "राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन"** का आयोजन अद्भुत मंदिर, सप्त सरोवर मार्ग, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में किया जा रहा है। मुझे आशा है कि राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन में भारत को महाशक्ति बनाने हेतु राष्ट्र की एकता, अखण्डता और समानता को एक सूत्र में बांधकर अपने सनातन धर्म संस्कृति को पूरे विश्व में व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु सभी धर्मविलबियों के साथ एकजुट होकर अखण्ड भारत–सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करेंगे। इस प्रकार के अधिवेशन आयोजन होने से विभिन्न लेखकों एवं बुद्धिजीवियों के उद्बोधन से निःसंदेह यह हमारे युवा वर्ग के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

मेरी ओर से **ब्रह्मराष्ट्र एकम् वाराणसी उत्तर प्रदेश** को **द्वितीय "राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन"** के सफल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

(पुष्कर सिंह धामी)

सुरेन्द्र शर्मा
हास्य कवि

बी–33, फ्लैटेड फैक्टरी कॉम्पलैक्स,
झंडेवालान, नई दिल्ली–110 055
B-33, Flatted Factory Complex,
Jhandewallan, New Delhi - 110 055
Tel.: 91-11-23547474 Telefax : 23533737
E-mail : surendersharmakavi@hotmail.com

ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आपने जो सनातन धर्म को बढ़ाने का कार्य किया है, उसके लिए आप सभी को बधाई विशेष रुप से मैं सचिन मिश्रा सनातनी जी को इस प्रकल्प के लिए शुभकामनाएं देना चाहता हूं,कि आपने अपने धर्म के प्रचार प्रसार और इसको निरंतर बनाए रखने का जो संकल्प लिया है। वह पूर्ण रुप से सफल हो रहा है इसके लिए मैं आपको शुभकामनाएं देता हूं और हरिद्वार में अधिवेशन इस संस्था का होने जा रहा है । जिसके लिए मैं सभी संस्था के पदाधिकारियों को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

सुरेन्द्र शर्मा

पद्मश्री प्राप्त

डा0 दयाशंकर मिश्र "दयालु"
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि
प्रशासन विभाग (एम0ओ0एस0)
उत्तर प्रदेश।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय : 71, मुख्य भवन, लखनऊ
दूरभाष सं0 : 0522-2238466

दिनांक 03.04.2023

पत्रांक-235/रा.मं.(स्व.प्र.)/आ.खा.सु./23

शुभकामना–संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **ब्रह्मराष्ट्र एकम् वाराणसी उत्तर प्रदेश** अपने **द्वितीय "राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन"** का आयोजन अद्भुत मन्दिर, सप्त सरोवर मार्ग, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में किया जा रहा है। राष्ट्र की एकता अखण्डता और समानता को एक सूत्र में बांधकर अपने सनातन धर्म संस्कृति को पूरे विश्व में व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु सभी धर्मावलंबियों के साथ एकजुट होकर अखण्ड भारत व सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करेंगे।

मैं कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु समस्त "**ब्रह्मराष्ट्र एकम् परिवार**"को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(डॉ0 दयाशंकर मिश्र, "दयालु")
(डा० दयाशंकर मिश्र "दयालु")
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
आयुष विभाग,
खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन (MOS)
उत्तर प्रदेश

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027

27 अगस्त, 2021

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ब्रह्मराष्ट्र एकम्, काशी द्वारा अपने प्रथम अधिवेशन के अवसर पर 'अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ' का आयोजन 19 एवं 20 दिसम्बर, 2021 को किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा निहित है। ऐसे आयोजनों से देश की एकता एवं अखंडता को बल मिलता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि संस्था इसी प्रकार राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देती रहेगी।

'अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ' के सफल आयोजन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

---

प्रो॰ जगदीश मुखी
राज्यपाल, असम

राज भवन, गुवाहाटी
पिन-781 001

10 दिसंबर, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि "ब्रह्मराष्ट्र एकम्" की ओर से वाराणसी के श्रृंगेरी मठ में दिनांक 19 व 20 दिसम्बर, 2021 को "अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ" का आयोजन होने जा रहा है।

सनातन धर्म की मूल भावना "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया" है। सनातन धर्म में मानवता अर्थात मनुष्यता को सर्वोपरि माना गया है। मुझे बताया गया है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम् इसी संदेश को प्रचारित-प्रसारित करने का कार्य कर रहा है। साथ ही यह संगठन सनातन धर्म के विचारों, संस्कारों, भावनाओं एवं संस्कृति के मूलभूत तत्वों को प्रोत्साहित करते हुए सनातन धर्म और सनातन धर्मियों के कल्याण हेतु समर्पण भाव से कार्य करता आया है।

मुझे यह भी बताया गया है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम् द्वारा वाराणसी में आयोजित हो रहे यह "अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन" देश का सबसे बड़ा सनातन अधिवेशन है, जिसके जरिए सनातन धर्म के प्रमुख संत एवं धर्म प्रचारक अपने शाश्वत विचारों से समाज को जागरूक करेंगे। मुझे विश्वास है कि यह "अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ" सामाजिक एकता की भावना को और अधिक प्रबल करेगा।

मैं "ब्रह्मराष्ट्र एकम्" द्वारा आयोजित किए जा रहे "अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ" के इस पावन कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ तथा संगठन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को बधाई देता हूँ।

जगदीश मुखी
(प्रो. जगदीश मुखी)

फोन : (0361) 2540500 (कार्यालय); फैक्स : (0361) 2731832 ; ई-मेल : rajbhavan-assam@gov.in

---

देवेंद्र फडणवीस
विरोधी पक्षनेता, महाराष्ट्र विधानसभा

दिनांक: १४ डिसेंबर,२०२१

शुभेच्छा

सनातन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है. अत्यंत चेतनामयी और वात्सल्यपूर्ण है. वसुधैव कुटुंबकम् की नींव रखनेवाला सनातन धर्म सभी को सहजता के साथ स्वीकार करता है. आज विश्व में जो दुःख, अशांती, अनिश्चितता, निराशा का भाव है, उसका समाधान इसी सनातन धर्म में बसता है.

मात्र भौतिक ही नहीं, अपितु अध्यात्मिक उन्नती का मार्गदर्शन सनातन धर्म करता है और बडी खुशी की बात है कि, अब सनातन धर्म को वैश्विक स्वीकृती भी मिल रही है. यही कारण है की, समूचे विश्व की भारत पर निगाहे है और भारत के ओर सम्मोहन बहुत आशाओं के साथ देख रहे है. ऐसे में हम भारतीय भी अपने स्व को पहचाने और उसके उत्कृष्ट बिन्दुओं के माध्यम से भारतीय संस्कृती का यथानुसरण करते हुए विश्वगुरु के पद पर पहुँच विश्वकल्याण की कामना करें.

हमें इसका भी आत्मचिंतन करना होगा की, जिस सनातन धर्म की मूलभूत धाराएं भारत के कण-कण में है, उसे हम वास्तविक में कितना पहचानते है? इस पृष्ठभूमि पर ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित सनातन युवा समागम का आयोजन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, प्रशंसनीय है. श्रृंगेरी मठ में संपन्न होने जा रहा यह आंतरराष्ट्रीय संमेलन संपूर्ण भारत वर्ष को एकता, अखंडता और समानता के एकसूत्र में बांधने के प्रयास में फलदायी सिद्ध होगा.

ब्रह्मराष्ट्र एकम के सभी सदस्यों का मैं अभिनंदन करता हूं, उन्हे यशस्वी आयोजन के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

(देवेंद्र फडणवीस)

कार्यालय : ११३, पहिला मजला, विधान भवन, मुंबई ४०० ०३२
टेलीफोन : ०२२-२२०२ ३०८३, फैक्स : ०२२-२२०२ ८८१६

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./ /पीआरओ/रास/21
रायपुर, दिनांक : दिसंबर 2021

-: संदेश :-

मुझे यह जानकर खुशी हुई ब्रह्मराष्ट्र एकम संस्था द्वारा 19 एवं 20 दिसंबर 2021 को अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

ऐसे आयोजन हमारे पुरातन धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुझे आशा है कि भारतवर्ष को एकता एवं अखंडता के सूत्र में बांधने की दिशा में ऐसे महत्वपूर्ण आयोजन समय-समय पर किये जाएंगे।

आयोजन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

मंगुभाई पटेल
MANGUBHAI PATEL

राज भवन
भोपाल-462052
RAJ BHAVAN
BHOPAL-462052

राज्यपाल, मध्यप्रदेश
GOVERNOR OF MADHYA PRADESH

क्रमांक 727/राजभवन/2021
भोपाल, दिनांक 23 नवम्बर, 2021

संदेश

हर्ष का विषय है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम् द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद जी महाराज की उपस्थिति ईश्वरीय प्रसाद है।

आज का जीवन भौतिकता प्रधान जीवन शैली पर आधारित है। समग्र मानव जीवन कल्याण के लिए यह जीवन शैली अपूर्ण है। वर्तमान जीवन की अधिकांश समस्याओं का आधार यही जीवन शैली है। शाश्वत चिंतन ही सनातन है। सनातन भोग और अध्यात्म, शारीरिक और आत्मिक आनंद के संतुलन के साथ आगे बढ़ने की जीवन चर्या है। मानव जीवन की समग्रता का आधार है। सनातन संस्कृति में सम्पूर्ण मानव जाति के विकास और अस्तित्व की चेतना शामिल है।

आशा है, अधिवेशन और शांति यज्ञ समाज में समभाव, सहयोग की भावनाओं को और अधिक मज़बूत बनाकर समरस समाज निर्माण में सहयोगी होंगे। विश्व शांति सन्देश का वाहक बनेंगे।

अधिवेशन एवं यज्ञ की सफलता की शुभकामनाएं।

मंगुभाई पटेल
(मंगुभाई पटेल)

Pt. Chhannu Lal Mishra Music Charitable Trust Varanasi (Regd.)
Regd. No. D-20/16

Shiv-Ganga Sangeet Kala Kendra
शिव गंगा संगीत कला केन्द्र

Ref. No. ....

Date 12/12/2021

शुभकामना पत्र

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम "अन्तर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व-शान्ति एकता यज्ञ" का आयोजन किया जा रहा है।

इस भव्य आयोजन हेतु कार्यक्रम एवं आयोजन अध्यक्ष श्री सचिन मिश्र जी को उनके अथक परिश्रम एवं सराहनीय प्रयास हेतु अपना आशीर्वाद देते हुए, मैं इस आयोजन की भव्य सफलता की कामना करता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है, धर्म एवं संस्कृति की वाटिका, "ब्रह्मराष्ट्र एकम्" अपने इस आयोजन के माध्यम से समाज में सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रति वास्तविक जागरूकता का प्रचार-प्रसार करने में पूर्णतः सफल होगी।

शुभ-आशीष सहित

"पद्म विभूषण"
पं॰ छन्नू लाल मिश्र

"छन्नूलाल मिश्र"
12/12/21

D. 60/61, Chhoti Gaibi, Krishnapuri Colony, Varanasi-221010, Mob. : 09412179457
e-mail : musiccharitabletrust@chhannulalmishra.com, e-mail : namrata.swaranjali@gmail.com
Web : www.chhannulalmishra.com

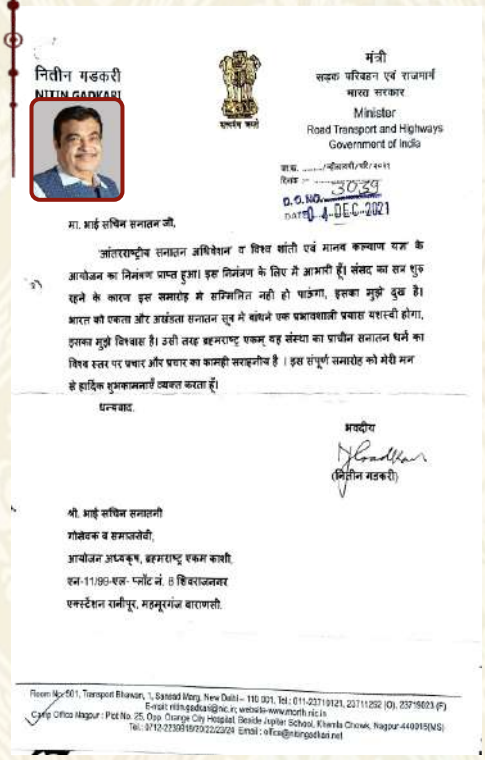

नितीन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highways
Government of India

D.O. NO. 3039
DATED 04-DEC-2021

मा. भाई सचिन सनातन जी,

'आंतरराष्ट्रीय सनातन अधिवेशन' व विश्व शांती एवं मानव कल्याण यज्ञ' के आयोजन का निमंत्रण प्राप्त हुआ। इस निमंत्रण के लिए मैं आभारी हूँ। संसद का सत्र शुरु रहने के कारन इस समारोह में सम्मिलित नही हो पाऊंगा, इसका मुझे दुख है। भारत को एकता और अखंडता सनातन सूत्र में बांधने एक प्रभावशाली प्रयास यशस्वी होगा, इसका मुझे विश्वास है। उसी तरह ब्रह्मराष्ट्र एकम् यह संस्था का प्राचीन सनातन धर्म का विश्व स्तर पर प्रचार और प्रचार का कामही सराहनीय है। इस संपूर्ण समारोह को मेरी मन से हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद.

भवदीय
(नितीन गडकरी)

श्री. भाई सचिन सनातनी
गोसेवक व समाजसेवी,
आयोजन अध्यक्ष, ब्रह्मराष्ट्र एकम काशी
एन-11/99-एल- प्लॉट नं. 8 शिवराजनगर
एक्सटेंशन रानीपुर, महमूरगंज वाराणसी.

Room No. 501, Transport Bhawan, 1, Sansad Marg, New Delhi – 110 001, Tel : 011-23719121, 23711252 (O), 23719023 (F)
E-mail: nitin.gadkari@nic.in; website-www.morth.nic.in
Camp Office Nagpur : Plot No. 25, Opp. Orange City Hospital, Beside Jupiter School, Khamla Chowk, Nagpur-440015(MS)
Tel.: 0712-2230818/20/22/23/24 Email : office@nitingadkari.net

---

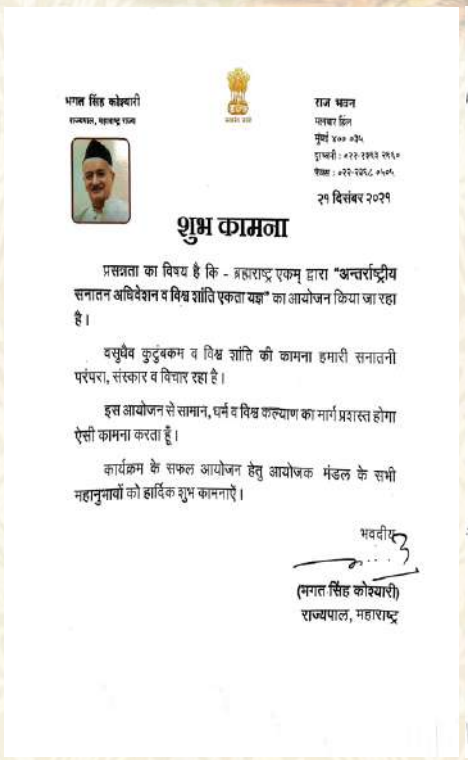

भगत सिंह कोश्यारी
राज्यपाल, महाराष्ट्र राज्य

राज भवन
मलबार हिल
मुंबई ४०० ०३५
दूरध्वनी : ०२२-२३६३ २६६०
फॅक्स : ०२२-२३६८ ०५०५

२१ दिसंबर २०२१

शुभ कामना

प्रसन्नता का विषय है कि - ब्रह्मराष्ट्र एकम् द्वारा "अन्तर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन व विश्व शांति एकता यज्ञ" का आयोजन किया जा रहा है।

वसुधैव कुटुंबकम व विश्व शांति की कामना हमारी सनातनी परंपरा, संस्कार व विचार रहा है।

इस आयोजन से सामान, धर्म व विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा ऐसी कामना करता हूँ।

कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आयोजक मंडल के सभी महानुभावों को हार्दिक शुभ कामनाएँ।

भवदीय
(भगत सिंह कोश्यारी)
राज्यपाल, महाराष्ट्र

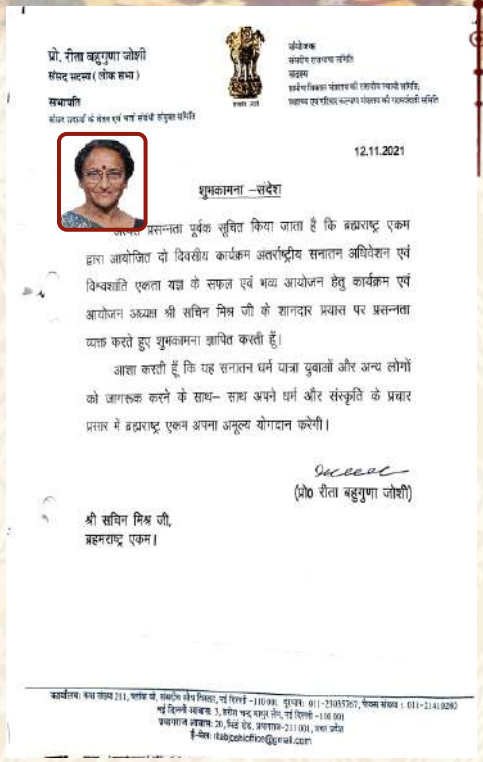

प्रो. रीता बहुगुणा जोशी
संसद सदस्य (लोक सभा)
सभापति
संसद सदस्यों के वेतन एवं भत्तों संबंधी संयुक्त समिति

संयोजक
संसदीय राजभाषा समिति
सदस्य
ग्रामीण विकास मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति

12.11.2021

शुभकामना –संदेश

अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक सूचित किया जाता है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्वशांति एकता यज्ञ के सफल एवं भव्य आयोजन हेतु कार्यक्रम एवं आयोजन अध्यक्ष श्री सचिन मिश्र जी के शानदार प्रयास पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभकामना ज्ञापित करती हूँ।

आशा करती हूँ कि यह सनातन धर्म यात्रा युवाओं और अन्य लोगों को जागरूक करने के साथ– साथ अपने धर्म और संस्कृति के प्रचार प्रसार में ब्रह्मराष्ट्र एकम अपना अमूल्य योगदान करेगी।

(प्रो० रीता बहुगुणा जोशी)

श्री सचिन मिश्र जी,
ब्रह्मराष्ट्र एकम।

कार्यालय: कक्ष संख्या 211, ब्लॉक बी, संसदीय सौध विस्तार, नई दिल्ली -110 001 दूरभाष: 011-23035767, फैक्स संख्या : 011-21410280
नई दिल्ली आवास: 3, हरीश चन्द्र माथुर लेन, नई दिल्ली -110 001
प्रयागराज आवास: 20, मिंटो रोड, प्रयागराज-211 001, उत्तर प्रदेश
ई-मेल: ritabjoshioffice@gmail.com

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA
INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम् द्वारा श्रृंगेरी मठ (काशी) वाराणसी, उत्तर प्रदेश में "अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ' का आयोजन किया जा रहा है।

धर्म और सभ्यता समाज की अनमोल विरासत होते हैं। आशा है कि हमारे प्राचीन सनातन धर्म के वैश्विक मंच पर प्रचार-प्रसार के साथ भारतवर्ष को एकता, अखंडता एवं संप्रभुता के सूत्र में बांधने के उद्देश्य से किए जा रहे इस अधिवेशन में सार्थक विचार-विमर्श होगा तथा इस अवसर पर आयोजित किए जा रहे शांति एकता यज्ञ के माध्यम से विश्व को शांति एवं समभाव का सकारात्मक संदेश प्राप्त होगा।

'अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति एकता यज्ञ' के सफल आयोजन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

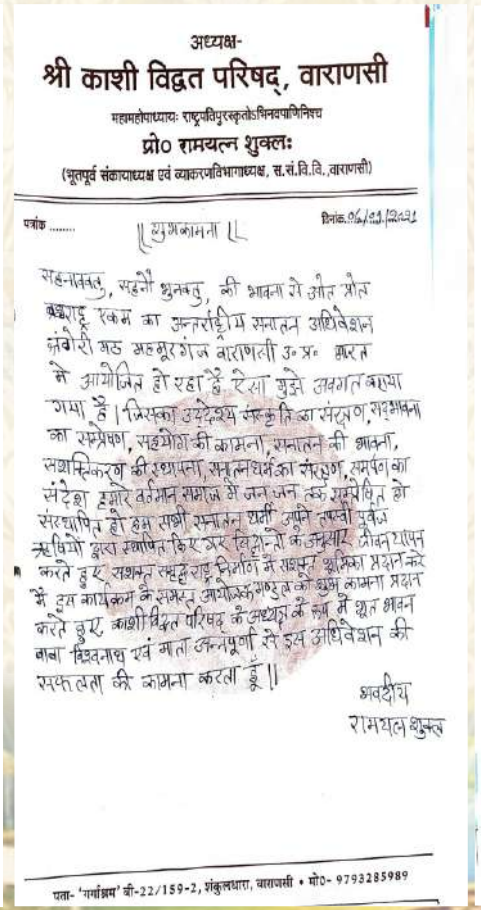

(ओम बिरला)

अध्यक्ष-
श्री काशी विद्वत परिषद्, वाराणसी

महामहोपाध्यायः राष्ट्रपतिपुरस्कृतोऽभिनवपाणिनिश्च
प्रो० रामयत्न शुक्लः
(भूतपूर्व संकायाध्यक्ष एवं व्याकरणविभागाध्यक्ष, स.सं.वि.वि.,वाराणसी)

पत्रांक .... दिनांक 06/11/2021

॥ शुभकामना ॥

सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु, की भावना से ओत प्रोत ब्रह्मराष्ट्र एकम का अन्तर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन श्रृंगेरी मठ महमूरगंज वाराणसी उ० प्र० भारत मे आयोजित हो रहा है, ऐसा मुझे अवगत कराया गया है। जिसका उद्देश्य संस्कृति का संरक्षण, सद्भावना का सम्प्रेषण, सहयोग की कामना, सनातन की भावना, सशक्तिकरण की स्थापना, सनातन धर्म का संरक्षण, समर्पण का संदेश हमारे वर्तमान समाज में जन जन तक सम्प्रेषित हो संस्थापित हो हम सभी सनातन धर्मी अपने तपस्वी पूर्वज ऋषियों द्वारा स्थापित किए गए सिद्धान्तों के अनुसार जीवन यापन करते हुए सशक्त समृद्ध राष्ट्र निर्माण में सशक्त भूमिका प्रदान करें मैं इस कार्यक्रम के समस्त आयोजक मण्डल को शुभ कामना प्रदान करते हुए काशी विद्वत परिषद् के अध्यक्ष के रूप में श्रुत भावन बाबा विश्वनाथ एवं माता अन्नपूर्णा से इस अधिवेशन की सफलता की कामना करता हूँ॥

भवदीय
रामयत्न शुक्ल

पता- 'गर्गाश्रम' बी-22/159-2, शंकुलधारा, वाराणसी • मो०- 9793285989

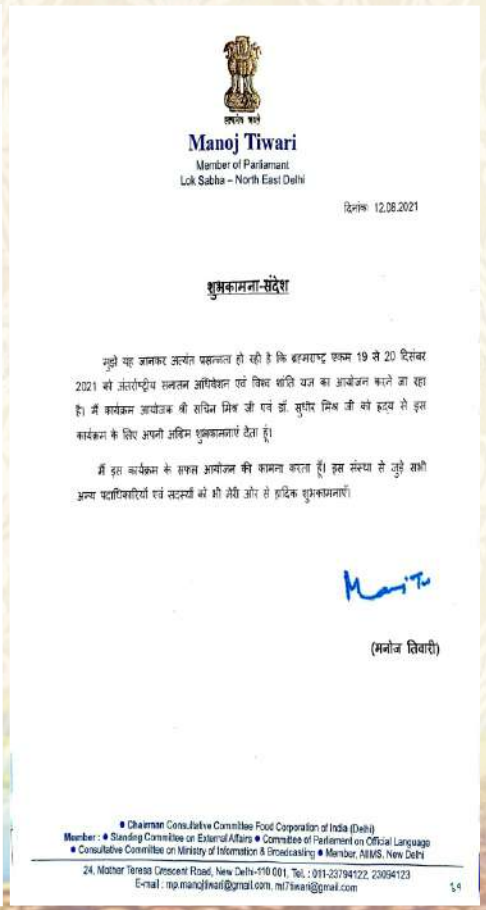

Manoj Tiwari
Member of Parliament
Lok Sabha – North East Delhi

दिनांक 12.08.2021

शुभकामना-संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम 19 से 20 दिसंबर 2021 को अंतर्राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन एवं विश्व शांति यज्ञ का आयोजन करने जा रहा है। मैं कार्यक्रम आयोजक श्री सचिन मिश्र जी एवं डॉ. सुधीर मिश्र जी को हृदय से इस कार्यक्रम के लिए अपनी अग्रिम शुभकामनाएं देता हूं।

मैं इस कार्यक्रम के सफल आयोजन की कामना करता हूँ। इस संस्था से जुड़े सभी अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों को भी मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(मनोज तिवारी)

• Chairman Consultative Committee Food Corporation of India (Delhi)
Member : • Standing Committee on External Affairs • Committee of Parliament on Official Language • Consultative Committee on Ministry of Information & Broadcasting • Member, AIIMS, New Delhi

24, Mother Teresa Crescent Road, New Delhi-110 001, Tel. : 011-23794122, 23094123
E-mail : mp.manojtiwari@gmail.com, mt7tiwari@gmail.com

ब्रह्मराष्ट्र एकम् क्या है ?

ब्रह्म - से जीव की उत्पत्ति या जीवात्मा

राष्ट्र - से अखण्ड भारत का खोया गौरव जिसे पुनर्स्थापित करना, जिसमें सशक्त राष्ट्र के निर्माण में यें चार महत्वपूर्ण आधार हैं धर्म, भाषा, सभ्यता और संस्कार । इन चार आधारों के साथ सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक नीतियों को सम्मिलित कर नागरिको को शिक्षित करना ।

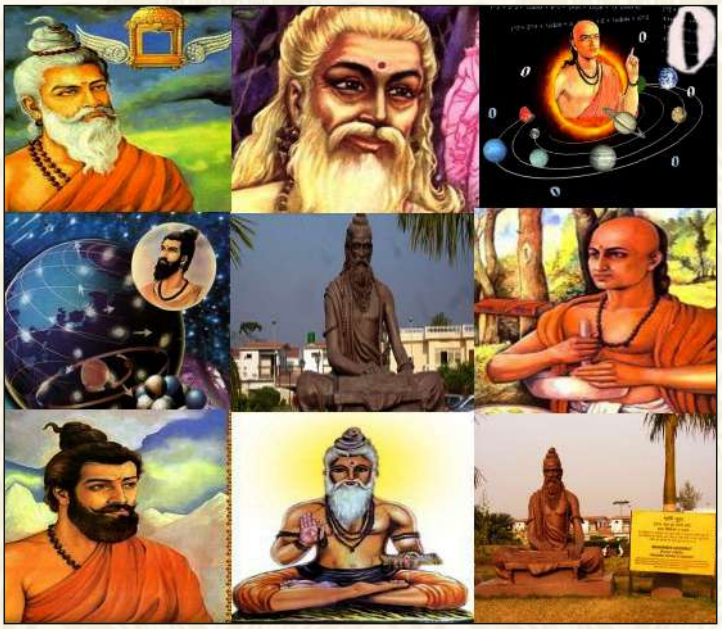

एकम् - अर्थात एकता जिसमें अखण्ड भारत के पुनर्निर्माण में सभी संगठित हों। जिससे यह कह सकते हैं कि ब्रह्मराष्ट्र एकम एक ऐसी संस्था हैं जो पूरे विश्व में धर्म के लिए शांति की स्थापना करने हेतु व सभी जीवात्माओं को अखण्ड भारत राष्ट्र भारत के नव निर्माण में एकता, अखंडता और समानता के सूत्र में बाँधने की मूलभूत व्यवस्था हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने भी श्रीमद भगवतगीता में कहा है कि :-

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

अर्थात- सज्जन पुरुषों के कल्याण के लिए व दुष्कर्मियों के विनाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मैं (श्रीकृष्ण) युगों - युगों से प्रत्येक युग में जन्म लेता आया हूं ।

संस्था का उद्देश्य

ब्रह्मराष्ट्र एकम् द्वारा सनातन (हिंदू) धर्म का प्रचार प्रसार विभिन्न आयोजनों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे विश्व में सनातन धर्म का सतत प्रचार प्रसार करते हुए सनातन धर्म से विमुख हुए पंथों संप्रदायों एवं भूले बिसरे बहके हुए लोगों को संस्कारित कर शिक्षित करना साथ में भारत के युवाओं को भी इस धारा में जोड़ना और उन्हें नशा मुक्त करना जिससे वो सनातन संस्कृति और परंपराओ से जुड़कर वापस सनातन धर्म की मुख्य धारा में आ सकें | गुरुकुल की प्राचीन व्यवस्था की स्थापना करना, साथ ही जर्ज़र हो रहें प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार कराना, प्राचीन नदियों के अस्तित्व को बचाना, पर्यावरण संरक्षण कर उन्हें संतुलन बनाने का प्रयास करना व पुरातन व्यवस्थाओ को संरक्षित करना आदि |

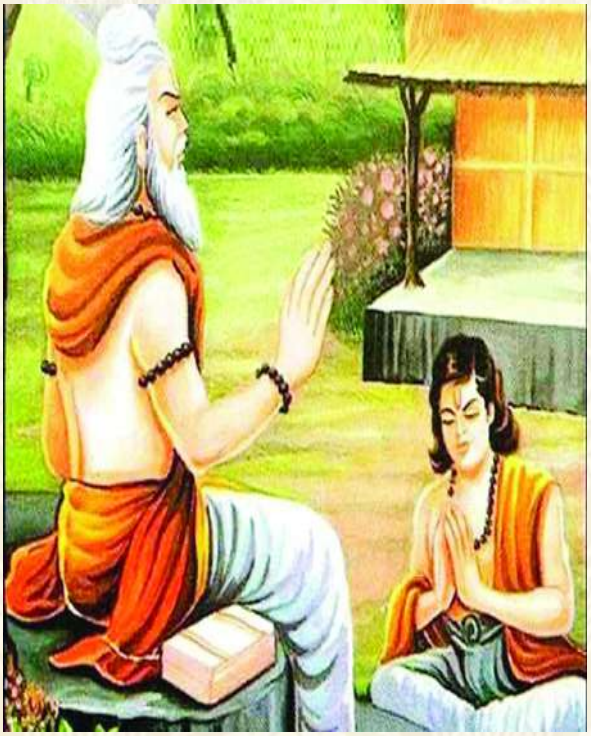

संस्था की कार्य शैली

- सर्वप्रथम आप अपने दायित्व की गरिमा बनाए रखेंगे, ईमानदारी व निष्ठा से कार्य करेंगे साथ ही अनुशासन में रहेंगे।
- संस्था में आदर्श लोगो को जोड़ेंगे, जिनकी सनातन धर्म के प्रति आस्था व श्रद्धाभाव हो साथ ही संगठन को मजबूती प्रदान करेंगे।
- सनातन धर्म और सनातन संस्कृति का व्यापक प्रचार प्रसार करेंगे।
- संस्था के नाम पे किसी से किसी भी प्रकार का लेन देन नही करेंगे।
- किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर अपने पक्ष में बोलने हेतु एक अवसर दिया जाएगा तत्पश्चात आपके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी उसके उपरांत तत्काल आपकी सदस्यता रद्द कर दी जाएगी।
- कोई भी पदेन या सदस्य यदि लगातार कार्यक्रम /आयोजन में अनुपस्थित होते हैं तो उनकी सदस्यता स्वतः समाप्त हो जाएगी और आखिरी मोहर अध्यक्ष की होगी।
- कार्यकाल एक वर्ष का होगा और सत्र समाप्ति के उपरांत कार्य की समीक्षा की जाएगी तत्पश्चात नयी टीम का गठन किया जायेगा।
- दो तिहाई बहुमत से प्रकोष्ठ और कार्यकारिणी की समिति बनायी जाएगी और चयनित सदस्यों का सूचनार्थ सूचना मण्डल, प्रदेश, राज्य और राष्ट्रीय स्तर के प्रधान अध्यक्षो को प्रेषित किया जायेगा।
- प्रकोष्ठ और कार्यकारिणी समिति की समीक्षा हर तिमाही पर अध्यक्ष द्वारा की जाएगी और तीन माह में किये गए सभी कार्यों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट अनिवार्य रूप से मुख्य न्यास मण्डल को प्रेषित की जाएगी। सत्र के समापन पर वार्षिक प्रगति रिपोर्ट भी प्रेषित करना अनिवार्य होगा।
- सभी सदस्यों से प्राप्त शुल्क चेक/ ऑनलाइन/ NEFT आदि ब्रह्मराष्ट्र एकम विश्व महासंघ के अधिकृत बैंक अकाउंट में जमा किया जायेगा तथा कोषाध्यक्ष द्वारा सभी प्रकार के आय व्यय का विवरण रखा जायेगा जिसे वो अपने प्रगति रिपोर्ट में साझा कर मुख्य न्यास मण्डल को प्रेषित करेंगे।
- किसी भी आयोजन और कार्यक्रम के लिए मुख्य न्यास मण्डल द्वारा लिखित रूप से स्वीकृति लेना अनिवार्य होगा।
- किसी भी प्रकार का आपसी मतभेद, रंगभेद, जातिभेद या विवाद संगठन में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा यदि ऐसी स्थिति किसी कारण से उत्पन्न होती हैं तो दोषी पाए जाने के उपरांत तत्काल प्रभाव से निष्कासित किया जायेगा।
- सभी अध्यक्ष की जिम्मेदारी होगी कि संगठन को निस्वार्थ भाव से सभी वर्ग और समुदाय के लोगो को जोड़ेंगे और उन्हें साथ लेकर चलेंगे।
- सभी नए पुराने सदस्यों का सूची तैयार करेंगे, उनके द्वारा ली गई सदस्यता शुल्क का ब्यौरा रखेंगे तथा सभी सदस्यों का पूरा विवरण रहेगा जिसमे नाम,पता, पासपोर्ट साइज फोटो, ईमेल आईडी, संपर्क सूत्र, ब्लड ग्रुप, जन्म तिथि, एवं आधार के साथ सूची प्रमुख न्यास मंडल को उपलब्ध कराएंगे।
- हर महीने की आखिरी सप्ताह में अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में बैठक बुलाएंगे, जिसमे कार्यों की समीक्षा करेंगे और आय व्यय का लेखा जोखा कर निरीक्षण करेंगे, सदस्यो का पंजीकरण देखने के पश्चात सूक्ष्म रिपोर्ट बनाएंगे।
- प्रकोष्ठ / कार्यकारिणी के साथ सदस्यों के संपर्क में रहेंगे, उन्हे प्रेरित कर व योजना बनाएंगे, कार्यक्रम का आयोजन तय करेंगे और प्रकोष्ठ के मनोनीत पदाधिकारियों एवं सदस्यों को उनसे सम्बंधित कार्य बताएंगे।
- सभी कार्यों को एक साथ संगृहीत करेंगे उसकी क्रमबद्ध रिपोर्ट तैयार करेंगे और इसकी एक प्रतिलिपि संस्थापक/प्रमुख न्यास मंडल को अनिवार्य रूप से अगले महीने की प्रथम सप्ताह में भेजनी होगी, उसी क्रम में तिमाही रिपोर्ट भी बनाकर संस्थापक को भेजनी होगी।
- किसी भी कार्यक्रम को अयोजित करने से पूर्व संस्थापक से सहमति लेना अनिवार्य होगा, जाएगा, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए, की किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत उदेश्य की पूर्ति वाला आयोजन / कार्य नहीं किया जायेगा।

संस्था के संचालित कार्य

1) प्रतिदिन माँ गंगा की आरती नव असि घाट पर जय माँ गंगा सेवा समिति के साथ मिलकर किया जा रहा हैं।

2) अस्सी घाट पर कोविड काल से नर सेवा नारायण सेवा के भाव से रोजाना सैकड़ों लोगों को निःशुल्क भोजन कराने का कार्य गंगा सेवा समिति के साथ मिलकर अनवरत किया जा रहा हैं।

3) दिव्यांगों और गरीब महिलाओं द्वारा बनाये जा रहें घरेलू उत्पादों में मसाला, चटनी, अचार आदि की मार्केटिंग सहित उन्हें प्रशिक्षित कर स्वावलम्बी बनाया जा रहा हैं। संस्था के होनहार दिव्यांग सत्यप्रकाश जी के नेतृत्व में किया जा रहा हैं।

4) सनातन धर्मावलंबियों के लिए हर वर्ष यह कार्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सनातन बौद्धिक अधिवेशन का आयोजन सभी तीर्थ स्थलों पर कराना जिसमे गत वर्ष 2021 के दिसंबर माह में श्रृंगेरी मठ वाराणसी में आयोजित कराया गया था और इस वर्ष 2023 फ़रवरी विक्रम संवत 2080 में यह आयोजन हरिद्वार में कराया गया।

5) सनातन धर्म यात्रा सभी धार्मिक स्थलों में धर्म के व्यापक प्रचार प्रसार में संपन्न कराना जिसके लिए संस्था ने गत वर्ष प्रयागराज, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, अयोध्या, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, कैथी मार्कण्डेय आदि स्थलों पर यात्रा सफलता पूर्वक संपन्न कराई गयी थी।

6) गरीब परिवार के बच्चों को शिक्षित कराना साथ में ऐसे स्कूलों को गोद लेना जिससे शिक्षा का स्तर अत्यधिक गुणवत्ता के मॉडल से परिपूर्ण किया जा सके। ऐसे ही एक विद्यालय शारदा विद्या मंदिर मडुआडीह को सहायतार्थ हेतु लिए गया हैं जिसमे बच्चों के पेंसिल- कॉपी के साथ उन्हें के टिफ़िन-बोतल वितरित किया गया व प्लास्टिक के वस्तुओं का उपयोग न करें और सजग रहें यें बच्चे। उनके लिए मेडिकल कैंप आयोजित कराना आदि सुविधाएं संस्था द्वारा दी जाती हैं।

7) धर्म के प्रचार प्रसार की कड़ी में श्रीमदभागवत कथा का आयोजन, बड़े बड़े मंगलकामना यज्ञ कराना, शांति स्थापना यज्ञ कराना आदि भी सम्मिलित हैं जिसमे कैलाश मठ में इस तरह के आयोजन कराते रहते हैं।

8) राष्ट्र निर्माण की सशक्त भूमिका में भी यह संस्था अग्रणी रूप से सक्रिय रहती हैं जैसे- आज़ादी के अमृत महोत्सव में हज़ारो की संख्या में संस्था के संरक्षक के साथ-साथ प्रदेश के आयुष राज्यमंत्री माननीय डॉ दयाशंकर मिश्र के नेतृत्व में राष्ट्रीय पद यात्रा भारत माता मंदिर से शहीद उद्यान तक किया गया था।

9) देश के युवाओं को नशा मुक्ति आंदोलन चला कर उन्हें नशे की आदतन से बाहर निकालना उन्हें प्रेरित करना व स्वावलम्बी बनाना आदि विषयों पर उन्हें संरक्षित कर अपने धर्म संस्कृति से जोड़ना प्रमुख उद्देश्य हैं।

10) दिवंगत विद्वतजनों को श्रद्धांजलि अर्पित करना उनके महान व्यक्तित्व के बारे में बताना उनके द्वारा समाज में किये गए धर्म और राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना से परिचय कराना और अपने सनातन धर्म संस्कृति की विशालता के बारे में उनके गुणों के बारे में जानना और इन्हे कैसे आत्मसात करना आदि महत्वपूर्ण विषयों से युवाओं को जोड़ना जिससे भविष्य में ऐसे महानायको से प्रेरित होकर भारत राष्ट्र को विश्व में सशक्त और महाशक्ति बनाया जा सके।

संस्था की भावी योजनाएं

1. सप्तऋषि गुरुकुल की स्थापना कर निर्माण करवाना जिसमे संस्कृत और राष्ट्रीय खेल की पढ़ाई से राष्ट्र का विकास हो।

2. श्री शक्ति बालाजी जी का भव्य मंदिर बनाया जायेगा जो कि संस्था के न्यासों द्वारा संकल्प लिया गया हैं जिसे तिरुपति बालाजी के अनुरूप बनाया जायेगा

3. कामधेनु नाम से गौशाला स्थापित करना जिससे गौमाताओं की स्वास्थ सेवा की जा सके उनकी उपयोगिताओं का बौद्धिक वर्णन किया जा सके और सच्ची सेवा की जा सके।

4. धन्वंतरि के नाम से आयुर्वेद का आयुष चिकित्सालय का निर्माण कराया जाएगा, जिसमे आयुर्वेद व एलोपैथिक औषधियां भी उपलब्ध कराई जा सकेंगी।

5. सनातन धर्म के षोडश संस्कार को देखते हुए गरीब बच्चियों के लिए सामूहिक विवाह का आयोजन व चूड़ाकर्म संस्कार व उपनयन संस्कार का कार्यक्रम आयोजित कराना |

आर्थिक सेवा विस्तार की योजनाएं

सदस्यता विन्यास

1) स्थायी सदस्यता हेतु 11000/- प्रति सदस्य एवं आजीवन सदस्यता हेतु 5000/- 10 वर्ष तक मात्र लिया जायेगा |

2) साधारण सदस्य हेतु 250/- प्रति सदस्य लिया जायेगा जिसमे सुतक विभाजन विभिन्न प्रकल्पों में व्यव किया जायेगा 100/- ट्रस्ट की योजना के लिए (जिसमें सप्तऋषि गुरुकुल- श्री शक्ति बालाजी मंदिर- धन्वंतरि अस्पताल- कामधेनु गौशाला), 100/- संगठन के विस्तारीकरण के लिए होगा जिसमें संस्था का (10000/- सदस्यता शुल्क होने पर) कार्यालय, प्रमुख तीर्थ/धार्मिक स्थानों पर अतिथि गृह स्थापित किया जायेगा और प्रमुख मंदिरो के महंत/ पुजारियों को भी प्रोत्साहन दृष्टिकोण से सालाना सहयोग किया जायेगा, जर्ज़र मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु और 50/- प्रति सदस्य संगठन के विस्तार में किये जाने वाले सहयोग से ऐसे कर्मठ स्वयंसेवको को अंशदान राशि के रूप में उपलब्ध कराई जाएगी।

3) सदस्यता अभियान में न्यूनतम 10 सदस्यों से ही एक परिचय संख्या जारी होंगी उसके पश्चात ही नियमानुसार उनके माध्यम से अन्य सदस्यों को जोड़ा जा सकेगा। अधिकतम संख्या 10000 सदस्यों की सीमा उस जारी किये गयें परिचय संख्या के लिए मान्य होंगी। उसके पश्चात ऐसे परिचयदाता को संगठन के अन्य शीर्ष दायित्वों के लिए चुनाव किया जायेगा।

4) कोई भी परिचय दाता द्वारा जारी किये गए निर्देश परक (रेफ़रल) संख्या के माध्यम से अत्यधिक सदस्यता ग्रहण कराने पर 10/ प्रति सदस्य अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि के रूप में दिया जायेगा जिसमें न्यूनतम और अधिकतम की सीमा लागू रहेगी।

अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज

अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज

महाराजश्री के निर्वाण के उपरान्त संस्था की सभी इकाइयों का उत्तरदायित्व बड़े ओजस्वी, तेजस्वी धार्मिक मूल्यों पर किसी से भी समझौता न करने वाले परम गुरुभक्त. निष्ठावान कर्त्तव्यनिष्ठ, प्रातः स्मरणीय, नित्य वन्दनीय परम पूज्य अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज के कन्धों पर है जिनका निर्वहन स्वामी जी बड़ी कुशलता से कर रहे है।

पीठाधीश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज के विषय में संक्षिप्त जानकारी निम्न है-

गुरुभक्त, त्याग, तपस्या के साक्षात विग्रह अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज का प्रकाय वि०सं०-2011 भाद्रपक्ष कृष्णपक्ष पंचमी दिनांक 19.08. 1954 को मुरादाबाद जनपद में गौड ब्राह्मण कृष्णार्क गोत्र में माता सरोज बाला एवं पिता श्री बृजनन्दन प्रसाद शर्मा के यहाँ शुभ लग्न में एक आलौकिक पुत्र के रूप में हुआ। इनके पिता जी बहुत अधिक धनी एवं बुद्धिमान थे एवं इनकी माता बहुत धार्मिक थी. इसलिए पिता से बुद्धिमता एवं माता से धर्म एवं गुरुओं के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास प्राप्त हुआ।

नास्ति गंगा समं वारी, नास्ति माता सम गुरु ।
नास्ति विष्णु समं देवं नास्ति तत्वं गुरोत्परम् ।।

गंगा के समान कोई जल नही, माता के समान कोई सिखाने वाला नही। विष्णु के समान कोई देवता नही और गुरु से परे कोई तत्व नही होता यह पुराणोक्त कथन आपके अन्तःकरण में कूट-कूट कर भरे हुए थे। अपनी माता जी के मुखारविन्द से आपने श्री स्वामी भूमानन्द तीर्थ जी महाराज के विषय में बहुत कुछ सुना हुआ था। अतः भाग्यधीनम् जगद सर्वम् के अनुसार आप स्वामी भूमानन्द तीर्थ जी महाराज के दर्शन करने हेतु हरिद्वार आश्रम में आये और प्रथम साक्षात्कार में ही महाराजश्री ने आपको पहचान लिया क्योंकि महाराजश्री तो हीरे के पारखी जौहरी के समान थे। महाराजश्री ने कहा कि तुम्हारा जन्म तो जीवों के कल्याण के लिए ही हुआ है अतः ब्रह्मचारी के रूप में ही आश्रम में रहो। धीरे-धीरे आश्रम की सारी व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी बढ़ाते गये और समय-समय पर कठिनतम परीक्षायें लेते रहे जब महाराज जी को परीक्षा लेने के पश्चात पूर्ण विश्वास हो गया कि आप संस्था का संचालन पूर्ण व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से करेंगे तब इनको सन्यास की दीक्षा दी और योगपट्ट स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ के नाम से हुआ। भूमा निकेतन से सम्बन्धित सभी संस्थाओं का उत्तरदायित्व अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज को सन् 1986 में महाराजश्री स्वामी भूमानन्द तीर्थ जी ने सौंप दिया व हरिद्वार से विरक्त होकर काशी में रहने चले गये।

चाहे कितनी भी कठिन परिस्थितियों क्यों न हो स्वामी जी की धर्म आचरण, धार्मिक मूल्यों पर भक्तों, सेवकों, सन्तों एवं महात्माओं को किसी प्रकार का कोई समझौता नही करने देते।

जब से स्वामी जी ने कार्यभार संभाला है तब से संस्था दिन दोगुनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है। नई शाखायें खोली जा रही हैं. पुरानी संस्थाओं का जीर्णोद्धार करके उनको आधुनिक सभी सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है। हर शाखा की गतिविधियों का विस्तार हो रहा है। संस्था का धार्मिक जगत एवं प्रशासन में अतिविशिष्ट स्थान है। महाराजश्री कुशाग्र बुद्धि अदम्य साहसी, धैर्यवान, परम गुरुभक्त, करुणासागर, दुखियों की सहायता में तत्पर तथा भक्त वत्सल है। अनन्तश्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी ने रामकृष्ण परमहंस की भाँति गुरु तथा स्वामी विवेकानन्द की भाँति शिष्य का उदाहरण जनता के सम्मुख शिक्षार्थ प्रस्तुत किया है।

अच्युत महिमा

शब्दों में सौन्दर्य बोध देखने वाले अर्थ की व्यापकता उच्चारण में सरलता के अनुसार देखते है ऐसा ही एक शब्द है 'अच्युत'।

अच्युत उसको कहते है जो कभी च्युत न हो,
अपने धर्म से डिगे नही।

गीता में अर्जुन कृष्ण को अच्युत सम्बोधन अपने पहले ही वाक्य में कहता है।

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेंऽच्युत।

अर्जुन को ये तो मालूम था कि गोविन्द केशव आदि नामों वाले मेरे ये सखा अच्युत है. कभी च्युत नही होते पर उसको पूर्ण विश्वास नही था अच्युत पर इसी प्रकार समापन पर भी कहता है "करिष्यामि वचनं तव' जब बोध हो गया तो कहे अनुसार चलने का भी निर्णय लिया किसलिए? तो उत्तर है स्वयं भी अच्युत बनने के लिए क्योंकि उसको स्वयं अच्युत ने कहा- भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।

जो भूत की पूजा करेगा वो भूतों की योनि को, और जो स्वयं मेरी कृष्णकीद्ध आराधना करेगा वो ईश्वर को प्राप्त करेगा। भूत माने नश्वर, जो नष्ट हो चुका है या कहें बीता हुआ।

अच्युत पद को प्राप्त जन ईश्वर के शरण से निष्काम कर्मयोग में दृढासक्त हो गये गरीब, रोगी, कुमार्गगामी स्त्री, किंवा पुरुष वा धनी, राजैश्वर्य से युक्त जिसने भी अच्युत के उपदेश के लिए अपने हृदयाकाश में स्थान दिया अपने आप में संतोष पाकर निरभिमानी एवं पापाचरण से मुक्त हो जाते है।

जिसने अच्युत तत्व को करकमलवत अपरोक्ष किया है, वे ही अपनी शरण में आये हुए जीवों को अभयदान देकर जीवन का सुगम मार्ग बतला सकते है और अच्युत पुरी के अमरधाम में प्रवेश करा सकते हैं।

इस अनर्थपूर्ण संसार में रहने वाले जीव को दो वस्तुओं का मिलना कठिन है, एक तो अच्युत पद को प्राप्त हुआ कोई मुनि और दूसरे शरीर को अमर बनाने वाली कोई संजीवनी या अमृत या अमरफल कदाचित कोई एक मिल भी जाय तो पहचान नहीं, पहचान भी लिया तो प्रयोग कैसे करें इसकी जानकारी नही।

इस विषय में राजा भर्तृहरि का श्लोक व जीवन चरित बड़ा प्रासंगिक है उन्होंने लिखा है-

यां चिन्तायामि सततं मयि सा विरक्ता।
साप्यन्य मिच्छति जन स जनोऽन्यसक्तः।।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या ।
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च ।।

कहते है राजा भर्तृहरि को किसी महापुरूष ने अमरफल दिया, कहा खा लो और अमर बन अच्युत हो जाओ राजा का मन आसक्ति में रानी को अच्युत करने का था सो उसने फल रानी को दिया, रानी की आसक्ति किसी और पुरुष में और उस पुरुष की आसक्ति भी एक वेश्या में, फल रानी से जार पुरुष को जार पुरुष से वेश्या को मिला अब वेश्या को लगा कि मैं खा लूं तो अनन्त काल तक नरक का कष्ट भोगू इस स्त्री शरीर से, सो उत्तम पदार्थ जान राजा को समखपत कर दिया. राजा आश्चर्य में खोजबीन से सत्य का पता चला और राजा को ज्ञान हुआ कि मैं तो अनर्थ और विनष्ट होने वाले को ही अच्युत और सुन्दर मान रहा था कितनी बड़ी भूल हुई. सो तुरन्त फल खा लिया और राज्य को लात मारकर उससे भी बड़े अच्युत पद को प्राप्तकाम हो अच्युत पद प्राप्त गुरु की शरण में चला गया।

इसी प्रकार अच्युत नारायण के उपदेशों को उक्त अमरफल के समान अनाधिकारी और विषयासक्त पुरुष पाकर भी ग्रहण नही कर पाता। अपितु जिसने निरन्तर अच्युत शब्दार्थ का अनुशीलन किया है वे ही उसके दिव्योपदेश से इस संसार के मोह का भेदन कर दुस्तर संसाराब्धि से तर जाते है। इसी से हमको कहना पड़ता है कि आहा !

हा "अच्युत' शब्द कितना सुन्दर और व्यापक अर्थ का वाचक है।

जिसने अपने हृदयांश को ही अच्युत नाम दे दिया वो गुरु कैसा होगा इसकी कल्पना सामान्य जनमानस से परे है सब लोग अपने आत्म को अच्युत पद हेतु लालायित है। और इसी संसार के ही एक महामनीषी ने अपने शिष्य के लिए वो कल्पना कर उसे अच्युत नाम दिया ओर शिष्य ने भी उत्कट श्री से गुरु के भूमा नाम को चरितार्थ कर दिया।

धन्य हो गुरु शिष्य की ऐसी अदभुत परम्परा।

अन्नदान महादान

दान एक ऐसा कार्य है, जिसके जरिए हम न केवल धर्म का ठीक-ठीक पालन कर पाते हैं बल्कि अपने जीवन की तमाम समस्याओं से भी निकल सकते हैं. आयु, रक्षा और सेहत के लिए तो दान को अचूक माना जाता है. जीवन की तमाम समस्याओं से निजात पाने के लिए भी दान का विशेष महत्व है. दान करने से ग्रहों की पीड़ा से भी मुक्ति पाना आसान हो जाता है।जो व्यक्ति प्रतिदिन विधिपूर्वक अन्नदान करता है वह संसार के समस्त फल प्राप्त कर लेता है। अपनी सामर्थ्य एवं सुविधा के अनुसार कुछ न कुछ अन्नदान अवश्य करना चाहिए। इससे परम कल्याण की प्राप्ति होती है। विशेष रूप से अन्न का दान जीवन में सम्मान का कारक होता है। अतः जरूरतमंदों को अन्न का दान करना चाहिए अन्न दान से समस्त पापों की निवृत्ति होकर इस लोक और परलोक में सुख प्राप्त होता है।

अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुः।

स्कन्दपुराण के अनुसार अन्न ही ब्रह्मा है और सबके प्राण अन्न मे ही प्रतिष्ठित हैं।

अन्नं ब्रह्म इति प्रोक्तमन्ने प्राणाः प्रतिष्ठिताः।

अतः स्पष्ट है कि अन्न ही जीवन का प्रमुख आधार है। इसलिए अन्नदान तो प्राणदान के समान है। अन्नदान को सर्वश्रेष्ठ एवं पुण्यदायक माना गया है। धर्म में अन्नदान के बिना कोई भी जप, तप या यज्ञ आदि पूर्ण नहीं होता है। अन्न एकमात्र ऐसी वस्तु है जिससे शरीर के साथ-साथ आत्मा भी तृप्त होती है। इसीलिए कहा गया है कि अगर कुछ दान करना ही है तो अन्नदान करो । दान हमेशा अपनी इच्छा से करना चाहिए। किसी दबाव में किया गया दान कभी शुभ परिणाम नहीं देता । महाभारत के अनुशासनपर्व में बताया गया है कि जिस समय दुर्योधन, कर्ण और शकुनि ने छल से जुए में युधिष्ठिर के राज्य को छीन लिया और पांडव द्रौपदी के साथ वन को जा रहे थे, उस समय प्रजा व ब्राह्मण भी उनके साथ वन में जाने लगे। यह देखकर युधिष्ठिर को बहुत दु:ख हुआ और वे सोचने लगे कि वन में मैं इन सबका पेट कैसे भर सकूंगा। अपना पेट तो सब भर लेते हैं लेकिन उसी व्यक्ति का जीवन सफल है जो अपने कुटुम्ब, मित्र, अतिथि व ब्राह्मणों का पोषण कर सके। युधिष्ठिर ने उन ब्राह्मणों से कहा कि इस निर्जन वन में मुझे बारह वर्ष बिताने हैं अत: ऐसा कोई उपाय बताएं जिससे मेरे परिवार सहित आप लोगों के भोजन का प्रबन्ध हो सके।

प्रभु इतना दीजिये, जामे कुटुंब समाय मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भूखा जाय ।

दान हमेशा अपनी इच्छा से करना चाहिए। किसी दबाव में किया गया दान कभी शुभ परिणाम नहीं देता। महाभारत के अनुशासनपर्व में बताया गया है कि जिस समय दुर्योधन, कर्ण और शकुनि ने छल से जुए में युधिष्ठिर के राज्य को छीन लिया और पांडव द्रौपदी के साथ वन को जा रहे थे, उस समय प्रजा व ब्राह्मण भी उनके साथ वन में जाने लगे। यह देखकर युधिष्ठिर को बहुत दु:ख हुआ और वे सोचने लगे कि वन में मैं इन सबका पेट कैसे भर सकूंगा। अपना पेट तो सब भर लेते हैं लेकिन उसी व्यक्ति का जीवन सफल है

श्री श्री दिवाकर गुरु जी महराज
संस्कार–अध्यक्ष/ट्रस्टी ब्रह्मराष्ट्र एकम्

क्यों चढ़ाया जाता है सूर्य को जल?

सूर्य ग्रहों के स्वामी है, साथ ही पंचदेवों में से एक भी हैं। सूर्य को प्रत्यक्ष देवता स्वीकारा गया है, सूर्य काल के नियामक हैं।जीवन को व्यवस्था सूर्य से ही मिलती है। पुराणों में सूर्य उपासना को सर्व रोगों को हरने वाली कहा गया है। सनातन संस्कृति में अर्घ्यदान या जल देना सामने वाले के प्रति श्रद्धा और आस्था का प्रतीक है। स्नानादि के बाद भगवान सूर्य को अर्घ्य देने का अर्थ है जीवन में संतुलन को आमंत्रित करना। जहां स्नान के लिए नदियां सरोवर उपलब्ध है वहां लोगों को सचैल अर्थात गीले वस्त्रों के साथ ही सूर्य को अर्घ्य देते हुए भी देखा जा सकता है। अर्घ्य देते समय सूर्य के नामों का उच्चारण करने का विधान है।

सूर्य गायत्री मंत्र

ॐ भास्कराया: विद्महे महातेजाय धीमहि तन्नो सूर्य प्रचोदयात ॥

शास्त्र अनुसार प्रातःकाल पूर्व की ओर मुख करके सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए। जबकि सांयकाल में पश्चिम की मुख करके अर्घ्य देना चाहिए। धार्मिक मान्यता के अनुसार सूर्य को अर्घ्य दिए बिना अन्य ग्रहण करना पाप है। मान्यता है कि सूर्य को अर्घ्य देते समय गिरने वाले जलकण वज्र बनकर राक्षसों का विनाश करते हैं। अर्थात किसी मनुष्य के लिए रोग ही तो राक्षस हैं। सभी को इस सत्य को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि सूर्य को अर्घ्य देने वाले की नेत्र ज्योति क्षीण नहीं होती है ऐसा आयुर्वेद ग्रंथों में कहा गया है।तथा आंखों का अधिष्ठाता भी सूर्य को ही कहा गया है।

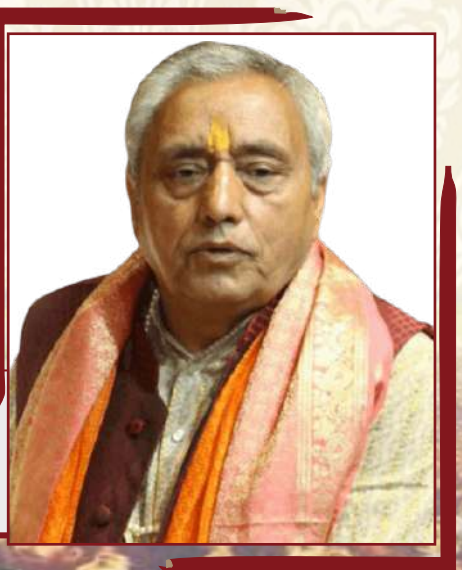

श्री सतीश चंद्र मिश्र (अधिवक्ता)
संचालन अध्यक्ष/ट्रस्टी ब्रह्मराष्ट्र एकम्

अर्धरात्रि में जन्मदिन की शुभकामनाएं देना वर्जित क्यों

आजकल की युवा पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति के अनुसार जन्मदिन की शुभकामनाएं रात को 12:00 बजे देते हैं। यह सनातन धर्म में वर्जित माना गया है। रात्रि को 12:00 बजे वातावरण में रज तम बड़ी मात्रा में होता है। इसलिए रात को शुभकामनाएं देने पर वे फलीभूत नहीं होते हैं। सनातन संस्कृति के अनुसार सूर्योदय पर ऋषि मुनि साधना करते हैं। इसलिए वातावरण अधिक सात्विक व सकारात्मक सक्रिय होता है इस समय शुभकामनाएं देने से फलीभूत होते हैं इसलिए जन्मदिन की शुभकामनाएं सूर्योदय के उपरांत ही देना चाहिए।

पश्चिमी सभ्यता नहीं बल्कि सनातन संस्कृति का पालन करें

एक दूसरे का अभिवादन हस्तांदोलन से ना करें बल्कि दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करें। मोमबत्ती बुझाकर केक काटकर जन्मदिन ना मनाएं बल्कि देसी घी के दीपक से आरती उतार कर जन्मदिन मनाएं।फीता काटकर उद्घाटन करने से वास्तु कष्टदायक बनता है बल्कि नारियल तोड़कर उद्घाटन करने से वास्तु की शुद्धि होती है। पश्चिमी लोगों की भांति नव वर्ष 1 जनवरी को ना मनाएं बल्कि सनातन संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर नववर्ष मनाएं।

श्री रविन्द्र नाथ मिश्र
प्रधान – अध्यक्ष/ट्रस्टी ब्रह्मराष्ट्र एकम्

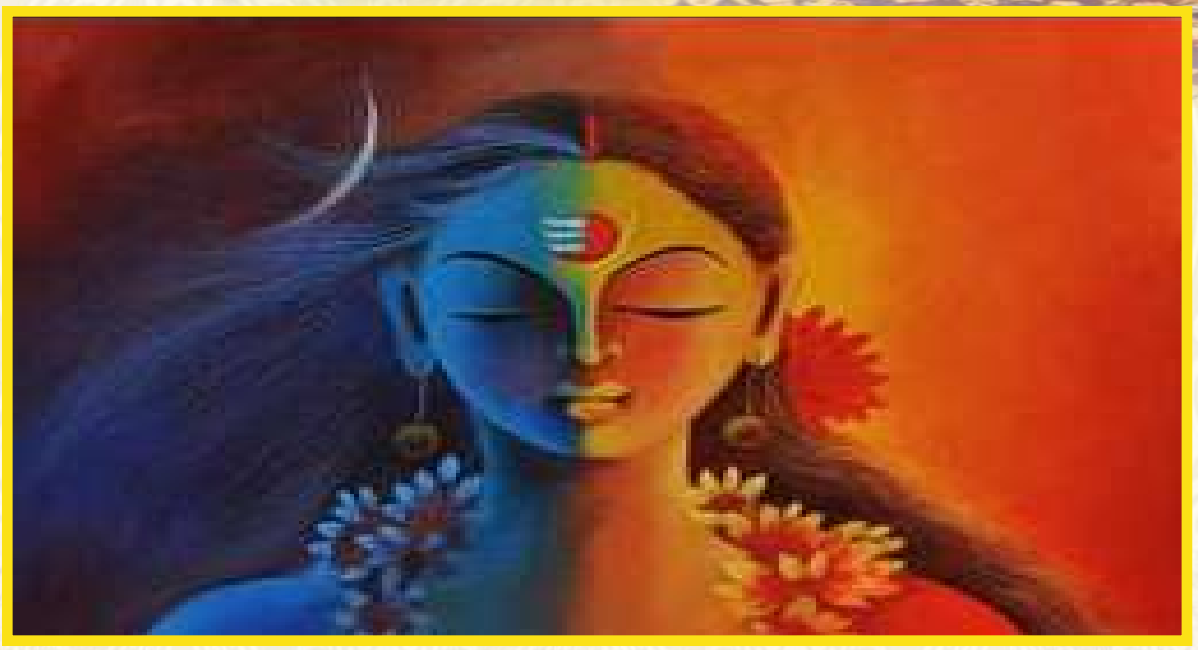

शरीर में तीन मूलभुत नाड़ियां होती है।

हमारे शरीर में कुल 72000 नाड़ियां हैं। मूलभूत नाड़ियां तीन होती हैं।

इंगला नाड़ी

यह रीढ़ की हड्डी के बाईं ओर से निकलती है तथा इसे चंद्र नाड़ी भी कहा जाता है। जिस व्यक्ति की यह नाड़ी सक्रिय होती है उनमें शांत मन , समर्पण भाव,शीतलता और अंतर्मुखी आदि गुण पाए जाते हैं।

पिंगला नाड़ी

रीढ़ की हड्डी के दाहिनी ओर होती है तथा इसे सूर्य नाड़ी भी कहा जाता है। जिस व्यक्ति में यह नाड़ी सक्रिय होती है उनमें उत्साह, जोश, तर्क वितर्क, श्रम शक्ति और बहुमुखी आदि गुण पाए जाते हैं।

सुषुम्ना नाड़ी

अधिकांश मनुष्य की यह नाड़ी सक्रिय नहीं होती है परंतु सभी चक्रों को जागृत कर इस नाड़ी को भी जागृत किया जा सकता है। यह नाड़ी शून्यता, स्थिरता और वैराग्य को दर्शाती है।

श्रीमती प्रिया मिश्रा
अध्यक्ष- मातृ शक्ति

ब्रह्मराष्ट्र एकम् का अभिप्राय

शिक्षा

हमारा लक्ष्य एक जीवित शाश्वत, सनातन परंपरा के रूप में सनातन धर्म के विचारों, संस्कारों, भावनाओं और संस्कृतियों के मूलभूत तत्व को प्रोत्साहित करते हुए समस्त विश्व को सनातन धर्म के बारे में शिक्षित करना है।

नीति

हम सनातन धर्म की संस्कृति और व्यवस्था के आधार पर सरल और सहज संचार के माध्यमों से विश्व स्तर पर सनातन धर्म और सनातन धर्मियों के कल्याण और उनके मानवाधिकार हेतु कार्य करेंगे।

मानवता

"सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया" ही मूल भावना रही है सनातन धर्म की, जिसमें मानवता को सर्वोपरि रखा गया है। मानवता यानी मनुष्यता अर्थात मनुष्य के मन में दूसरों के प्रति करुणा और दयाभाव, और सबसे ऊपर "परहित सरिस धर्म नहिं भाई" का भाव ही मनुष्य को महामानव बनाता है।

सनातन धर्म में भारतीय संस्कृति को विश्वस्तरीय स्तर पर पहुँचाने का संकल्प

ब्रह्मराष्ट्र एकम एक राष्ट्रीय स्तर पर सनातनियों के लिए ऐसा मंच है जहां पर सबको सनातन धर्म के प्रति एकता अखंडता और समानता के महामानव सूत्र में पिरोने की परंपरागत व्यवस्था है जिसमे प्रत्येक वर्ष सनातन राष्ट्रीय अधिवेशन के रूप में आयोजित कर भारत के सभी राज्यों के धार्मिक स्थलों पर और विचारो को एक साथ एकत्रित कर उन्हें भारतीय धर्म संस्कृति को प्राचीन परम्परा से जोड़ने का कार्य करती आ रही हैं आइये हम और आप मिलकर इस सनातन धर्म की सबसे प्राचीन संस्कृति का उत्सव मनाए और सनातन धर्म की पुनर्स्थापना में अपना अमूल्य योगदान दें साथ ही नए भारत व महाशक्ति के रूप सशक्त बनाये और अपनी भारतीय संस्कृति को विश्वस्तरीय तक पहुंचाएं।

आज की युवा पीढ़ी को अपनी सनातन धर्म संस्कृति के प्रति मानसिक एवं भावात्मक ढंग से उनको जोड़ना और प्रशिक्षित करना ही ब्रह्मराष्ट्र एकम् का मुख्य उद्देश्य है। जिससें युवा पीढ़ी भविष्य के सशक्त भारत का नेतृत्व कर एकता अखण्डता एवं समानता के रूप में अपना प्रतिनिधित्व कर सकें।

डॉ. सचिन सनातनी
संस्थापक अध्यक्ष

ब्रह्मराष्ट्र एकम् का संकल्प

सं गच्छध्वम् सं वदध्वम्।।

हम एक ऐसा राष्ट्र बनाने व अपने वादे के लिए प्रतिबद्ध हैं जो सांस्कृतिक रूप से संगठित हो और अपनी परंपराओं से अच्छी तरह अवगत हों। भारत सबसे प्राचीन संस्कृति, यानी 'सनातन धर्म' की भूमि है, जिसे हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को संरक्षित कर अपनी धर्म के प्रति संस्कृति, सभ्यता व समानता सिखाने की अभिलाषा रखते हैं ताकि वे अपने मूल स्रोत को जान सकें।

भव्य और दिव्य कशी विश्वनाथ मंदिर के बारे में जानिए

गंगा तट पर बसी काशी, जहां कण कण में शंकर विराजमान हैं, ऐसी काशी जहां मृत्यु पर भी उत्सव मनाए जाते हैं, जहां बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए बगैर किसी को मोक्ष नहीं प्राप्त होता है। धर्मग्रंथों व पुराणों में इसे मोक्ष की नगरी भी कहा गया है। कहा जाता है "यहां मृत्यु भी पारस है क्योंकि ये शहर बनारस है" साथ ही मान्यता यह भी है कि बाबा के साथ साथ मां अन्नपूर्णा के दरबार में हाजिरी लगाना अनिवार्य हो जाता है और बाबा विश्वनाथ खुद मां अन्नपूर्णा के समक्ष अन्न स्वरूप भिक्षा की मांग करते हुए हाथ में कटोरा लिए खड़े हैं। कहा जाता है यहां रहने वाला कोई भी व्यक्ति भूखा नही सोता। वहीं गंगा में स्नान करके व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है। मां गंगा का सौंदर्य और अविरल दृश्य मन मोहने वाला होता है।

आधुनिक काशी

आधुनिक काशी ,जो अब वाराणसी हो चुका है , कहा जाता है कि वरुणा नदी और असी घाट के मेल से वाराणसी बना। भारतीय स्वतंत्रता उपरांत अन्य सभी रजवाड़ों के समान काशी नरेश ने भी अपनी सभी प्रशासनिक शक्तियां छोड़ कर मात्र एक प्रसिद्ध हस्ती की भांति रहना आरंभ किया। वर्तमान स्थिति में ये मात्र एक सम्मानीय उपाधि रह गयी है। काशी नरेश का रामनगर किला वाराणसी शहर के पूर्व में गंगा नदी के तट पर बना हुआ है। काशी नरेश का एक अन्य किला चेत सिंह महल, शिवाला घाट, वाराणसी में स्थित है। यहीं महाराज चेत सिंह ने ब्रिटिश सरकार के २०० से अधिक सैनिकों को घेर कर मार गिराया था।रामनगर किला और इसका संग्रहालय अब बनारस के राजाओं के सम्मान में एक स्मारक बना हुआ है। इसके अलावा १८वीं शताब्दी से ये काशी नरेश का आधिकारिक आवास बना हुआ है।आज भी काशी नरेश को शहर में सम्मान की दृष्टि के साथ देखा जाता है । ये शहर के धार्मिक अग्रणी रहे हैं और यहाँ की प्रजा के द्वारा भगवान शिवजी के अवतार माने जाते हैं।ये शहर के धार्मिक संरक्षक भी माने जाते हैं

काशी का इतिहास

महाराज सुदेव के पुत्र राजा दिवोदास ने गंगा-तट पर वाराणसी नगर बसाया था। एक बार भगवान शंकर ने देखा कि पार्वती जी को अपने मायके (हिमालय-क्षेत्र) में रहने में संकोच होता है, तो उन्होंने किसी दूसरे सिद्ध क्षेत्र में रहने का विचार बनाया। उन्हें काशी अतिप्रिय लगी। वे यहां आ गए। भगवान शिव के सान्निध्य में रहने की इच्छा से देवता भी काशी में आ कर रहने लगे। राजा दिवोदास अपनी राजधानी काशी का आधिपत्य खो जाने से बडे दु:खी हुए। उन्होंने कठोर तपस्या करके ब्रह्माजी से वरदान मांगा- देवता देवलोक में रहें, भूलोक (पृथ्वी) मनुष्यों के लिए रहे। सृष्टिकर्ता ने एवमस्तु कह दिया । इसके फलस्वरूप भगवान शंकर और देवगणों को काशी छोड़ने के लिए विवश होना पडा। शिवजी मन्दराचल पर्वत पर चले तो गए परंतु काशी से उनका मोह कम नहीं हुआ। महादेव को उनकी प्रिय काशी में पुन: बसाने के उद्देश्य से चौसठ योगनियों, सूर्यदेव, ब्रह्माजी और नारायण ने बड़ा प्रयास किया। गणेशजी के सहयोग से अन्ततोगत्वा यह अभियान सफल हुआ। ज्ञानोपदेश पाकर राजा दिवोदास विरक्त हो गए। उन्होंने स्वयं एक शिवलिंग की स्थापना करके उस की अर्चना की और बाद में वे दिव्य विमान पर बैठकर शिवलोक चले गए। महादेव काशी वापस आ गए । काशी का इतना माहात्म्य है कि सबसे बड़े पुराण स्कन्दमहापुराण में काशीखण्ड के नाम से एक विस्तृत पृथक विभाग ही है। इस पुरी के बारह प्रसिद्ध नाम- काशी, वाराणसी, अविमुक्त क्षेत्र, आनन्दकानन, महाश्मशान, रुद्रावास, काशिका, तप:स्थली, मुक्तिभूमि, शिवपुरी, त्रिपुरारिराज नगरी और विश्वनाथ नगरी हैं।

स्कन्दपुराण काशी की महिमा का गुण-गान करते हुए कहता है-

भूमिष्ठापिन यात्र भूस्त्रिदिवतोऽप्युच्चैरध:
स्थापियाया बद्धाभुविमुक्तिदास्युरमृतंयस्यांमृताजन्तव:।
या नित्यंत्रिजगत्पवित्रतटिनीतीरेसुरै:सेव्यतेसा काशी
त्रिपुरारिराजनगरीपायादपायाज्जगत्॥

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥

16 वैदिक संस्कार

जन्म से मृत्यु तक

गर्भाधान संस्कार

पुंसवन संस्कार

सीमांतोनयन संस्कार

जातकर्म संस्कार

नामकरण संस्कार

निष्क्रमण संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार

मुण्डन संस्कार

विद्यारभ संस्कार

कर्णभेद संस्कार

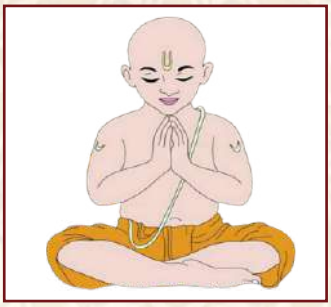
उपनयन संस्कार

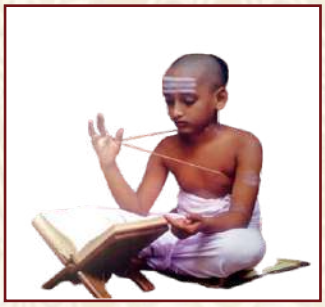
जनेऊ संस्कार

केशांत संस्कार

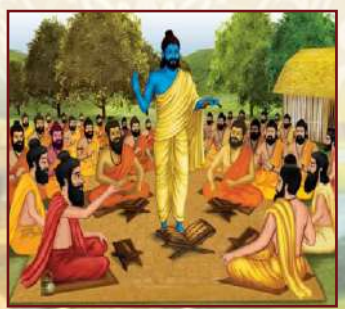
समावर्तन संस्कार

विवाह संस्कार

अंत्योष्टि संस्कार

ब्रह्मराष्ट्र एकम् कार्यक्रम में अंशदान सहयोगियों का आर्थिक अभिनन्दन

- श्री आदरणीय दिवाकर (गुरूजी)
- श्री रविंद्र नाथ मिश्रा जी (पिताजी)
- श्री सतीश चंद्र मिश्रा जी (दद्दू)
- श्री शुभम अग्रवाल जी
- श्री अभिषेक दीनानाथ पाठक जी
- श्री शशांक ब्रह्म देव तिवारी जी
- श्री धर्मेंद्र त्रिपाठी जी
- श्री ऋषि उपाध्याय जी
- श्री शिवदत्त जी
- श्री आशीष गुप्ता जी
- श्री शशांक अग्रवाल जी
- श्री सतीश पुनिया जी पुने
- श्री गणेश जी पुणे
- श्री सुमित पाठक जी
- श्री कोमल पाण्डेय जी पुणे
- श्री संजय मिश्रा जी
- श्री के एन पाण्डेय जी
- श्री अजय दुबे जी
- श्री श्रीनाथ जी
- श्री अनिल सिंह जी
- श्री महेश मौर्य जी
- श्री विष्णु देव तिवारी जी
- श्री शशिकांत जायसवाल जी
- श्री अवधेश पाठक जी
- श्री हिमांशु द्विवेदी
- श्री राकेश पाण्डेय जी
- श्री विजय त्रिपाठी जी
- श्री वंदना रघुवंशी जी
- श्री विंध्य कुमार दुबे जी
- दिलीप दुबे जी भदोही
- श्री प्रदीप पाण्डेय वाराणसी
- श्री संतोष कश्यप जी
- श्री दुबे जी
- टाटा दुबे जी मुंबई
- वस्त्रा बॉटिक
- डॉ अजीत सहगल जी
- डॉ. अनिल ओहरी जी
- डॉ. रोहित गुप्ता जी
- डॉ. पवन दुबे जी
- महाश्वेता अस्पताल
- शुभम अस्पताल खजूरी
- केदारनाथ शिक्षा प्रा. सीमित
- सुधाकर महिला डिग्री कॉलेज
- श्री नितिन पंचाल जी
- श्री अंशुल पाठक जी
- श्री शुश्रुत पाण्डेय जी
- श्री सुजीत अधिकारी

वेद

वेद, प्राचीन भारत के पवित्र साहित्य हैं। जो हिन्दुओं के प्राचीनतम और आधारभूत धर्मग्रन्थ भी हैं। वेद, विश्व के सबसे प्राचीन साहित्य भी हैं। भारतीय संस्कृति में वेद सनातन वर्णाश्रम धर्म के मूल और सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। 'वेद' शब्द संस्कृत भाषा के वेद् ज्ञान धातु से बना है। इस तरह वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' है। इसी धातु से ' विदित ' (जाना हुआ), ' विद्या ' (ज्ञान), ' विद्वान ' (ज्ञानी) जैसे शब्द आए हैं।

आज 'चतुर्वेद' के रूप में वेद ग्रंथों का विवरण इस प्रकार हैं

ऋग्वेद - सबसे प्राचीन तथा प्रथम वेद जिसमें मन्त्रों की संख्या 10462,मंडल की संख्या 10 तथा सूक्त की संख्या 1028 है। ऐसा भी माना जाता है कि इस वेद में सभी मंत्रों के अक्षरों की संख्या 432000 है। इसका मूल विषय ज्ञान है। विभिन्न देवताओं का वर्णन है तथा ईश्वर की स्तुति आदि।

यजुर्वेद - इसमें कार्य (क्रिया) व यज्ञ (समर्पण) की प्रक्रिया के लिये 1975 गद्यात्मक मन्त्र हैं। इसमें बलिदान विधि का भी वर्णन है।

सामवेद - इस वेद का प्रमुख विषय उपासना है। संगीत में लगे शूर को गाने के लिये 1875 संगीतमय मंत्र।

अथर्ववेद - इसमें गुण, धर्म, आरोग्य, एवं यज्ञ के लिये 5977 कवितामयी मन्त्र हैं। वेदों को अपौरुषेय (जिसे कोई व्यक्ति न कर सकता हो, यानि ईश्वर कृत) माना जाता है। यह ज्ञान विराटपुरुष से व कारणब्रह्म से श्रुति परम्परा के माध्यम से सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी ने प्राप्त किया माना जाता है। यह भी मान्यता है कि परमात्मा ने सबसे पहले चार महर्षियों जिनके अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम थे , के आत्माओं में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया, उन महर्षियों ने फिर यह ज्ञान ब्रह्मा को दिया। इन्हें श्रुति भी कहते हैं जिसका अर्थ है 'सुना हुआ ज्ञान'। अन्य आर्य ग्रंथों को स्मृति कहते हैं, यानि वेदज्ञ मनुष्यों की वेदानुगत बुद्धि या स्मृति पर ग्रन्थ। वेद मंत्रों की व्याख्या करने के लिए अनेक ग्रंथों जैसे ब्राह्मण-ग्रन्थ, आरण्यक और उपनिषद की रचना की गई। इनमे प्रयुक्त भाषा वैदिक संस्कृत कहलाती है। जो लौकिक संस्कृत से कुछ अलग है। ऐतिहासिक रूप से प्राचीन भारत और हिन्द-आर्य जाति के बारे में वेदों को एक अच्छा सन्दर्भ स्रोत माना जाता है। संस्कृत भाषा के प्राचीन रूप को लेकर भी इनका साहित्यिक महत्त्व बना हुआ है।

पुराण

पुराण, हिन्दुओं के धर्म- सम्बन्धी आख्यान ग्रन्थ हैं, जिनमें संसार - ऋषियों - राजाओं के वृत्तान्त आदि हैं। ये वैदिक काल के बहुत समय बाद के ग्रन्थ हैं। भारतीय जीवन- धारा में जिन ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण प्राचीन भक्ति-ग्रन्थों के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। अट्ठारह पुराणों में अलग- अलग देवी- देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएँ कही गयी हैं। कुछ पुराणों में सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विवरण दिया गया है।

'पुराण' का शाब्दिक अर्थ है, 'प्राचीन' या 'पुराना'। पुराणों की रचना मुख्यतः संस्कृत में हुई है, किन्तु कुछ पुराण क्षेत्रीय भाषाओं में भी रचे गए हैं। हिन्दू और जैन दोनों ही धर्मों के वाङ्मय में पुराण मिलते हैं।

पुराणों में वर्णित विषयों की कोई सीमा नहीं है। इसमें ब्रह्माण्डविद्या, देवी-देवताओं, राजाओं, नायकों, ऋषि-मुनियों की वंशावली, लोककथाएँ, तीर्थयात्रा, मन्दिर, चिकित्सा, खगोल शास्त्र, व्याकरण, खनिज विज्ञान, हास्य, प्रेमकथाओं के साथ-साथ धर्मशास्त्र और दर्शन का भी वर्णन है। विभिन्न पुराणों की विषय-वस्तु में बहुत अधिक असमानता है। इतना ही नहीं, एक ही पुराण के कई- कई पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं जो परस्पर भिन्न-भिन्न हैं। हिन्दू पुराणों के रचनाकार अज्ञात हैं और ऐसा लगता है कि कई रचनाकारों ने कई शताब्दियों में इनकी रचना की है। इसके विपरीत जैन पुराण हैं। जैन पुराणों का रचनाकाल और रचनाकारों के नाम बताये जा सकते हैं। कर्मकाण्ड (वेद) से ज्ञान (उपनिषद्) की ओर आते हुए भारतीय मानस में पुराणों के माध्यम से भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित हुई है। विकास की इसी प्रक्रिया में बहुदेववाद और निर्गुण ब्रह्म की स्वरूपात्मक व्याख्या से धीरे-धीरे मानस अवतारवाद या सगुण भक्ति की ओर प्रेरित हुआ। छोटे और बड़े के भेद से अट्ठारह पुराण बताये गये हैं।

1. ब्रह्मपुराण, 2. पद्मपुराण, 3. विष्णुपुराण, 4. शिवपुराण, 5. भागवतपुराण, 6. भविष्यपुराण, 7. नारदपुराण, 8. मार्कण्डेयपुराण, 9. अग्निपुराण, 10. ब्रह्मवैवर्तपुराण, 11. लिंगपुराण, 12. वाराहपुराण, 13. स्कन्दपुराण, 14. वामनपुराण, 15. कूर्म पुराण, 16. मत्स्यपुराण, 17. गरुडपुराण, 18. ब्रह्माण्डपुराण

पुराणों में वैदिक काल से चले आते हुए सृष्टि आदि सम्बन्धी विचारों, प्राचीन राजाओं और ऋषियों के परम्परागत वृत्तान्तों तथा कहानियों आदि के संग्रह के साथ साथ कल्पित कथाओं की विचित्रता और रोचक वर्णनों द्वारा साम्प्रदायिक या साधारण उपदेश भी मिलते हैं।

पुराणों में विष्णु, वायु, मत्स्य और भागवत में ऐतिहासिक वृत्त— राजाओं की वंशावली आदि के रूप में बहुत-कुछ मिलते हैं। ये वंशावलियाँ यद्यपि बहुत संक्षिप्त हैं और इनमें परस्पर कहीं-कहीं विरोध भी हैं,। पुराणों की ओर ऐतिहासिकों ने इधर विशेष रूप से ध्यान दिया है और वे इन वंशावलियों की छानबीन में लगे हैं।

मुंडन चूड़ाकर्म संस्कार

सनातन धर्म मे मनुष्य के पूरे जीवनकाल में 16 संस्कार बताये गयें हैं। जिनमे चूड़ाकर्म संस्कार भी मुख्य संस्कार है। सनातन धर्म मे चूड़ाकर्म की परंपरा बहुत पहले से चली आ रही है। किसी भी शिशु का मुंडन संस्कार ज्यादातर पवित्र धार्मिक स्थलों पर किया जाता है। माता के गर्भ से जन्म लेने के पश्चात शिशु के सिर के जो बाल होते हैं। उन्हें हटाने को चूड़ाकर्म संस्कार जिसे मुंडन भी कहा जाता है। मुंडन संस्कार करवाने के पीछे भी कई मान्यताएं और तर्क हैं। नवजात शिशु का मुंडन संस्कार पे पीछे धार्मिक ही नही वैज्ञानिक कारण भी माना जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हिंदु संस्कृति में मुंडन संस्कार कई बार निभाया जाता है। आखिर क्या वजह है कि भारतीय परंपरा में मुंडन संस्कार को इतना महत्व दिया जाता है। हिंदु धर्म में मुंडन करने की एक विशेष पद्धति है। इसमें मुंडन के बाद चोटी या चुंडी रखना आवश्यक है। चोटी रखने की परंपरा पुरूषों के साथ-साथ स्त्रियों में भी है। सच तो ये है कि न सिर्फ हिंदु बल्कि हर धर्म की स्त्रियां चोटी रखती हैं। अक्सर लोग चोटी रखने की परंपरा को फैशन से जोड़कर देखते हैं पर असल में मुंडन और चोटी रखने की परंपरा अन्य प्रचीन भारतीय परंपराओं के भांति ही अति वैज्ञानिक है।

चूड़ाकर्म का वैज्ञानिक कारण और महत्व

जन्म के बाद बच्चे का मुंडन किया जाता है इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि जब बच्चा मां के गर्भ में होता है तो उसके सर के बालों में बहुत से हानिकारक किटानु बैक्टीरिया और जीवाडु लगते हैं जो धोने से भी नहीं निकलते पटे इसीलिये बचे के जन्म के एक साल के भीतर एक बार मुंडन करना जरूरी होता है | हिंदू धर्म में शास्त्री मान्यों के औसर बचे का बल, आरोग्य, तेज को बढ़ाने और गर्भस्थ के अशुद्धियों को दूर करने के लिए मुंडन संस्कार एक बहुत ही महात्वपूर्ण संस्कार हैं | सिर में सहस्त्रार के स्थान पर चोटी रखी जाती है अर्थात सिर के सभी बालों को काटकर बीचों बीच के स्थान के बाल को छोड़ दिया जाता है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार सहस्त्रार चक्र का आकार गाय के खुर के समान होता है इसीलिए चोटी का आकार भी गाय के खुर के बराबर ही रखा जाता है। वैज्ञानिक मत के अनुसार सिर के बीचों बीच सुषुम्ना नाड़ी का स्थान होता है।

- मुंडन से बच्चे को अच्छा स्वास्थ्य और लम्बी आयु मिलती है।
- बच्चे का मुंडन करने से पिछले जन्म के सारे पाप धुल जाते हैं
- गर्मी के मौसम में मुंडन कराने से बच्चे के सिर को ठंडक मिलती है।
- जब बच्चे के दांत निकल रहे होते हैं तो उसे काफी दर्द का सामना करना पड़ता है ऐसे में मुंडन कराने से उसको होने वाली असहजता कम होने में मदद मिलती है।

संस्कृति

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होता है। यह 'कृ' (करना) धातु से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते हैं 'प्रकृति' की मूल स्थिति,यह संस्कृत हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संक्षेप में, किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द 'संस्कृति'।स्कृति का शब्दार्थ है - उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज रहन- सहन आचार- विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है। सभ्यता संस्कृति का अंग है। सभ्यता (Civilization) से मनुष्य हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं। इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति (Culture) से मानसिक क्षेत्र की प्रगति होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं एक मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं। मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनीतिक संघटनों का निर्माण करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक् कृति संस्कृति का अंग बनती है। इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान- विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है।

संस्कृति और सभ्यता

संस्कृति और सभ्यता दोनों शब्द प्रायः पर्याय के रूप में प्रयुक्त कर दिये जाते हैं। फिर भी दोनों में मौलिक भिन्नता है, और दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। संस्कृति का सम्बन्ध व्यक्ति और समाज में निहित संस्कारों से है , और उसका निवास उसके मानस में होता है। दूसरी ओर, सभ्यता का क्षेत्र व्यक्ति और समाज के बाह्य स्वरूप से है। 'सभ्य' का शाब्दिक अर्थ है, 'जो सभा में सम्मिलित होने योग्य हो'। इसलिए, सभ्यता ऐसे सभ्य व्यक्ति और समाज के सामूहिक स्वरूप को आकार देती है। सभ्यता को अंग्रेजी में 'सिविलाइज़ेशन' (civilization) कहते है और कल्चर (culture) से उसका अन्तर स्पष्ट ही है। संस्कृति और सभ्यता में भी वही भेद है। प्रारम्भ में मनुष्य आँधी-पानी, सर्दी-गर्मी सब कुछ सहता हुआ जंगलों में रहता था, शनैः- शनैः उसने इन प्राकृतिक विपदाओं से अपनी रक्षा के लिए पहले गुफाओं और फिर क्रमशः लकड़ी, ईंट या पत्थर के मकानों की शरण ली। अब वह लोहे और सीमेन्ट की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का निर्माण करने लगा है। प्राचीन काल में यातायात का साधन सिर्फ मानव के दो पैर ही थे। फिर उसने घोड़े, ऊँट, हाथी, रथ और बहली का आश्रय लिया। अब मोटर और रेलगाड़ी के द्वारा थोड़े समय में बहुत लम्बे फासले तय करता है, हवाई जहाज द्वारा आकाश में भी उड़ने लगा है। पहले मनुष्य जंगल के कन्द, मूल और फल तथा आखेट से अपना निर्वाह करता था। बाद में उसने पशु-पालन और कृषि के आविष्कार द्वारा आजीविका के साधनों में उन्नति की। पहले वह अपने सब कार्यों को शारीरिक शक्ति से करता था।

सभ्यता' का अर्थ है जीने के बेहतर तरीके और कभी-कभी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने समक्ष प्रकृति को भी झुका देना। इसके अन्तर्गत समाजों को राजनैतिक रूप से सुपरिभाषित वर्गों में संगठित करना भी सम्मिलित है जो भोजन, वस्त्र, संप्रेषण आदि के विषय में जीवन स्तर को सुधारने का प्रयत्न करते रहते हैं। इस प्रकार कुछ वर्ग अपने आप को अधिक सभ्य समझते हैं, और दूसरों को हेय दृष्टि से देखते हैं। कुछ वर्गों की इस मनोवृत्ति ने कई बार संघर्षों को भी दिया है जिनका परिणाम मनुष्य के विनाशकारी विध्वंस के रूप में हुआ है। इसके विपरीत, संस्कृति आन्तरिक से सम्बद्ध है जिसमें मन और हृदय की पवित्रता निहित है। इसमें कला, विज्ञान, संगीत और नृत्य और मानव जीवन की उच्चतर उपलब्धियाँ सम्मिहित हैं जिन्हें 'सांस्कृतिक गतिविधियाँ' कहा जाता है। एक व्यक्ति जो निर्धन है, सस्ते वस्त्र पहने है, वह असभ्य तो कहा जा सकता है परन्तु वह सबसे अधिक सुसंस्कृत व्यक्ति भी कहा जा सकता है। एक व्यक्ति जिसके पास बहुत धन है वह सभ्य तो हो सकता है पर आवश्यक नहीं कि वह सुसंस्कृत भी हो। अतः जब हम संस्कृति के विषय में विचार करते हैं तो हमें यह समझना चाहिए कि यह सभ्यता से अलग है। संस्कृति मानव के अन्तर्मन का उच्चतम स्तर है।

सप्तऋषि

वशिष्ठकाश्यपो यात्रिर्जमदग्निस्सगौत। विश्वामित्रभारद्वजौ सप्त सप्तर्षयोभवन्।।

वशिष्ठ राजा दशरथ के कुलगुरु व दशरथ के चारों पुत्रों के गुरु थे। वशिष्ठ के कहने पर दशरथ ने अपने चारों पुत्रों को ऋषि विश्वामित्र के साथ आश्रम में राक्षसों का वध करने के लिए भेज दिया था। कामधेनु गाय के लिए वशिष्ठ और विश्वामित्र में युद्ध भी हुआ था। वशिष्ठ ने राजसत्ता पर अंकुश का विचार दिया तो उन्हीं के कुल के मैत्रावरूण वशिष्ठ ने सरस्वती नदी किनारे सौ सूक्त एक साथ रचकर नया इतिहास बनाया।

कश्यप महर्षि कश्यप को सृष्टि के सृजन करने का श्रेय प्राप्त है। महर्षि कश्यप अपने श्रेष्ठ गुणों, प्रताप एवं तप के बल पर श्रेष्ठतम महाविभूतियों में गिने जाते हैं। महर्षि कश्यप के पिता का नाम मरीचि था, जो भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इनका आश्रम मेरु पर्वत के शिखर पर माना जाता है। श्रीनरसिंह पुराण और विष्णु पुराण में महर्षि कश्यप की वंशावली का उल्लेख मिलता है। महर्षि कश्यप ने दक्ष प्रजापति की 13 कन्याओं से विवाह किया था। उनकी 13 पत्नियों के नाम है अदिति, दिति, दनु, अरिष्टा, सुरसा, खसा, सुरभि, विनता, ताम्रा, क्रोधवशा, इरा, कद्रू और मुनि।

अत्रि ऋग्वेद के पंचम मण्डल के द्रष्टा महर्षि अत्रि ब्रह्मा के पुत्र, सोम के पिता और कर्दम प्रजापति व देवहूति की पुत्री अनुसूया के पति थे। अत्रि जब बाहर गए थे तब त्रिदेव अनसूया के घर ब्राह्मण के भेष में भिक्षा मांगने लगे और अनुसूया से कहा कि जब आप अपने संपूर्ण वस्त्र उतार देंगी तभी हम भिक्षा स्वीकार करेंगे, तब अनुसूया ने अपने सतित्व के बल पर उक्त तीनों देवों को अबोध बालक बनाकर उन्हें भिक्षा दी। माता अनुसूया ने देवी सीता को पतिव्रत का उपदेश दिया था। मुनि।

जमदग्नि भगवान परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि का नाम भी सप्त ऋषियों के नाम में से एक है। महर्षि जमदग्नि ब्रह्मा जी के मानस पुत्र व भृगु के वंशज थे। ऋषि जमदग्नि ने अपनी तपस्या एवं साधना से उच्च स्थान प्राप्त किया। उनका विवाह राजा प्रसेनजित की पुत्री रेणुका से हुआ था। रेणुका से इन्हें पांच पुत्रों की प्राप्ति हुई। इनके नाम थे रुक्मवान, सुखेण, वसु, विश्वानस और परशुराम। ऋषि जमदग्नि की पत्नी रेणुका पतिव्रता एवं आज्ञाकारी स्त्री थी।

गौतम महर्षि गौतम ब्रह्मा जी के मानस पुत्र व अंगिरा के वंशज हैं। पुराणों में ऐसी कथा मिलती है कि गौतम जन्मांध थे। उन पर कामधेनु गाय प्रसन्न हुई तथा इस गाय ने उनका तम अर्थात अंधत्व हर लिया। तब से इन्हें गौतम कहा जाने लगा। गौतम ऋषि का विवाह देवी अहिल्या से हुआ था तथा इनके पुत्र का नाम महर्षि शतानन्द था, जो राजा जनक के राजपुरोहित हुए। महर्षि शतानन्द ने ही भगवान राम और सीता जी का विवाह संपन्न करवाया था।

विश्वामित्र ऋषि होने के पूर्व विश्वामित्र राजा थे और ऋषि वशिष्ठ से कामधेनु गाय को हड़पने के लिए उन्होंने युद्ध किया था, लेकिन वे हार गए। इस हार ने ही उन्हें घोर तपस्या के लिए प्रेरित किया। विश्वामित्र की तपस्या और मेनका द्वारा उनकी तपस्या भंग करने की कथा जगत प्रसिद्ध है। विश्वामित्र ने अपनी तपस्या के बल पर त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेज दिया था। इस तरह ऋषि विश्वामित्र के असंख्य किस्से हैं।।

भारद्वाज वैदिक ऋषियों में भारद्वाज-ऋषि का उच्च स्थान है। भारद्वाज के पिता बृहस्पति और माता ममता थीं। भारद्वाज ऋषि राम के पूर्व हुए थे, लेकिन एक उल्लेख अनुसार उनकी लंबी आयु का पता चलता है कि वनवास के समय श्रीराम इनके आश्रम में गए थे, जो ऐतिहासिक दृष्टि से त्रेता-द्वापर का सन्धिकाल था। माना जाता है कि भरद्वाजों में से एक भारद्वाज विदथ ने दुष्यन्त पुत्र भरत का उत्तराधिकारी बन राजकाज करते हुए मन्त्र रचना जारी रखी।

वैवस्तवत मनु के काल में जन्में सात महान ऋषियों का संक्षिप्त परिचय-

वेदों के रचयिता ऋषि ऋग्वेद में लगभग एक हजार सूक्त हैं, लगभग दस हजार मन्त्र हैं। चारों वेदों में करीब बीस हजार हैं और इन मन्त्रों के रचयिता कवियों को हम ऋषि कहते हैं। बाकी तीन वेदों के मन्त्रों की तरह ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना में भी अनेकानेक ऋषियों का योगदान रहा है। पर इनमें भी सात ऋषि ऐसे हैं जिनके कुलों में मन्त्र रचयिता ऋषियों की एक लम्बी परम्परा रही। ये कुल परंपरा ऋग्वेद के सूक्त दस मंडलों में संग्रहित हैं और इनमें दो से सात यानी छह मंडल ऐसे हैं जिन्हें हम परम्परा से वंशमंडल कहते हैं क्योंकि इनमें छह ऋषिकुलों के ऋषियों के मन्त्र इकट्ठा कर दिए गए हैं।

चार आश्रम

प्राचीन काल में व्यक्तिगत व्यवस्था के दो स्तंभ थे - पुरुषार्थ और आश्रम। सामाजिक प्रकृति-गुण, कर्म और स्वभाव- के आधार पर वर्गीकरण चार वर्णों में हुआ था। व्यक्तिगत संस्कार के लिए उसके जीवन का विभाजन चार आश्रमों में किया गया था। ये चार आश्रम थे-

(१) ब्रह्मचर्य, (२) गृहस्थ, (३) वानप्रस्थ और (४) संन्यास।

आश्रम संस्था का प्रादुर्भाव वैदिक युग में हो चुका था, किंतु उसके विकसित और दृढ़ होने में काफी समय लगा। वैदिक साहित्य में ब्रह्मचर्य और गार्हस्थ्य अथवा गार्हपत्य का स्वतंत्र विकास का उल्लेख नहीं मिलता। इन दोनों का संयुक्त अस्तित्व बहुत दिनों तक बना रहा। वैदिक काल में कर्म तथा कर्मकांड की प्रधानता होने के कारण निवृत्तिमार्ग अथवा संन्यास को विशेष प्रोत्साहन नहीं था। वैदिक साहित्य के अंतिम चरण उपनिषदों में निवृत्ति और संन्यास पर जोर दिया जाने लगा। और यह स्वीकार कर लिया गया था कि जिस समय जीवन में उत्कट वैराग्य उत्पन्न हो उस समय से वैराग्य से प्रेरित होकर संन्यास ग्रहण किया जा सकता है। फिर भी संन्यास अथवा श्रमण धर्म के प्रति उपेक्षा और अनास्था का भाव था।

ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्य (छात्र जीवन) आयु: 25 साल तक ब्रह्मचर्य ने जीवन के अविवाहित छात्र चरण का प्रतिनिधित्व किया। यह चरण शिक्षा पर केंद्रित है और इसमें ब्रह्मचर्य का अभ्यास शामिल है।छात्र एक गुरुकुल (गुरु के घर) जाता था और आम तौर पर गुरु (गुरु) के साथ रहता था। उस स्थान पर, वे विज्ञान, दर्शन, शास्त्र और तर्क का ज्ञान प्राप्त करते हैं, आत्म-अनुशासन का अभ्यास करते हैं, गुरु के लिए दक्षिणा अर्जित करने के लिए काम करते हैं, धर्म (सदाचार, नैतिकता, कर्तव्यों) का जीवन जीना सीखते हैं।

गृहस्थ- आयु: 25 वर्ष से 48 वर्ष तक इस चरण में एक व्यक्ति के विवाहित जीवन के बारे में बताया गया, जिसमें एक परिवार का पालन-पोषण, बच्चों को शिक्षित करना, और एक परिवार-केंद्रित और एक धार्मिक सामाजिक जीवन का नेतृत्व करना था। समाजशास्त्रीय संदर्भ में गृहस्थ के मंच को सभी चरणों में सबसे महत्वपूर्ण माना गया। क्योंकि इस अवस्था में मनुष्यों ने न केवल एक पुण्य जीवन का पालन किया, उन्होंने भोजन और धन का उत्पादन किया जो लोगों को जीवन के अन्य चरणों में बनाए रखा, साथ ही साथ मानव जाति को भी जारी रखा।चरण में सबसे तीव्र शारीरिक, यौन, भावनात्मक, व्यावसायिक, सामाजिक और भौतिक संलग्नक भी शामिल हैं जो एक इंसान के जीवन में मौजूद हैं।

वानप्रस्थ- (सेवानिवृत्त जीवन) आयु: 48 वर्ष से 72 वर्ष तक इस चरण में, अगली पीढ़ी को घरेलू कर्तव्यों को सौंप कर एक सलाहकार की भूमिका निभाता है।वानप्रस्थ अवस्था एक गृहस्थ के जीवन से एक संक्रमण चरण था जिसमें अर्थ और काम (धन, सुरक्षा, सुख और इच्छाओं) पर से ध्यान हटा कर मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) पर अधिक जोर दिया गया था। संन्यास (नवीनीकृत जीवन) आयु: 72+ (या कभी भी) इस चरण को भौतिक जीवन से असंतुष्ट और टुकड़ी की स्थिति द्वारा वर्णित भौतिक इच्छाओं और नापसंदियों के त्याग द्वारा चिह्नित किया गया था। आमतौर पर किसी भी महत्वपूर्ण संपत्ति या घर (तपस्वी) के बिना, और मोक्ष, शांति और सरल आध्यात्मिक जीवन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। जीवन के ब्रह्मचर्य चरण को पूरा करने के बाद कोई भी इस चरण में प्रवेश कर सकता है।

संन्यास- (नवीनीकृत जीवन) आयु:72+ (या कभी भी) इस चरण को भौतिक जीवन से असंतुष्ट और टुकड़ी की स्थिति द्वारा वर्णित भौतिक इच्छाओं और नापसंदियों के त्याग द्वारा चिह्नित किया गया था । आमतौर पर किसी भी महत्वपूर्ण संपत्ति या घर (तपस्वी) के बिना, और मोक्ष, शांति और सरल आध्यात्मिक जीवन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है । जीवन के ब्रह्मचर्य चरण को पूरा करने के बाद कोई भी इस चरण में प्रवेश कर सकता है।

यज्ञोपवीत संस्कार/उपनयन संस्कार

सनातन धर्म मे मनुष्य के पूरे जीवनकाल मे 16 संस्कार बतायें गयें हैं। जिनमे से एक यज्ञोपवीत संस्कार भी है जिसे उपनयन संस्कार और आम भाषा मे जनेऊ संस्कार भी कहा जाता है। किसी भी शिशु के जन्म के बाद चूड़ाकर्म संस्कार या मुंडन संस्कार किया जाता है। यज्ञोपवीत संस्कार मुंडन संस्कार के बाद किया जाने वाला संस्कार है। यह संस्कार बच्चे के 6 से 8 वर्ष की आयु के बीच में किया जाता है। वैदिक काल में 7 वर्ष की आयु में शिक्षा ग्रहण करने के लिये गुरुकुल भेजा जाता था। गुरुकुल में जाने से पहले बच्चे का जनेऊ संस्कार या यज्ञोपवीत संस्कार कराया जाता था। इसमें यज्ञ करके बच्चे को एक पवित्र धागा पहनाया जाता है जिसे जनेऊ कहा जाता है। इस संस्कार के बाद ही बच्चा द्विज कहलाता है। द्विज अर्थात जिसका दूसरा जन्म हुआ हो। अब बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने गुरुकुल भेजा जा सकता है। पहले इस संस्कार के दौरान ही बच्चों का वर्ण तय किया जाता था कि बच्चे को ब्राम्हणत्व ग्रहण करना है या क्षत्रित्व या वैश्यत्व।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
(पारस्कर गृह्यसूत्र, ऋग्वेद,) २/२/११)छन्दोगानाम्:
ॐ यज्ञो पवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि॥

जनेऊ उतारने का मंत्र

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥
जनेऊ को उपवीत, यज्ञसूत्र, व्रतबन्ध, बलबन्ध, मोनिबन्ध, और ब्रम्हसूत्र के नाम से भीजाना जाता है।

यज्ञोपवीत के आध्यात्मिक महत्व

जनेऊ के यह तीन धागे , तीन सूत्र देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण के प्रतीक होते हैं और यह सत्व, रज और तम का प्रतीक है। यह गायत्री मंत्र के तीन चरणों का प्रतीक है। यह तीन आश्रमों का प्रतीक है। संन्यास आश्रम में यज्ञोपवीत को उतार दिया जाता है। यज्ञोपवीत के एक-एक तार में तीन तीन तार होते हैं। इस तरह कुल तारों की संख्या नौ होती है। एक मुख, दो नासिका, दो आंख, दो कान, मल और मूत्र के दो द्वारा मिलाकर कुल नौ होते हैं। यज्ञोपवीत में पांच गांठ लगाई जाती है जो ब्रह्म, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक है। यह पांच यज्ञों, पांच ज्ञानेद्रियों और पंच कर्मों का भी प्रतीक भी है। वैदिक धर्म में प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है जनेऊ पहनना और उसके नियमों का पालन करना। प्रत्येक आर्य (हिन्दू) जनेऊ पहन सकता है बशर्ते कि वह उसके नियमों का पालन करे। ब्राह्मण ही नहीं समाज का हर वर्ग जनेऊ धारण कर सकता है। जनेऊ धारण करने के बाद ही द्विज बालक को यज्ञ तथा स्वाध्याय करने का अधिकार प्राप्त होता है। जिस लड़की को आजीवन ब्रम्हचर्य का पालन करना हो वह जनेऊ धारण कर सकती है उसे भी जनेऊ धारण करने का अधिकार है। ब्रम्हचारी पुरुष तीन और विवाहित पुरुष छह धागों की जनेऊ पहनता है। गर्भ में रहकर माता और पिता के संबंध से मनुष्य का पहला जन्म होता है। दूसरा जन्म विद्या रूपी माता और आचार्य रूप पिता द्वारा गुरुकुल में उपनयन और विद्याभ्यास द्वारा होता है। "सामवेदीय छान्दोग्य सूत्र" में लिखा है कि यज्ञोपवीत के नौ धागों में नौ देवता निवास करते हैं। (1) ओउमकार (2) अग्नि (3) अनन्त (4) चन्द्र(5) पितृ (6) प्रजापति (7) वायु (8) सूर्य (9) सब देवताओं का समूह वेद मंत्रों से अभिमंत्रित एवं संस्कार पूर्वक कराये यज्ञोपवीत में 9 शक्तियों का निवास होता है।

"सामवेदीय छान्दोग्य सूत्र" में यज्ञोपवीत के संबंध में एक और महत्वपूर्ण उल्लेख है-
ब्रह्मणोत्पादितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणी कृतम्। कृतो ग्रन्थिस्त्रनेत्रेण गायत्र्याचाभि मन्त्रितम्॥

जनेऊ पहनने के प्रत्यक्ष लाभ

जनेऊ में नियम है कि जनेऊ बाएं कंधे से दाएं कमर पर पहनना चाहिए । मल-मूत्र विसर्जन के दौरान जनेऊ को दाहिने कान पर चढ़ा लेना चाहिए और हाथ स्वच्छ करके ही उतारना चाहिए। इसका मूल भाव यह है कि जनेऊ कमर से ऊंचा हो जाए और अपवित्र न हो। यह बेहद जरूरी होता है । मतलब साफ है कि जनेऊ पहनने वाला व्यक्ति ये ध्यान रखता है कि मल-मूत्र करने के बाद खुद को साफ करना है इससे उसका इंफेक्शन का खतरा कम से कम हो जाता है ।

अप्रत्यक्ष लाभ

शरीर मे कुल 365 एनर्जी पॉइंट होते हैं। अलग अलग बीमारी में अलग अलग पॉइंट असर करते हैं। कुछ पॉइंट कॉमन भी होते हैं । एक्यूप्रेशर में हर पॉइंट को दो तीन मिनट बाद दबाना होता है । और जनेऊ से हम वही काम करते हैं ।

अन्य लाभ

कान के नीच वाले हिस्से (ईयर लोब) को रोजाना पांच मिनट मसाज करने से याददाश्त बेहतर होती है। यह टिप पढ़ने वाले बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है ।

अगर भूख कम करनी हो तो भोजन करने के आधे घंटे पहले कान के बाहर छोटे वाले हिस्से (ट्रायगस) को दो मिनट उंगली से दबाए रखें, भूख कम लगेगी ।

यहीं पर प्यास का भी पॉइंट होता है निर्जला व्रत में इसे लोग दबाएं तो कम प्यास लगेगी ।

बार बार बुरे स्वप्न आने की स्थिति में जनेऊ धारण करने से बुरे स्वप्न नही आते हैं।

जनेऊ का हृदय के पास से गुजरने के कारण इससे हृदय रोग की संभावना कम होती है।

दाएं कान की नस अंडकोष और गुप्तेन्द्रियों से जुड़ी होती है। मूत्र विसर्जन के समय दाएं कान पे जनेऊ लपेटने से शुक्राणुओं की रक्षा होती है।

कान में जनेऊ लपेटने से मनुष्य में सूर्य नाड़ी का जागरण होता है। इसके अलावा जनेऊ के तीन धागे माता पिता और गुरु सेवा और गुरुभक्ति का कर्तव्य बोध कराते हैं। जनेऊ धारण करने से नैतिकता और मानवता के पुण्य कर्तव्यों को पूर्ण करने का आत्मबल मिलता है।

सनातन धर्म मे पाणिग्रहण संस्कार के महत्व, लाभ और विधि

सनातन धर्म में 16 संस्कारों को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। पाणिग्रहण संस्कार यानी विवाह संस्कार को भी इन 16 संस्कारों में से एक माना जाता है। वैदिक संस्कृति में इन 16 संस्कारों के बगैर इंसान का जीवन सफल नहीं माना जाता। हिंदू विवाह संस्कार सात फेरों के बगैर कभी नहीं होता। विवाह संस्कार आरंभ करने से पूर्व या विवाह की वेदी पर बिठाकर कन्या व वर से उनकी सहमति के अनुसार ही इस पाणिग्रहण संस्कार को आगे बढ़ाया जाता है। विवाह के प्रकरणों में सर्वप्रथम तिलक , हरिद्रलेपन , तथा द्वारपूजा आदि के आग्रह उभरते हैं।

विवाह का महत्व

वेदों और पुराणों के अनुसार विवाह में वर को भगवान विष्णु का स्वरुप माना जाता है। विष्णु रूपी वर कन्या के पिता की हर बात मानकर उन्हें यह आश्वासन देता है कि वह उनकी पुत्री को खुश रखेगा।

विवाह मुख्यतः आठ प्रकार के होते हैं-

- ब्रम्हा विवाह
- दैव विवाह
- आर्य विवाह
- प्रजापत्य विवाह
- असुर विवाह
- गंधर्व विवाह
- राक्षस विवाह
- पिशाच विवाह

नारद पुराण के अनुसार सबसे श्रेष्ठ विवाह ब्रम्हा विवाह ही माना जाता है इसके बाद दैव विवाह और आर्य विवाह को उत्तम माना जाता है।

वैदिक काल मे चार प्रकार के विवाह उत्कृष्ट कोटि के विवाह माने जाते थे-

● ब्रम्ह विवाह ● दैव विवाह ● आर्य विवाह ● प्रजापत्य विवाह

(क). सनातन धर्म मे चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम, मोक्षऔर चार आश्रम- ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास निर्धारित किया है। विवाह संस्कार का उद्देश्य काम पुरुषार्थ का अनुसरण करते हुए गृहस्थ आश्रम में प्रवेश लेना है।

(ख). एक पुरुष और महिला के जीवन मे कई महत्वपूर्ण चीजें विवाह से जुड़ी होती हैउदाहरण के लिए- पुरुष और महिला दोनों के जीवन का अकेलापन दूर होना।

(ग). हिन्दू समाज मे एक विवाहित महिला व पुरुष को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। विवाह के पश्चात एक स्त्री के माथे पर कुमकुम, गले मे मंगलसूत्र , हरी चूड़ियाँ , पैर के अंगूठे में छल्ले एक पर्यवेक्षक के मन मे उसके लिये सम्मान उतपन्न करता है।

विवाह के लाभ

गुण कर्म स्वभाव मिलाकर पिता के गोत्र को छोड़कर उत्तम संतान निर्मित करने के लिए अन्य गोत्र में प्रवेश हेतु विवाह किया जाता है। विवाह से स्त्री और पुरुष दोनों की प्रतिष्ठा ऊँची होती है। एक विवाही परिवारों में बच्चों का लालन पालन सामाजिकण एवं शिक्षा का कार्य उचित प्रकार से सम्पन्न होता है। एक विवाही परिवारों में संघर्षों के अभाव में मानसिक तनाव भी कम पाया जाता है।

विवाह की विधि

विवाह संस्कार का विशेष कर्मकांड , विवाह वेदी पर वर और कन्या दोनों को बुलाया जाता है। प्रवेश के साथ मंगलाचरण "भद्र कर्णेभिः" मंत्र बोलते हुए उन पर पुष्पाक्षत डाले जाते हैं। कन्या दायीं ओर और वर बायीं ओर बैठते हैं। कन्यादान करने वाले प्रतिनिधि कन्या के पिता भाई जो भी हो।

अन्नप्राशन पूजा महत्व/विधि

हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य के जीवन के हर महत्वपूर्ण पड़ावों को 16 भागों में विभाजित किया है। धर्म के आधार पर इन16 भागों को संस्कार का नाम दिया गया है जिसे लोग पूर्ण विधि के साथ एक समारोह के रूप में आयोजित करते हैं। इन संस्कारों में से एक संस्कार 'अन्नप्राशन संस्कार' भी है जिसमें शिशु को पारंपरिक विधियों के साथ पहली बार अनाज से परिचित कराया जाता है। अन्नप्राशन संस्कार से पहले तक एक शिशु केवल माँ के दूध पर ही निर्भर रहता है इसलिए इसे एक महत्वपूर्ण अवसर माना जाता है। क्योंकि यही वह समय होता है जब शिशु माँ के दूध के अलावा पहली बार अन्न ग्रहण करता है ।

'अन्नप्राशन'- संस्कृत का एक शब्द है जिसका अर्थ है 'अनाज का सेवन करने की शुरुआत'। हिन्दू धर्म में कई संस्कारों में से यह भी एक संस्कार है जिसमें माता-पिता पूरी विधि, पूजा संस्कार के साथ अपने बच्चे को अन्न खिलाने की शुरुआत करते हैं। यह संस्कार बच्चे को पहली बार चावल खिलाकर किया जाता है। अक्सर माता-पिता अपने बच्चे के लिए इस संस्कार को पूरे परिवार के साथ करते हैं जिसे उसका का एक महत्वपूर्ण विकास भी माना जाता है। यह वह समय होता है जब बच्चा, माँ के दूध के साथ-साथ ठोस खाद्य पदार्थ का सेवन करना भी शुरू कर देता है। अन्नप्राशन एक का एक रिवाज है देश के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे पश्चिम बंगाल में इसे मुखेभात , केरल में चोरूणु, गढ़वाल में भातखुलाई और इत्यादि। इस अनुष्ठान के बाद बच्चे को स्तनपान कराना धीरे-धीरे छुड़ाया जाता है और उसे ज्यादातर ठोस आहार ही दिया जाता है।

अन्नप्राशन संस्कार विधि- अन्नप्राशन संस्कार की विधि बच्चे को उसके मामा की गोद में बैठाकर शुरू की जाती है, जिसमें मामा अपने भांजे को ठोस आहार का पहला निवाला खिलाते हैं। जब बच्चा पहला निवाला खा लेता है तो परिवार के बाकी सदस्य भी उसे थोड़ा-थोड़ा भोजन खिलाते हैं और साथ ही अनेकों उपहार भी दिए जाते हैं। इसी प्रकार से अन्नप्राशन की विधि पूर्ण की जाती है। इस प्रक्रिया के अंतिम में बच्चे के सामने कुछ सामग्री रखी जाती है जैसे मिट्टी, सोने के आभूषण, कलम, किताबें, भोजन व इत्यादि। अब इन चीजों में से बच्चे को किसी एक चीज का चुनाव करना होता है। रिवाज के अनुसार बच्चे का चयन ही उसके भविष्य का प्रतीक माना जाता है। बच्चा यदि सोने के आभूषण चुनता है तो माना जाता है कि वह भविष्य में धनवान बनेगा। यदि बच्चा कलम का चयन करता है तो इसका मतलब है कि वह बुद्धिमान होगा।बच्चे के पुस्तक चुनने पर माना जाता है कि वह ज्ञानी होगा।यदि वह मिट्टी चुनता है तो इसका मतलब है कि वह जायदाद के मामले में भाग्यशाली है।और यदि बच्चे ने भोजन को चुना है तो मान्यता है कि वह सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति व दानवीर होगा । अन्नप्राशन के दौरान बच्चे के लिए चावल के साथ-साथ विभिन्न व्यंजन पकाए जाते हैं, जैसे-चावल की खीर ,पायस ,पायसम सादा मैश किया हुआ चावल घी के साथ ,दाल, सांबर या रसम फ्राईड राईस या पुलाव मछली के व्यंजन,मीट के व्यंजन खीर, या पायसम जो पूरे भारत में लोकप्रिय है और बच्चे को ठोस आहार से परिचित इन्हीं व्यंजनों से करवाया जाता है। यह आमतौर पर माँ या दादी द्वारा बनाया जाता है और यह स्वादिष्ट व्यंजन बच्चे को चांदी के बर्तन में खिलाया जाता है।

सुविचार

विष्णु के पैरों में ही क्यों रहती हैं महालक्ष्मी

हम सभी ने भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के कई चित्र देखें हैं। अनेक चित्रों में भगवान विष्णु को बीच समुद्र में शेषनाग के ऊपर लेटे और माता लक्ष्मी को उनके चरण दबाते हुए दिखाया जाता है।माता लक्ष्मी यूं तो धन की देवी हैं तो भी वे भगवान विष्णु के चरणों में ही निवास करती हैं ऐसा क्यों? इसका कारण हैं कि भगवान विष्णु कर्म व पुरुषार्थ का प्रतीक हैं और माता लक्ष्मी उन्हीं के यहां निवास करती हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटते और कर्म व अपने पुरुषार्थ के बल पर विजय प्राप्त करते हैं जैसे कि भगवान विष्णु। हर व्यक्ति देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए कई तरह के जतन करता है। जिसे धन प्राप्त नहीं होता वह भाग्य को दोष देता है। जो ईमानदारी और कड़ी मेहनत से कर्म करता है, उससे धन की देवी लक्ष्मी सदैव प्रसन्न रहती हैं और सदैव पैसों की बारिश करती हैं। इसी वजह से कहा जाता है कि महालक्ष्मी व्यक्ति के भाग्य से नहीं कर्म से प्रसन्न होती हैं।महालक्ष्मी सदैव भगवान विष्णु की सेवा में लगी रहती हैं, शास्त्रों में जहां-जहां विष्णु और लक्ष्मी का उल्लेख आता है वहां लक्ष्मी श्री हरि के चरण दबाते हुए ही बताई गई हैं। विष्णु ने उन्हें अपने पुरुषार्थ के बल पर ही वश में कर रखा है। लक्ष्मी उन्हीं के वश में रहती है जो हमेशा सभी के कल्याण का भाव रखता हो। समय-समय पर भगवान विष्णु ने जगत के कल्याण के लिए जन्म लिए और देवता तथा मनुष्यों को सुखी किया। विष्णु का स्वभाव हर तरह की मोह-माया से परे है। वे दूसरों को मोह में डालने वाले हैं। समुद्र मंथन के समय उन्होंने देवताओं को अमृत पान कराने के लिए असुरों को मोहिनी रूप धारण करके सौंदर्य जाल में फंसाकर मोह में डाल दिया। मंथन के समय ही लक्ष्मी भी प्रकट हुई। देवी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए देवता और असुरों में घमासान लड़ाई हुई। भगवान विष्णु ने लक्ष्मी का वरण किया। लक्ष्मी का स्वभाव चंचल है, उन्हें एक स्थान पर रोक पाना असंभव है। फिर भी वे भगवान विष्णु के चरणों में ही रहती है।जब भी अधर्म बढ़ता है तब-तब भगवान विष्णु अवतार लेकर अधर्मियों का नाश करते हैं और कर्म का महत्व दुनिया को समझाते हैं। इसका सीधा-सा अर्थ यह है कि केवल भाग्य पर निर्भर रहने से लक्ष्मी (पैसा) नहीं मिलता ।धन के लिए कर्म करने की आवश्यकता पड़ती है, साथ ही हर विपरीत परिस्थिति से लड़ने का साहस भी होना चाहिए। तभी लक्ष्मी घर में निवास करेंगी।जो व्यक्ति लक्ष्मी के चंचल और मोह जाल में फंस जाता है लक्ष्मी उसे छोड़ देती है। जो व्यक्ति भाग्य को अधिक महत्व देता है और कर्म को तुच्छ समझता है, लक्ष्मी उसे छोड़ देती हैं। विष्णु के पास जो लक्ष्मी हैं वह धन और सम्पत्ति है। भगवान श्री हरि उसका उचित उपयोग जानते हैं। इसी वजह से महालक्ष्मी श्री विष्णु के पैरों में रहती हैं।

पूजा के समय सिर ढकना जरूरी क्यों है?

पौराणिक कथाओं में नायक, उपनायक तथा खलनायक भी सिर को ढंकने के लिए मुकुट पहनते थे। यही कारण है कि हमारी परंपरा में सिर को ढकना स्त्री और पुरुषों सबके लिए आवश्यक किया गया था। सभी धर्मों की स्त्रियां दुपट्टा या साड़ी के पल्लू से अपना सिर ढंककर रखती थी। इसीलिए मंदिर या किसी अन्य धार्मिक स्थल पर जाते समय या पूजा करते समय सिर ढकना जरूरी माना गया था। पहले सभी लोगों के सिर ढकने का वैज्ञानिक कारण था।

विज्ञान के अनुसार- सिर मनुष्य के अंगों में सबसे संवेदनशील स्थान होता है। ब्रह्मरंध्र जो सिर के बीचों-बीच स्थित होता है मौसम के मामूली से परिवर्तन के दुष्प्रभाव ब्रह्मरंध्र के भाग से शरीर के अन्य अंगों पर आतें हैं। इसके अलावा आकाशीय विद्युतीय तरंगे खुले सिर वाले व्यक्तियों के भीतर प्रवेश कर क्रोध, सिर दर्द, आंखों में कमजोरी आदि रोगों को जन्म देती है। इसी कारण सिर और बालों को ढककर रखना हमारी परंपरा में शामिल था। इसके बाद धीरे-धीरे समाज की यह परंपरा बड़े लोगों को या भगवान को सम्मान देने का तरीका बन गई। साथ ही इसका एक कारण यह भी है कि सिर के मध्य में सहस्त्रार चक्र होता है। पूजा के समय इसे ढककर रखने से मन एकाग्र बना रहता है। इसीलिए नग्न सिर भगवान के समक्ष जाना ठीक नहीं माना जातो का है। यह मान्यता है कि जिसका हम सम्मान करते हैं या जो हमारे द्वारा सम्मान दिए जाने योग्य है उनके सामने हमेशा सिर ढककर रखना चाहिए।

सनातन घड़ी

12:00 बजने के स्थान पर आदित्य लिखा हुआ है जिसका अर्थ यह है कि सूर्य 12 प्रकार के होते हैं।

1:00 बजने के स्थान पर ईश्वर लिखा हुआ है इसका अर्थ यह है कि ईश्वर एक ही प्रकार का होता है। एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।

2:00 बजने की स्थान पर पक्ष लिखा हुआ है जिसका तात्पर्य यह है कि पक्ष दो होते हैं 1 कृष्ण पक्ष औऱ दूसरा शुक्ल पक्ष।

3:00 बजने के स्थान पर अनादि तत्व लिखा हुआ है जिसका तात्पर्य यह है कि अनादि तत्व 3 हैं। परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति ये तीनों तत्व अनादि है ,

4:00 बजने के स्थान पर वेद लिखा हुआ है जिसका तात्पर्य यह है कि वेद चार प्रकार के होते हैं -- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

5:00 बजने के स्थान पर महाभूत लिखा हुआ है जिसका तात्पर्य है कि महाभूत पांच प्रकार के होते हैं। पांच महाभूत हैं - सत्वगुण, रजगुण, कर्म, काल, स्वभाव"

6:00 बजने के स्थान पर दर्शन लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि दर्शन 6 प्रकार के होते हैं।
छः दर्शन सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त के नाम से विदित है।

7:00 बजे के स्थान पर धातु लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि धातु 7 हैं। सात धातुओं के नाम
रस : प्लाज्मारक्त : खून (ब्लड)मांस : मांसपेशियांमेद : वसा (फैट)अस्थि : हड्डियाँमज्जा : बोनमैरोशुक्र : प्रजनन संबंधी ऊतक

8:00 बजने के स्थान पर अष्टांग योग लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि योग के आठ प्रकार होते है। योग के आठ अंग हैं:
1) यम, २) नियम, ३) आसन, ४) प्राणायाम, ५) प्रत्याहार, ६) धारणा ७) ध्यान ८) समाधि

9:00 बजने के स्थान पर अंक लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि अंक 9 प्रकार के होते हैं। 1 2 3 4 5 6 7 8 9

10:00 बजने के स्थान पर दिशाएं लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि दिशाएं 10 होती है।

11:00 बजने के स्थान पर उपनिषद लिखा हुआ है इसका तात्पर्य है कि उपनिषद 11 प्रकार के होते हैं।

महावाक्य

गहन विचारों से युक्त वेदों के वाक्यों को महावाक्य कहा गया है जो उपनिषदों से लिया गया है | जो साधक ब्रम्ह को प्राप्त करना चाहता है वे सदैव ज्ञानमार्ग को अपनाते हैं तथा महावाक्यों का निरंतर चिंतन मनन करते है | इन महावाक्यों का स्वरूप लघु है किन्तु इसमें निहित हैं आत्मा व ब्रम्ह के एकत्व का वृहद् गोप्य विषय| उपनिषद के ये महावाक्य मानव जाति के लिए महाप्राण, महा औषधि एवं संजीवनी बूटी के समान हैं, जिन्हें हृदयंगम कर मनुष्य आत्मस्थ हो सकता है। यह चार महावाक्य निम्नवत हैं जिन्हें अतिसंक्षिप्त रूप में समझाने का प्रयास किया जा रहा है : 1-प्रज्ञानं ब्रह्म, प्रथम महावाक्य है जिसका सम्बन्ध ब्रम्ह की चैतन्यता से है क्योंकि इस महावाक्य में ब्रम्ह को चैतन्य रूप में रखा गया है | इसे लक्षणा वाक्य समझा जा सकता है | 2-अहं ब्रह्मास्मि, दूसरा महावाक्य है जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि हम सभी ब्रम्ह हैं | जिसका मूल स्वरूप केवल अनुभव द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है | इसे अनुभव वाक्य भी समझा जा सकता है | 3-तत्त्वमसि, तीसरा महावाक्य है जिसमें यह कहा जा रहा है कि केवल मैं ही ब्रम्ह नही हूँ अपितु आप भी ब्रम्ह हैं | इसे उपदेश वाक्य भी कहा जा सकता है | 4- अयमात्मा ब्रह्म, चौथा महावाक्य है जिसमें परम सत्य के बड़े स्वरूप की जानकारी दी गई है | इसे अनुसंधान वाक्य भी कहा जा सकता है | यह देखा जाता है कि जब भी साधक ध्यान प्रारम्भ करता है, उसके मन में अनेकों उथल पुथल शुरू हो जाते हैं और वह किसी एक बिंदु पर अपना ध्यान केन्द्रित नही समझ पाता है | वह चिंतन या मनन किसका करे या वो किस एक का ध्यान करे, इसको समझने में कठिनाई होती है | मोक्ष हेतु साधना की श्रेणियां भी अलग अलग हैं, अतः यदि हम महावाक्य के अनुसार इस श्रेणियों को समझे तो परम लक्ष्य तक पहुंचने में सुविधा होगी | जब हम चिंतन करते हैं तब यही समझना है कि जो कुछ भी है वह सब ब्रम्ह है | अब निरंतर सब ब्रम्ह है पर ध्यान दें तो एक सवाल जरूर मन में उत्पन्न होता है कि यदि सब ब्रम्ह है तो, मैं कौन हूँ ? जब हम स्वयं के बारे में चिंतन करते हैं कि मैं कौन हूँ? तो उस वक्त समझना चाहिए कि मैं भी ब्रम्ह हूँ यानि ब्रम्ह की ही अंश हूँ | अब यदि मैं ब्रम्ह का अंश हूँ तो आप अथवा तुम कौन हो ? इस पर प्रश्न चलने लगता है | तब हमें यह समझना होता है कि यदि हम उस ब्रम्ह के अंश हैं तो सामने वाला भी ब्रम्ह का ही अंश है अर्थात आप भी ब्रम्ह हैं | अब यदि सब ब्रम्ह है, मैं भी ब्रम्ह हूँ, तुम भी ब्रम्ह हो तो उस ब्रम्ह चैतन्य से एकरूप होने के लिए किस पर ध्यान केन्द्रित करूं ? तब यह समझना आवश्यक है कि जो सभी जगह व्याप्त हैं उस ब्रम्ह को अपने आत्मा में देखो क्योंकि उसी ब्रम्ह के कारण यह आत्मतत्व प्रकाशित है | इसलिए अपनी आत्मा पर ध्यान केन्द्रित करो और उस ब्रम्ह के एकाकार में हो जाओ |

Ph.D Vedic Science Four Times
Guinness World Record
Holder Winner : Mahatma Gandhi
Dr. Jagadeesh Pillai
Global Peace Award

12 जनवरी 2023

युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम् ने किया नाट्य मंचन

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

।। सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् ।।

युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम् ने किया नाट्य मंचन

तू एक वट वृक्ष के समान है लाखो करोड़ों लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है जाओ नरेंद्र- युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

तू एक वट वृक्ष के समान है लाखो करोड़ों लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है जाओ नरेंद्र- युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

स्वतंत्र चेतना

युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

बीएचयू में ब्रह्मराष्ट्र एकम का मंचन

वाराणसी। ब्रम्हराष्ट्र एकम की प्रस्तुति नाटक नरेंद्र से विवेकानंद ने दर्शकों को किया भाव विभोर, मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय अभ्ययन योजना के अंतर्गत चौथा शो किया गया, नाटक 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की 160वीं वर्षगाठ के उपलक्ष में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में इसका मंचन हुआ। समन्वयक श्री नेहा वर्मा नाटक में सहयोग किया बनारस यूथ थियेटर ने, इसका निर्देशन किया अमित कुमार श्रीवास्तव, लेखन शुभम वर्मा ने। संगीत आदित्य अग्रहरी, मंच निर्माण प्रियांशु लालवानी रहे। कलाकारों में राम कृष्ण परमहंस की भूमिका में कृष्णा चौबे, स्वामी विवेकानंद जी की भूमिका में शुभम वर्मा और अन्य कलाकार प्रियांशु लालवानी, राज रोबिन कुमार, मेधा, गौरव मणि, सोनू कुमार, मानवी पाण्डेय, सार्थक खन्ना, इशिता दास गुप्ता, श्रीमांशु गुप्ता, मीनाक्षी सेन गुप्ता, ध्रुव रुपाणी, मयंक सिंह राजपूत रहे। मुख्य अतिथि दिवाकर द्विवेदी कामाख्या पीठ के साधक, प्रिया मिश्रा और डॉ सचिन सनातनी ने दीप प्रज्वलित किया। धन्यवाद ब्रम्हराष्ट्र एकम के संगठन मंत्री धीरेन्द्र पाण्डेय और अजय दुबे ने किया। कार्यक्रम में संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, कुशल पाल, राजू राजभर, राकेश गुप्ता, कमलेश शुक्ला, राजेश पाण्डेय, आदित्य सिंह, भीमप्रिय, एसएन उपाध्याय, अरविन्द जी, अमित सिंह, नितिन सिंह, सूर्यप्रकाश आदि ने सहयोग दिया।

तू एक वट वृक्ष के समान है लाखो करोड़ों लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है जाओ नरेंद्र- युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

युवा दिवस में ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

वाराणसी। ब्रह्मराष्ट्र एकम की प्रस्तुति नाटक नरेंद्र से विवेकानंद ने दर्शकों को किया भाव विभोर, मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय अभ्यन योजना के अंतर्गत चौथा शो किया गया, नाटक स्वामी विवेकानंद जी की 160 वी वर्ष गाठ के उपलक्ष में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में इसका मंचन हुआ, समन्वयक श्री नेहा वर्मा नाटक में सहयोग किया बनारस यूथ थियेटर ने, इसका निर्देशन किया श्री अमित कुमार श्रीवास्तव, लेखन शुभम वर्मा और कम समय में एक अद्भुत प्रस्तुति का प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय था, संगीत ने पूरी तरह से उस काल खंड से जुड़ाव बनाया रखा, कलाकारों की मेहनत और कुशल अभिनव ने नाटक को सम्हाला रखा संगीत में थे आदित्य अग्रहरी, मंच निर्माण किया प्रियांशु ललवानी, कलाकारों में राम कृष्ण परमहंस की भूमिका में कृष्णा चौबे, स्वामी विवेकानंद जी की भूमिका में शुभम वर्मा, और अन्य कलाकार प्रियांशु लालवानी, राज रोबिन कुमार, मेधा, गौरव मणि, सोनू कुमार, मानवी पाण्डेय, सार्थक खन्ना, इशिता दास गुप्ता, श्रीमांशु गुप्ता, मीनाक्षी सेन गुप्ता, ध्रुव रुपाणी, मयंक सिंह राजपूत अपना पूरा संयोग दिया

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि श्री श्री दिवाकर द्विवेदी कामाख्या पीठ के साधक, प्रिया मिश्रा और डॉ सचिन सनातनी ने दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा की आज के युवाओं को राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर भारत को विश्व गुरु बनाने में अपनी भूमिका निभाए जैसा स्वामी जी ने किया था भारत का नाम और उसके बाद डॉ सचिन सनातनी ने सभी नाट्य मंचनकर्ताओं के अभिनय की प्रशंसा की उन्हें प्रोत्साहित कर बताया की ऐसे नाट्य मंचन से युवाओं में चेतना आती है और अपने देश के विकास में सहायक होते हैं चाहे धार्मिक हो आर्थिक हो सामाजिक हो अन्य क्षेत्र हो। कार्यक्रम का धन्यवाद ब्रह्मराष्ट्र एकम के संगठन मंत्री धीरेन्द्र पाण्डेय और रो अजय दुबे सभी का आभार व्यक्त कर के किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संगठन से संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, कुशल पाल आदि रहे।

युवा दिवस पर ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया नाट्य मंचन

परफेक्ट मिशन

वाराणसी। ब्रह्मराष्ट्र एकम की प्रस्तुति नाटक नरेंद्र से विवेकानंद ने दर्शकों को किया भाव विभोर, मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय अध्यन योजना के अंतर्गत चौथा शो किया गया, नाटक 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की 160 वी वर्ष गाठ के उपलक्ष में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में इसका मंचन हुआ, समन्वयक श्री नेहा वर्मा नाटक में सहयोग किया बनारस यूथ थियेटर ने, इसका निर्देशन किया अमित कुमार श्रीवास्तव, लेखन शुभम् वर्मा और कम समय में एक अद्भुत प्रस्तुति का प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय था, संगीत ने पूरी तरह से उस काल खंड से जुड़ाव बनाया रखा, कलाकारों की मेहनत और कुशल अभिनय ने नाटक को सम्हाला रखा।

संगीत में थे आदित्य अग्रहरी, मंच निर्माण किया प्रियांशु ललवानी, कलाकारों में राम कृष्ण परमहंस की भूमिका में कृष्णा चौबे, स्वामी विवेकानंद जी की भूमिका में शुभम् वर्मा, और अन्य कलाकार प्रियांशु लालवानी, राज रोबिन कुमार, मेधा, गौरव मणि, सोनू कुमार, मानवी पाण्डेय, सार्थक खन्ना, इशिता दास गुप्ता, श्रीमांशु गुप्ता, मीनाक्षी सेन गुप्ता, ध्रुव रुपाणी, मयंक सिंह राजपूत अपना पूरा संयोग दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि दिवाकर द्विवेदी कामाख्या पीठ के साधक, प्रिया मिश्रा और डॉ सचिन सनातनी ने दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा की आज के युवाओं को राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर भारत को विश्व गुरु बनाने में अपनी भूमिका निभाए जैसा स्वामी जी ने किया था भारत का नाम और उसके बाद डॉ सचिन सनातनी जी ने सभी नाट्य मंचनकर्ताओं के अभिनय की प्रशंसा की उन्हें प्रोत्साहित कर बताया की ऐसे नाट्य मंचन से युवाओं में चेतना आती हैं और अपने देश के विकास में सहायक होते हैं चाहे धार्मिक हो आर्थिक हो सामाजिक हो अन्य क्षेत्र हो।

CITY BRIEFS

विवेकानंद की जयंती पर नाटक

VARANASI : बीएचयू मे एमपी की ब्रह्मराष्ट्र एकम संस्था की ओर से स्वामी विवेकानंद की जंयती के मौके पर नाटक का आयोजन किया गया. इस दौरान उनके बचपन से लेकर युवा जीवन के अनुभवों दिखाया गया. समन्यवयक नेहा वर्मा ने नाटक मे सहयोग किया. अमित कुमार श्रीवास्तव, शुभम् वर्मा ने शानदार प्रस्तुति दी. कार्यक्रम का शुभारम्भ चीफ गेस्ट दिवाकर द्विवेदी कामाख्या पीठ के साधक ने किया. कार्यक्रम को सफल बनाने मे संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, कुशल पाल, राजू राजभर, राकेश गुप्ता, कमलेश शुक्ला, राजेश पाण्डेय, आदित्य सिंह, भीमप्रिय, एसएन उपाध्याय, अरविन्द, अमित सिंह, नितिन सिंह, सूर्यप्रकाश आदि का सहयोग रहा.

भाग(1)

12 फ़रवरी 2023

ब्रह्मराष्ट्र एकम~ ने किया हरिद्वार में द्वितीय राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन

भाग(2)

12 फ़रवरी 2023

ब्रह्मराष्ट्र एकम~ ने किया हरिद्वार में द्वितीय राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन

ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार का राष्ट्रीय अधिवेशन 12 फरवरी से

- अधिवेशन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसारः कश्यप

भास्कर समाचार सेवा

पत्रकारों से वार्ता करते सेवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष संतोष कश्यप।

हरिद्वार। भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार की और से हरिद्वार में द्वितीय राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है।

मध्य हरिद्वार स्थित एक रेस्टोरेंट में अधिवेशन के संबंध में जानकारी देते हुए ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार के सेवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष संतोष कश्यप ने बताया कि भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अत्यूतानंद तीर्थ महाराज के सानिध्य में 12 फरवरी को हरिपुर कलां स्थित अद्भुत मंदिर में आयोजित किए जा रहे अधिवेशन का उद्देश्य शिक्षा में उन्नयन, युवाओं में नशे के प्रति बढ़ते आकर्षण को रोकना, पाश्चात्य संस्कृति के बजाए भारतीय संस्कृति अपनाने के प्रति प्रेरित करना, ब्रिटिश न्यायिक कार्य प्रणाली व्यवस्था को भारतीय संस्कृति के अनुरूप लाना है।

अधिवेशन में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित कई प्रमुख संतों, प्रबुद्धजनों को आमंत्रित किया गया है। मुख्य कार्यालय अधीक्षक अंशुल पाठक ने बताया कि अखंड भारत सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए हरिद्वार में दूसरा राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है। भूमा निकेतन आश्रम के प्रबंधक राजेंद्र शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से जो भी मुख्य और विशिष्ट अतिथि आ रहे हैं। राजेंद्र शर्मा ने बताया कि अधिवेशन स्वामी अच्यूतानन्द तीर्थ महाराज के सानिध्य में संपन्न होगा।

ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार का अधिवेशन 12 से

हरिद्वार: भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार को ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार की ओर से हरिपुर कलां स्थित अद्भुत मंदिर में द्वितीय राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया जाएगा। मध्य हरिद्वार के एक रेस्टोरेंट में ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार के सेवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष संतोष कश्यप ने बताया कि भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ महाराज के सानिध्य में होने वाले अधिवेशन का उद्देश्य शिक्षा में उन्नयन, युवाओं में नशे के प्रति बढ़ते आकर्षण को रोकना, पाश्चात्य संस्कृति के बजाय भारतीय संस्कृति अपनाने को प्रेरित करना, ब्रिटिश न्यायिक कार्य प्रणाली व्यवस्था को भारतीय संस्कृति के अनुरूप लाना है। (जासं)

राष्ट्रीय अधिवेशन की जानकारी देते पदाधिकारी।

ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार का राष्ट्रीय अधिवेशन 12 फरवरी से

हरिद्वार। भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार की और से हरिद्वार में द्वितीय राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। ब्रह्मराष्ट्र एकम परिवार के सेवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष संतोष कश्यप ने बताया कि भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ महाराज के सानिध्य में 12 फरवरी को हरिपुर कलां स्थित अद्भुत मंदिर में आयोजित किए जा रहे अधिवेशन का उद्देश्य शिक्षा में उन्नयन, युवाओं में नशे के प्रति बढ़ते आकर्षण को रोकना, पाश्चात्य संस्कृति के बजाए भारतीय संस्कृति अपनाने के प्रति प्रेरित करना, ब्रिटिश न्यायिक कार्य प्रणाली व्यवस्था को भारतीय संस्कृति के अनुरूप लाना है। अधिवेशन में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित कई प्रमुख संतों, प्रबुद्धजनों को आमंत्रित किया गया है।

...र शरीफ ने जीत दर्ज की

हरिद्वार। हजारा ग्रंट में आयोजित जिला स्तरीय क्रिकेट टूर्नामेंट का फाइनल मैच कलियर शरीफ तथा शहीदावाला ग्रंट के बीच खेला गया। कड़े मुकाबले वाले मैच में कलियर शरीफ ने जीत दर्ज की। पूर्व जिला ...

... से समाज में भाईचारा बढ़ता और ऊंच नीच का भेद मिटता है। टूर्नामेंट आयोजन कमेटी के संयोजक अमजद अली रावत, आमिर खान व रहमान खान ने फूलमाला पहनाकर राव आफाक अली का स्वागत किया। अमजद अली ने बताया कि टूर्नामेंट में जिले की 32 टीमों ने भाग लिया। ... पर जिला पंचायत सदस्य ...

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

।। सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् ।।

द्वितीय

राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन

स्थान – अद्भुत मंदिर, सप्त सरोवर मार्ग, हरिपुर कला, हरिद्वार उत्तराखण्ड– 249411

सनातन संस्कृति के लिए ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया भारत को महाशक्ति और हिन्दू राष्ट्र बनाने का शंखनाद

परफेक्ट मिशन

वाराणसी। ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम पूज्य महाराज भूमा पीठाधीश्वर अनंत विभूषित स्वामी अच्युतानंद के पावन सानिध्य में अद्भुत मंदिर हरिपुर कलां (हरिद्वार) के सभागार में होने वाले राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन की सम्पूर्ण जानकारी संस्था के संस्थापक और कार्यक्रम आयोजक डॉ सचिन सनातनी ने पहले सत्र में मुख्य वक्ताओं द्वारा पांच बिन्दुओ पर उन्होंने चर्चा की।

जिसमे शिक्षा उन्नयन में सुधार, युवाओं में नशा प्रवृति को रोकना, पाश्चात्य संस्कृति की बोलचाल भाषा को रोकना, ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली के अनुपालन को भारतीय संस्कृति के अनुसार लाना एवं भारत को हिन्दू महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के महाभियान आदि पर चर्चा होगी। वहीं द्वितीय सत्र 4 बजे से 8 बजे तक में, काशी के प्रख्यात भजन सम्राट डॉ अमलेश शुक्ल की प्रस्तुति होगी। साथ ही साथ उत्तराखंड के संस्कृति पर आधारित शास्त्रीय नृत्य व संगीत का आयोजन किया जायेगा। डॉ सचिन सनातनी जी ने ये भी बताया कि जिस प्रकार हमारे सनातन धर्म पर आज के परिवेश में कटाक्ष किया जा रहा, जिसका अस्तित्व सदियों पुराना है और जिसका हजारो वैज्ञानिक प्रमाण विधमान है उसके बावजूद अपने सनातन धर्म के प्रति मानसिक विकार से ग्रसित लोग अनाप शनाप बाते करते है जो कि निंदनीय और अशोभनीय है। इन्ही सब सकारात्मक विचारों के साथ यह धर्म सम्मेलन किया जा रहा जो कि पिछला अधिवेशन श्रृंगेरी मठ में आयोजित हुआ था।

हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय त्याग

हाथरस से प्रकाशित

वर्ष : 02 अंक : 144 हाथरस, सोमवार 13 फरवरी 2023

हरिद्वार के पावन भूमि पर आयोजित हुआ ब्रह्मराष्ट्र एकम का द्वितीय अधिवेशन, संतों और विद्वानों ने विचार व्यक्त किया ..!

सनातन संस्कृति के लिए ब्रह्मराष्ट्र एकम ने किया भारत को महाशक्ति और हिन्दू राष्ट्र बनाने का शंखनाद

आज का प्रहरी

आज दिनांक 12 फरवरी दिन रविवार को ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम पूज्य महाराज भूमा पीठाधीश्वर अनंत श्री विभूषित स्वामी अच्युतानन्द जी के पावन सानिध्य में अद्भुत मंदिर हरिपुर कला (हरिद्वार) के सभागार में होने वाले राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन की सम्पूर्ण जानकारी संस्था के संस्थापक और कार्यक्रम आयोजक डॉ सचिन सनातनी ने पहले सत्र में मुख्य वक्ताओं द्वारा पांच बिन्दुओं पर उन्होंने चर्चा की।

जैसे-

1.शिक्षा उन्नयन में सुधार,
2.युवाओं में नशा प्रवृति को रोकना,
3.पाश्चात्य संस्कृति की बोलचाल भाषा को रोकना,
4.ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली के अनुपालन को भारतीय संस्कृति के अनुसार लाना,
5.भारत को हिन्दू महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के महाभियान आदि पर चर्चा होगी।

वहीं द्वितीय सत्र 4 बजे से 8 बजे तक में, काशी के प्रख्यात भजन सम्राट डॉ अमलेश शुक्ल की प्रस्तुति होगी। साथ ही साथ उत्तराखंड के संस्कृति पर आधारित शास्त्रीय नृत्य व संगीत का आयोजन किया जायेगा। डॉ सचिन सनातनी जी ने ये भी बताया कि - जिस प्रकार हमारे सनातन धर्म पर आज के परिवेश मे कटाक्ष किया जा रहा, जिसका अस्तित्व सदियों पुराना है और जिसका हजारो वैज्ञानिक प्रमाण विद्यमान है उसके बावजूद अपने सनातन धर्म के प्रति मानसिक विकार से ग्रसित लोग अनाप शनाप बाते करते है जो कि निंदनीय और अशोभनीय है। इन्ही सब सकारात्मक विचारों के साथ यह धर्म सम्मेलन किया जा रहा जो कि पिछला अधिवेशन श्रृंगेरी मठ (वाराणसी)में आयोजित हुआ था। ब्रह्मराष्ट्र एकम वसुधैव कुटुम्बकम के भाव से कार्य कर रही है। जो इस धरती पर सभी मानव एक परिवार की तरह है और सभी के कल्याण की बात भारत सदियों से करता आ रहा है और सनातन पुरातन धर्म का पालन आज भी हम लोग निरंतर करते चले आ रहे है और ये अब भारतीय युवाओं को सुसंस्कृत करने के लिए प्रेरित करेगी। प्रेस वार्ता मे मुख्य अतिथि पूज्य महाराज भूमा पीठाधीश्वर जी, विशिष्ट अतिथि कुंवर राजेंद्र नरूका, राष्ट्रकवि गजेंद्र सोलंकी, पूर्व अध्यक्ष प्रदीप झा (गंगा महासभा), महामंडलेश्वर ज्योतिर्मयी आनंद, संचालक आचार्य आनंद बल्लभ पांडेय व सुनील शास्त्री। ब्रह्मराष्ट्र एकम संगठन के प्रमुख न्यास सतीश चंद्र मिश्र, रविंद्र नाथ मिश्र, भूमा से राजेंद्र शर्मा जी, पावन जी, उपेंद्र नाथ, पंकज मिश्र, कुमकुम मिश्र, संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, अखिलेश रावत, दीनदयाल मिश्र, सुमीत अधिकारी, बलराम मिश्र। साथ ही उत्तराखंड की कुमाऊँ और गढ़वाली लोक नृत्य भूमा मेडिकल कॉलेज की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम आयोजक डॉ सचिन सनातनी जी व धन्यवाद ज्ञापन पंडित दिवाकर द्विवेदी, सतीश चंद्र मिश्र, रविंद्र नाथ मिश्र, व प्रिय मिश्र ने किया।

संक्षिप्त समाचार

देश की एकता अखण्डता बनाए रखने में संत समाज का अहम योगदान: स्वामी अच्युतानन्द

हरिद्वार (दैनिक ...)। सनातन संस्कृति के अनुरूप भारत को हिन्दू राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा सप्तऋषि क्षेत्र स्थित अद्भुत मंदिर में राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया गया। अधिवेशन में शिक्षा व्यवस्था के उन्नयन, युवाओं में नशे की प्रवृति पर रोक लगाने, पाश्चात्य संस्कृति की बोलचाल भाषा को रोकना, ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली के अनुपालन को भारतीय संस्कृति के अनुसार लाना, भारत को हिन्दू महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के महाभियान आदि पर वक्ताओं ने विचार रखे। अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ महाराज ने कहा कि संत महापुरुषों ने हमेशा ही देश की एकता अखण्डता बनाए रखने में अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि आज सनातन परंपराओं और धर्म शास्त्रों पर अनर्गल टिप्पणी सनातन धर्म पर कुठाराघात किया जा रहा है। जिसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। युवा वर्ग को नशे व पाश्चात्य संस्कृति से दूर रहकर सनातन धर्म संस्कृति और परंपराओं को अपनाते हुए धर्म रक्षा के लिए आगे आना चाहिए। एकजुट होकर ही सनातन धर्म की रक्षा की जा सकती है।

डा.सचिन सनातनी ने कहा कि सनातन धर्म के अत्यन्त प्राचीन होने के हजारों वैज्ञानिक प्रमाण हैं। लेकिन मानसिक विकार से ग्रसित लोग अनर्गल टिप्पणियां कर सनातन धर्म पर कटाक्ष कर रहे हैं। जो कि अत्यन्त निंदनीय और अशोभनीय है। जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि भारत को शक्तिशाली हिंदू राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए ब्रह्मराष्ट्र एकम का पहला अधिवेशन श्रृंगेरी मठ वाराणसी में आयोजित किया गया था। वसुधैव कुटुंबकम की भावना से कार्य करने वाले ब्रह्मराष्ट्र एकम का स्पष्ट मत है कि इस धरती पर सभी मानव एक परिवार की तरह हैं। भारत सदियों से सभी के कल्याण की बात करता आ रहा है। भारतीय युवाओं को सनातन धर्म संस्कृति के अनुरूप सुसंस्कृत किया जाएगा।

एकता अखंडता बनाने में संत समाज का योगदान

हरिद्वार। ब्रह्मराष्ट्र एकम की ओर से सप्तऋषि स्थित अदभुत मंदिर में राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया गया, जिसमें शिक्षा व्यवस्था के उन्नयन, युवाओं में नशे की प्रवृति पर रोक लगाने, पाश्चात्य संस्कृति की बोलचाल भाषा को रोकने सहित कई मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्यूतानन्द तीर्थ ने कहा कि संत महापुरुषों ने हमेशा ही देश की एकता अखंडता बनाए रखने में अपना योगदान दिया है। आज सनातन परंपराओं और धर्म शास्त्रों पर अनर्गल टिप्पणी सनातन धर्म पर कुठाराघात किया जा रहा है, जिसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। डॉ. सचिन सनातनी ने कहा कि सनातन धर्म के अत्यंत प्राचीन होने के हजारों वैज्ञानिक प्रमाण हैं। संवाद

सनातन धर्म पर अनर्गल टिप्पणी बर्दाश्त नहीं : अच्युतानंद तीर्थ

हरिद्वार। सनातन संस्कृति के अनुरूप भारत को हिन्दू राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा सप्तऋषि क्षेत्र स्थित अदभूत मंदिर में राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया गया। अधिवेशन में शिक्षा व्यवस्था के उन्नयन, युवाओं में नशे की प्रवृति पर रोक लगाने, पाश्चात्य संसति की बोलचाल भाषा को रोकना, ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली के अनुपालन को भारतीय संस्कृति के अनुसार लाना, भारत को हिन्दू महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के महाभियान आदि पर वक्ताओं ने विचार रखे।

राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन आयोजित

अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ ने कहा कि संत महापुरुषों ने हमेशा ही देश की एकता अखंडता बनाए रखने में अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि आज सनातन परंपराओं और धर्म शास्त्रों पर अनर्गल टिप्पणी सनातन धर्म पर कुठाराघात किया जा रहा है। जिसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। डा. सचिन सनातनी ने कहा कि सनातन धर्म के अत्यन्त प्राचीन होने के हजारों वैज्ञानिक प्रमाण हैं, लेकिन मानसिक विकास से ग्रसित लोग अनर्गल टिप्पणीयां कर सनातन धर्म पर कटाक्ष कर रहे हैं, जो निंदनीय है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि कुंवर राजेंद्र नरूका, राष्ट्रकवि गजेंद्र सोलंकी, गंगा सभा के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप झा, महामंडलेश्वर ज्योतिर्मयी आनंद, संचालक आचार्य आनंद बल्लभ पांडेय, सुनील शास्त्री, सतीश चंद्र मिश्र, रविंद्रनाथ मिश्र, राजेंद्र शर्मा पावन, उपेंद्रनाथ, संतोष कश्यप, अखिलेश रावत, दीनदयाल मिश्र अभिषेक शुक्ल, बलराम मिश्र आदि ने भी विचार रखे।

देश की एकता बनाए रखने में संतों का अहम योगदान

हरिद्वार, संवाददाता। ब्रह्मराष्ट्र एकम की ओर से सप्तऋषि क्षेत्र स्थित अद्भुत मंदिर में राष्ट्रीय सनातन अधिवेशन का आयोजन किया गया। अधिवेशन में शिक्षा व्यवस्था के उन्नयन, युवाओं में नशे की प्रवृति पर रोक लगाने, पाश्चात्य संस्कृति की बोलचाल भाषा को रोकना, ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली के अनुपालन को भारतीय संस्कृति के अनुसार लाना, भारत को हिन्दू महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के महाभियान आदि पर वक्ताओं ने विचार रखे।

अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ ने कहा कि संत महापुरुषों ने हमेशा ही देश की एकता-अखण्डता बनाए रखने में अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि आज सनातन परंपराओं और धर्म शास्त्रों पर अनर्गल टिप्पणी कर सनातन धर्म पर कुठाराघात किया जा रहा है, जिसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। युवा वर्ग को नशे व पाश्चात्य संस्कृति से दूर रहकर सनातन धर्म-संस्कृति और परंपराओं को अपनाते हुए धर्म रक्षा के लिए आगे आना चाहिए। एकजुट होकर सनातन धर्म की रक्षा की जा सकती है।

इस अवसर पर डा. सचिन सनातनी, विशिष्ट अतिथि कुंवर राजेंद्र नरूका, कवि गजेंद्र सोलंकी, गंगा सभा के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप झा, महामंडलेश्वर ज्योतिर्मयी आनंद, संचालक आचार्य आनंद बल्लभ पांडेय, सुनील शास्त्री, सतीश चंद्र मिश्र, रविंद्रनाथ मिश्र, राजेंद्र शर्मा, पावन, उपेंद्रनाथ, संतोष कश्यप, अखिलेश रावत, दीनदयाल मिश्र, अभिषेक शुक्ल, बलराम मिश्र आदि ने भी विचार रखे।

9435216657, 9935504660, 8601720961 brekamofficial@gmail.com www.bramharashtraekam.org

भाग(1)

22 मार्च 2023

ब्रह्मराष्ट्र एकम~ के ओर से मनाया गया हिन्दू नववर्ष

भाग(1)

22 मार्च 2023

ब्रह्मराष्ट्र एकम~ के ओर से मनाया गया हिन्दू नववर्ष

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

।। सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् ।।

ब्रह्मराष्ट्र एकम~ के ओर से मनाया गया हिन्दू नववर्ष

ब्रह्मराष्ट्र एकम ने मनाया हिन्दू नववर्ष

वाराणसी। ब्रह्मराष्ट्र एकम की ओर इस वर्ष पौराणिक परंपराओं व धरोहर को समेटते हुए सभी संप्रदाय/जाति व वर्गों को जोड़ते हुए पारंपरिक रूप से हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2080 मनाया गया। जिसमे सभी वर्ग के लोगों द्वारा डुमराव बाग से अस्सी घाट तक सांयकाल 4 बजे से ध्वज यात्रा निकाली गई। जिसमें कवि गजेंद्र सोलंकी, डॉ सुरेश अवस्थी, गौरी मिश्रा, सूरज मणि त्रिपाठी, कविता तिवारी, गौरव चौहान, साक्षी तिवार, अशोक अज्ञान ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किय। इस दौरान प्रिया मिश्रा, डॉ सचिन मिश्र, प्रियास सालोन, सतीश चंद्र मिश्रा, दिवाकर द्विवेदी, रवींद्रनाथ मिश्र, शिवदत्त द्विवेदी, धीरेंद्र पांडेय, श्रवण मिश्र के अलावा विभिन्न संगठनों के लोग शामिल हुए। इस कार्यक्रम में अंशुल पाठक, राजू राजभर, भानू, संतोष कश्यप, सुजीत अधिकारी, कुशल पाल, राकेश, सूर्यप्रकाश आदि लोग मौजूद रहे।

NEXT CITY FOCUS/ TO

ब्रम्हराष्ट्र एकम ने मनाया हिंदू नववर्ष

ब्रम्हराष्ट्र एकम ने पौराणिक परंपराओं व धरोहर को समेटते हुए सभी संप्रदाय/जाति व वर्गो को जोड़ते हुए पारंपरिक रूप से हिंदू नववर्ष विक्रम संवत् 2080 मनाया गया. जिसने सभी वर्ग के लोगों ने डुमराव बाग से अस्सी घाट तक सायंकाल 4 बजे से ध्वज यात्रा निकाली गई. यात्रा में शामिल सभी महिलाएं लाल साड़ी व पुरुष सफेद वस्त्रों में थे. सायंकाल 5 बजे से सुर काव्य की कड़ी मे सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. संचालन प्रिया मिश्रा व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सचिन मिश्र ने किया. कार्यक्रम के प्रायोजक प्रियास सालोन रहा.

ब्रह्मराष्ट्र एकम की ओर से मनाया गया हिंदू नववर्ष

वाराणसी। ब्रह्मराष्ट्र एकम की ओर इस वर्ष पौराणिक परंपराओं व धरोहर को समेटते हुए सभी संप्रदाय/जाति व वर्गों को जोड़ते हुए पारंपरिक रूप से हिंदू नववर्ष विक्रम संवत २०८० मनाया गया। जिसमे सभी वर्ग के लोगों द्वारा डुमराव बाग से अस्सी घाट तक सांयकाल 4 बजे से ध्वज यात्रा निकाली गई। यात्रा में शामिल सभी महिलाएं लाल साड़ी व पुरुष सफेद वस्त्रों में थें। यात्रा में लगभग सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे। टअअउ वाराणसी द्वारा प्रस्तुत सायंकाल 5 बजे से सुर काव्य की कड़ी में सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मिश्रा बंधु गायक प्रयागराज ने अपने भजन व गीतों से लोगो का मन मोह लिया वहीं सायंकाल 6:30 मां गंगा की आरती कर पुनः कवियों द्वारा काव्य शुरूआत हुई जिसमें प्रख्यात कवि गजेंद्र सोलंकी दिल्ली डॉ सुरेश अवस्थी कानपुर गौरी मिश्रा नैनीताल सूरज मणि त्रिपाठी सुश्री कविता तिवारी गौरव चौहान इटावा साक्षी तिवारी आदि रहे लखनऊ अशोक अज्ञान बनारस से कवि गण मौजूद रहे अपने कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया इस कार्यक्रम का मंच संचालन प्रिया मिश्रा ने किया।

अस्सी घाट पर काव्य संध्या आयोजित कर ब्रह्मराष्ट्र एकम और गंगा सेवा समिति ने धूमधाम से किया नव संवत्सर का स्वागत

विशेष रिपोर्ट पंकज कुमार मिश्रा

सह संपादक राष्ट्रीय स्वाभ वाराणसी ब्यूरो। सनातन धर्म में हिंदू नव वर्ष की शुरुआत चैत्र मास से होती है। यह समय काल हिंदुस्तान में धर्म और पर्व का समय माना जाता है। गुड़ीपर्व और शुक्ल पक्ष में नवरात्रि के आगमन के साथ ही हिंदुओं का नव संवत्सर प्रारंभ हो जाता है। इस बार का नव संवत्सर 2080 को भारतवर्ष में बड़े धूमधाम से मनाया गया। वाराणसी को धर्म नगरी कहा जाता है जहां आदिमाता जीवनदायिनी गंगा और बाबा विश्वनाथ का पावन धाम है और इसी धर्मनगरी में सनातन संस्कृति का सबसे बड़ा संगठन ब्रह्मराष्ट्र एकम धर्म ध्वजा लहरा रहा। इस बार नव हिंदू वर्ष का स्वागत पौराणिक परंपराओं व धरोहर को समेटते हुए व सभी संप्रदाय/जाति को जोड़ते हुए नवसंवत्सर उत्सव समिति (वाराणसी) के बैनर तले ब्रह्मराष्ट्र एकम ने पारम्परिक रूप से हिंदू नववर्ष मनाने हेतु अस्सी घाट पर 22 मार्च को शाम 4 बजे से कार्यक्रम आयोजित किया। उक्त कार्यक्रम के अवसर पर काव्य संध्या और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। समस्त सनातन परिवार व मित्रों का स्वागत अभिनंदन किया गया साथ ही अस्सी घाट तक एक सनातन ध्वज यात्रा निकाला गया। काशीवासीयों का आदरपूर्वक नव संवत्सर उत्सव समिति यात्रा में एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी सराहनीय रही। गौरव चौहान, गौरी मिश्र जैसे कई अंतराष्ट्रीय कवियों और गायको की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। कार्यक्रम की शुरुआत सूर्य संवेदना पुष्पेस, दीप्ति कारण्यम्। नेत्राक्षा शुभम् नववर्ष अस्मिन् कुर्यात्सर्वस्य मंगलम्।। के मंत्र पाठ से उच्च स्वर में हुआ। जय श्री राम के नारों से गूंज उठा अस्सी घाट फिर लाजवाब गंगा आरती के बाद विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का आयोजन ब्रह्म राष्ट्र एकम के सतीश चन्द्र मिश्र, रविंद्र मिश्र, डॉ सचिन मिश्र श्रीमती प्रिया मिश्र एवं समस्त सनातनी भाईयों के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ। ब्रह्म राष्ट्र एकम के मीडिया प्रकोष्ठ अध्यक्ष पंकज कुमार मिश्रा की नवसंवत्सर उत्सव समिति वाराणसी ने यह जानकारी देते हुए कहा कि सनातन संस्कृति को आगे ले जाने हेतु ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे है। इस बार यह कार्यक्रम दिनांक 22 मार्च 2023 डुमराव बाग कॉलोनी से अस्सी घाट तक ध्वज यात्रा के माध्यम से धूमधाम से मनाया जा रहा। और सांस्कृतिक कार्यक्रम अस्सी घाट पर गंगा सेवा समिति के आरती स्थल पर आयोजित हुआ।

ब्रह्मराष्ट्र एकम की ओर से मनाया गया हिंदू नववर्ष

-सभी संप्रदाय के वरिष्ठ पदाधिकारियों व लोगो को जोड़ निकाली गई ध्वजयात्रा

राजेश सेठ - वाराणसी 22 मार्च। ब्रह्मराष्ट्र एकम ,की ओर इस वर्ष पौराणिक परंपराओं व धरोहर को समेटते हुए सभी संप्रदाय/जाति व वर्गों को जोड़ते हुए पारंपरिक रूप से हिंदू नववर्ष विक्रम संवत २०८० मनाया गया। जिसमे सभी वर्ग के लोगों द्वारा डुमराव बाग से अस्सी घाट तक सांयकाल 4 बजे से ध्वज यात्रा निकाली गई। यात्रा में शामिल सभी महिलाएं लाल साड़ी व पुरुष सफेद वस्त्रों में थें। यात्रा में लगभग सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे। टअअउ वाराणसी द्वारा प्रस्तुत सांयकाल 5 बजे से सुर काव्य की कड़ी में सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मिश्रा बंधु (गायक, प्रयागराज) ने अपने भजन व गीतों से लोगो का मन मोह लिया वहीं सांयकाल 6:33 मां गंगा की आरती कर पुनः कवियों द्वारा काव्य शुरुआत हुई जिसमें प्रख्यात कवि श्री गजेंद्र सोलंकी (दिल्ली), डॉ सुरेश अवस्थी (कानपुर), गौरी मिश्रा (नैनीताल), श्री सूरज मणि त्रिपाठी, सुश्रीकविता तिवारी, श्री गौरव चौहान (इटावा), साक्षी तिवारी (लखनऊ), श्री अशोक अज्ञान (बनारस) से कवि गण मौजूद रहे अपने कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया इस कार्यक्रम का मंच संचालन प्रिया मिश्रा ने किया धन्यवाद ज्ञापन डॉ सचिन मिश्र ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक श्रीप्रियास सालोन व स्ट्रैंथ अप जिम रहा। कार्यक्रम आयोजन के पश्चात भक्तों व श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरण किया गया। ब्रह्मराष्ट्र एकम से सतीश चंद्र मिश्रा, श्री दिवाकर द्विवेदी, रवींद्रनाथ मिश्र, शिवदत्त द्विवेदी, धीरेंद्र पांडेय, श्री श्रवण मिश्र जी मुख्य रहें। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में गंगा सेवा समिति, व्यापार मंडल वाराणसी, काशी किराना व्यापार मंडल, गोला दीनानाथ, खत्री हितकारिणी सभा, कायस्थ समाज, सिंधी समाज, स्वर्णकार समाज, ब्राह्मण विकास समिति, केंद्रीय ब्राह्मण महासभा, दुर्गाकुंड जन समिति, इस्कॉन मंदिर, दिव्यांग प्रोजेक्ट, नशा मुक्त भारत, रोटरी क्लब वाराणसी उदय, उ०प्र० ऑटो रिक्शा चालक यूनियन, काशियाना फाउंडेशन, सीपीसी पावर इंडिया प्रा० लि० टअअउ वाराणसी, स्ट्रैंथ अप जिम, श्रीप्रियास सालोन संस्थाओं की मुख्य भूमिका रही। इस कार्यक्रम में अंशुल पाठक, राजू राजभर, भानू, संतोष कश्यप, सुजीत अधिकारी, कुशल पाल, राकेश, सूर्यप्रकाश, आदि लोग मौजूद रहे।

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

॥ सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् ॥

जिला प्रशासन एवं ब्रम्हराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में जानकी घाट पे 25 सदस्यो के साथ मनाया 8 वां योग दिवस |

जानकी घाट पे 25 सदस्यों के साथ मनाया गया 8 वां योग दिवस

वाराणसी (रणभेरी)। हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। दुनिया के तमाम देश योग के महत्व को समझते हुए योग दिवस को मनाते हैं। योग का अभ्यास शरीर और मस्तिष्क की सेहत के लिए फायदेमंद है। योग शरीर को रोगमुक्त रखता है और मन को शांति भी देता है। भारत में ऋषि मुनियों के दौर से योग होता आ रहा है।

योग भारतीय संस्कृति से जुड़ा है, जो अब विदेशों में भी फैल गया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त महासभा में दुनियाभर में योग दिवस मनाने का आह्वान किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्वीकार कर

लिया। महज तीन महीने के अंदर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन का ऐलान कर दिया गया। तत्पश्चात 21 जून 2015 में पहली बार विश्व योग दिवस दुनिया भर में मनाया गया। जिसका नेतृत्व भारत ने किया था। 35 हजार से अधिक लोगो ने दिल्ली के राजपथ पर योगासन किया था। आज विश्व भर में लोग स्वस्थ रहने के लिए योगाभ्यास कर रहे हैं। योग का महत्व कोरोना काल में और अधिक बढ़ गया था। जब कोविड लॉकडाउन के दौरान लोग घरों से बाहर नहीं निकल सकते थे। जिम बंद हो गए थे तब लोगों ने मन को शांत रखने और शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए घर पर ही योगाभ्यास किया।

आज 8 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में जिला प्रशासन और *ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में 25 सदस्यों के साथ जानकी घाट पे योगासन किया गया। जिसमें जिला प्रशासन की तरफ से नियुक्त किये गए निखिल गुप्ता , सदधाम हुसैन , योगा इंस्ट्रक्टर नेहा चौधरी , ज्योति मिश्रा जी ने ब्रह्मराष्ट्र एकम के समस्त पदाधिकारियों को योगासन कराया। योगासन की शुरुआत मंत्रोच्चार के साथ हुई। ब्रह्मराष्ट्र एकम के संस्थापक सचिन मिश्र जी के नेतृत्व में नारी शक्ति अध्यक्ष प्रिया मिश्रा , डॉ सुधीर मिश्र , धीरेंद्र पांडेय , सुजीत अधिकारी , रजनी जायसवाल , संतोष कश्यप ,नृपेंद्र मिश्र ,कुशाग्र मिश्र , प्रभात , सूर्यप्रकाश , कुशल, आकाश बिंद , भानु श्रीवास्तव , राकेश गुप्ता आदि लोग उपस्थित रहें।

जिला प्रशासन एवं ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में जानकी घाट पे 25 सदस्यों के साथ मनाया गया 8 वां योग दिवस

बनारस। हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। दुनिया के तमाम देश योग के महत्व को समझते हुए योग दिवस को मनाते हैं। योग का अभ्यास शरीर और मस्तिष्क की सेहत के लिए फायदेमंद है। योग शरीर को रोगमुक्त रखता है और मन को शांति भी देता है। भारत में ऋषि मुनियों के दौर से योग होता आ रहा है। योग भारतीय संस्कृति से जुड़ा है, जो अब विदेशों में भी फैल गया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त महासभा में दुनियाभर में योग दिवस मनाने का आह्वान किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्वीकार कर लिया। महज तीन महीने के अंदर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन का ऐलान कर दिया गया। तत्पश्चात 21 जून 2015 में पहली बार विश्व योग दिवस दुनिया भर में मनाया गया। जिसका नेतृत्व भारत ने किया था। 35 हजार से अधिक लोगो ने दिल्ली के राजपथ पर योगासन किया था। आज विश्व भर में लोग स्वस्थ रहने के लिए योगाभ्यास कर रहे हैं। योग का महत्व कोरोना काल में और अधिक बढ़ गया था। जब कोविड लॉकडाउन के दौरान लोग घरों से बाहर नहीं निकल सकते थे। जिम बंद हो गए थे तब लोगों ने मन को शांत रखने और शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए घर पर ही योगाभ्यास किया। आज 8 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में जिला प्रशासन और ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में 25 सदस्यों के साथ जानकी घाट पे योगासन किया गया। जिसमें जिला प्रशासन की तरफ से नियुक्त किये गए निखिल गुप्ता , सदधाम हुसैन , योगा इंस्ट्रक्टर नेहा चौधरी , ज्योति मिश्रा जी ने ब्रह्मराष्ट्र एकम के समस्त पदाधिकारियों को योगासन कराया। योगासन की शुरुआत मंत्रोच्चार के साथ हुई। ब्रह्मराष्ट्र एकम के संस्थापक सचिन मिश्र जी के नेतृत्व में नारी शक्ति अध्यक्ष प्रिया मिश्रा , डॉ सुधीर मिश्र , धीरेंद्र पांडेय , सुजीत अधिकारी , रजनी जायसवाल , संतोष कश्यप , नृपेंद्र मिश्र , कुशाग्र मिश्र , प्रभात , सूर्यप्रकाश , कुशल, आकाश बिंद , भानु श्रीवास्तव , राकेश गुप्ता आदि लोग उपस्थित रहें।

जिला प्रशासन एवं ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में जानकी घाट पर मनाया गया 8 वां योग दिवस

जिला प्रशासन एवं ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में जानकी घाट पे 25 सदस्यों के साथ मनाया गया 8 वां योग दिवस

परफेक्ट मिशन / वाराणसी

हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। दुनिया के तमाम देश योग के महत्व को समझते हुए योग दिवस को मनाते हैं। योग का अभ्यास शरीर और मस्तिष्क की सेहत के लिए फायदेमंद है। योग शरीर को रोगमुक्त रखता है और मन को शांति भी देता है। भारत में ऋषि मुनियों के दौर से योग होता आ रहा है। योग भारतीय संस्कृति से जुड़ा है, जो अब विदेशों में भी फैल गया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त महासभा में दुनियाभर में योग दिवस मनाने का आह्वान किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्वीकार कर लिया। महज तीन महीने के अंदर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन का ऐलान कर दिया गया। तत्पश्चात 21 जून 2015 में पहली बार विश्व योग दिवस दुनिया भर में मनाया गया।

मंगलवार को 8 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में जिला प्रशासन और ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में 25 सदस्यों के साथ जानकी घाट पे योगासन किया गया। जिसमें जिला प्रशासन की तरफ से नियुक्त किये गए निखिल गुप्ता, सदधाम हुसैन, योगा इंस्ट्रक्टर नेहा चौधरी, ज्योति मिश्रा ने ब्रह्मराष्ट्र एकम के समस्त पदाधिकारियों को योगासन कराया। योगासन की शुरुआत मंत्रोच्चार के साथ हुई।

ब्रह्मराष्ट्र एकम के संस्थापक सचिन मिश्र जी के नेतृत्व में नारी शक्ति अध्यक्ष प्रिया मिश्र, डॉ सुधीर मिश्र, धीरेंद्र पांडेय, सुजीत अधिकारी, रजनी जायसवाल, संतोष कश्यप, नृपेंद्र मिश्र, कुशाग्र मिश्र, प्रभात, सूर्यप्रकाश, कुशल, आकाश बिंद, भानु श्रीवास्तव, राकेश गुप्ता आदि लोग उपस्थित रहें।

जानकी घाट पर 8वां योग दिवस

जिला प्रशासन और ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में 25 सदस्यों के साथ जानकी घाट पर योगासन किया गया. इसमें निखिल गुप्ता, योगा इंस्ट्रक्टर नेहा चौधरी, ज्योति मिश्रा समेत ब्रह्मराष्ट्र एकम के संस्थापक सचिन मिश्र के नेतृत्व में नारी शक्ति अध्यक्ष प्रिया मिश्रा, डॉ सुधीर मिश्र, धीरेंद्र पांडेय, सुजीत अधिकारी, रजनी जायसवाल, संतोष कश्यप, नृपेंद्र मिश्र, कुशाग्र मिश्र, प्रभात, सूर्यप्रकाश, कुशल, आकाश बिंद, भानु श्रीवास्तव, राकेश गुप्ता आदि लोग उपस्थित रहे.

छात्राओं ने किया योग

आशीर्वाद एंड पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट में योगा डे पर स्मृति सिंह ने मेडिकल की छात्राओं को योग कराकर आसनों की जानकारी दी. इस दौरान प्रबंधक डॉ शलभ गुप्ता, डॉ कादेरी गुप्ता, डॉ समीर गुप्ता समेत कई उपस्थित रहे.

एपेक्स योगा में 28 स्टेट

एपेक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल एंड

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

॥ सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् ॥

छठ पूजा के पावन त्यौहार में ब्रह्मराष्ट्र एकम~ ने किया छट पूजा पे दूध वितरण

ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में छठ महापर्व पर किया गया भव्य आयोजन

परफेक्ट मिशन

वाराणसी। जैसा कि व्याप्त है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम सनातन धर्म को बढ़ावा देने वाली संस्था है। इसके संस्थापक सचिन सनातनी, जिनके द्वारा पिछले 18 वर्षों से इस संस्था के सहारे तमाम ऐसे धार्मिक कार्य करते आये हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं जिनका कोई ओर छोर नही। हर बार की तरह ही इस बार भी उन्होंने छठ महापर्व पर काली के अस्सी से लेकर वरुणा ब्रिज के शास्त्री घाट तक व्रतियों को भगवान भास्कर के अर्घ्य हेतु निःशुल्क दूध वितरण किया।

साथ ही घाटों पे पूजन हेतु अन्य सामग्रियों की भी व्यवस्था करवाई। छठ महापर्व अपने आप मे एक अनुभूति है एहसास है प्रकृति से मनुष्य को जोड़ने का, जिसमे कोई मूर्ति या तस्वीर नही केवल मनुष्य से प्रकृति का साक्षात्कार है। इसके अलावा गाय घाट, मणिकर्णिका घाट, सूर्यसरोवर पर भी इन्होंने छठ पूजन करने वाली व्रतियों को दूध वितरण किया। इस खास मौके पर संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, कुशाग्र मिश्र, अनिल सिंह, सुधा सिंह, श्रवण मिश्र, सूर्य प्रकाश, कमलेश शुक्ल, भानू प्रताप, राकेश गुप्ता, राजू राजभर, ग्रिजेश, अजय सिंह, किसन सेठ, युगल किशोर, विश्वजीत सिंह इत्यादि लोगों का सहयोग रहें।

ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में छठ महापर्व पर किया गया भव्य आयोजन

आज का प्रहरी

जैसा कि व्याप्त है कि ब्रह्मराष्ट्र एकम सनातन धर्म को बढ़ावा देने वाली संस्था है। इसके संस्थापक सचिन सनातनी, जिनके द्वारा पिछले १८ वर्षों से इस संस्था के सहारे तमाम ऐसे धार्मिक कार्य करते आये हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं जिनका कोई ओर छोर नही। हर बार की तरह ही इस बार भी उन्होंने छठ महापर्व पर काशी (वाराणसी) के अस्सी से लेकर वरुणा ब्रिज के शास्त्री घाट तक व्रतियों को भगवान भास्कर के अर्घ्य हेतु निःशुल्क दूध वितरण किया। साथ ही घाटों पे पूजन हेतु अन्य सामग्रियों की भी व्यवस्था करवाई। छठ महापर्व अपने आप मे एक अनुभूति है एहसास है प्रकृति से मनुष्य को जोड़ने का, जिसमे कोई मूर्ति या तस्वीर नही केवल मनुष्य से प्रकृति का साक्षात्कार है। इसके अलावा गाय घाट, मणिकर्णिका घाट, सूर्यसरोवर (BLW), पर भी इन्होंने छठ पूजन करने वाली व्रतियों को दूध वितरण किया। इस खास मौके पर संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, कुशाग्र मिश्र, अनिल सिंह, सुधा सिंह, श्रवण मिश्र, सूर्य प्रकाश, कमलेश शुक्ल, भानू प्रताप, राकेश गुप्ता, राजू राजभर, ग्रिजेश, अजय सिंह, किसन सेठ, युगल किशोर, विश्वजीत सिंह इत्यादि लोगों का सहयोग रहें।

सचिन सनातनी

ब्रह्मराष्ट्र एकम के संयुक्त तत्वावधान में छठ महापर्व पर किया गया भव्य आयोजन

स्वतंत्र चेतना

वाराणसी। ब्रह्मराष्ट्र एकम सनातन धर्म को बढ़ावा देने वाली संस्था है। इसके संस्थापक सचिन सनातनी ए जिनके द्वारा पिछले 18 वर्षों से इस संस्था के सहारे तमाम ऐसे धार्मिक कार्य करते आये हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं जिनका कोई ओर छोर नही। हर बार की तरह ही इस बार भी उन्होंने छठ महापर्व पर काशी वाराणसी के अस्सी से लेकर वरुणा ब्रिज के शास्त्री घाट तक व्रतियों को भगवान भास्कर के अर्घ्य हेतु निःशुल्क दूध वितरण किया। साथ ही घाटों पे पूजन हेतु अन्य सामग्रियों की भी व्यवस्था करवाई।

छठ महापर्व अपने आप मे एक अनुभूति है एहसास है प्रकृति से मनुष्य को जोड़ने का जिसमे कोई मूर्ति या तस्वीर नही केवल मनुष्य से प्रकृति का साक्षात्कार है। इसके अलावा गाय घाट, मणिकर्णिका घाट ए सूर्यसरोवर पर भी इन्होंने छठ पूजन करने वाली व्रतियों को दूध वितरण किया। इस खास मौके पर संतोष कश्यप, अंशुल पाठक, कुशाग्र मिश्र, अनिल सिंह, सुधा सिंह, श्रवण मिश्र, सूर्य प्रकाश, कमलेश शुक्ल, भानू प्रताप, राकेश गुप्ता, राजू राजभर, ग्रिजेश, अजय सिंह, किसन सेठ, युगल किशोर, विश्वजीत सिंह इत्यादि लोगों का सहयोग रहें।

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥

ब्रह्मराष्ट्र एकम्

।। सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् ।।

महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश

गुरुवार 27 अक्टूबर 2022 4

मे तेजी,
ज बारोट

अपनी जान तक गवाते
पा प्रशासन इसी प्रकार
भी अवैध निमार्तांओं पर
वाई क्यु नही करती?
घटना से संबंधित लोगो
नरवाई क्यूँ करती है?
कहना है की, यदि मनपा
को सही मे नागरीको
की चिंता है तो, मनपा
ालुका की सर्वसामान्य
जवाब दे की,क्षेत्र मे
अवैध निर्माण कर अरबो
ए का टैक्स डकारकर,
वार के साथ धोखागडी
व नागरीको की जिंदगी
वाड करनेवाले अवैध
ताओं पर ऐसी कारवाई
ी जाती? मनपा क्षेत्र के
1 निमार्ताओ को चिन्हित
ुनाह दाखिल करने की
शुरू की जाएगी? ऐसी
ा नेता द्वारा की गयी है।

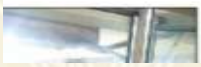

ेया भी

जौनपुर के गाँव की लड़की का योग शिक्षक बनने का सपना पूरा करने के लिए आगे आये श्री सचिन मिश्रा / सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड

■ आज का प्रहरी

वाराणसी / जौनपुर, 26 अक्टूबर 2022- उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की केराकत तहसील के अंतर्गत ग्राम - सरौनी पूरब पट्टी की रहने वाली दीक्षा चौबे की बचपन से ही योग में रूचि थी और कठिन आसनों को भी सरलता से करते देख कर सभी लोग अचंभित हो जाते थे. दीक्षा की भी तीव्र इच्छा थी कि वह योग शिक्षक बनें. काफी मेहनत के बाद दीक्षा चौबे को देश के सबसे प्रसिद्ध योग संस्थानों में से एक, कैवल्यधाम योग संस्थान (लोनावला, महाराष्ट्र) में 'योग शिक्षण में पी.जी. डिप्लोमा' - P.G. Diploma in Yoga Education में प्रवेश तो मिल गया मगर सबसे बड़ी समस्या पैसों की थी. फीस, कापी-किताब और हास्टल के साथ ही अन्य व्यय मिलाकर लगभग 2 लाख रुपए की जरुरत थी. एक साथ इतनी बड़ी धनराशि का इंतजाम होना मुश्किल दिख रहा था और प्रतिभाशाली दीक्षा के सपने चकनाचूर होते दिख

रहे थे. इसी बीच इस प्रकरण की जानकारी, मेडिकल वेस्ट प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी, सी.पी. सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, वाराणसी के संस्थापक और प्रबंध निदेशक श्री सचिन मिश्रा को मिली जिन्होंने इसके पूर्व भी कई गरीब परिवारों को सम्हालने का सराहनीय कार्य किया था। इसके बाद श्री सचिन मिश्रा ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का परिचय देते हुए, खुद ही उक्त लड़की के घर पहुँचने का फैसला लिया और उससे मिलकर बातचीत की, श्री सचिन मिश्रा उसकी प्रतिभा और लगन से इतना अधिक प्रभावित हुए कि दीक्षा की पूरी पढ़ाई का खर्च उठाने का प्रस्ताव दिया जिसे दीक्षा और उसके माता-पिता ने सहर्ष स्वीकार कर लिया. तत्काल ही सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, वाराणसी के प्रबंध निदेशक श्री सचिन मिश्रा ने दीक्षा चौबे के बैंक खाते में पूरी धनराशि ट्रांसफर कर दी और इसके बाद का दृश्य बहुत ही भावुक कर देने वाला था। दीक्षा और उसके परिजनों की आँखों से खुशी के आंसू निकल रहे थे जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे. अब दीक्षा पढ़ेगी और कोर्स पूरा करने के बाद योग शिक्षिका बनेगी और इसका पूरा श्रेय जाता है- सी.पी. सी. के श्री सचिन मिश्रा जी जी की ब्रह्मराष्ट्र एकम, रोटरी क्लब सहित अन्य कई सामाजिक संगठनों में बड़ी सक्रियता से लगे रहते है साथ में उनके द्वारा कई ऐसे अनेक लोगों के कल्याण में वे सहायक बने है जैसे आज दीक्षा के घर का दीपक बनने का अमूल्य योगदान दिया।

सार-समाचार

मूर्ति स्थापना को लेकर दो पक्षों में मारपीट

■ आज का प्रहरी

मुंडेरा बाजार कस्बे के दिव्य नगर वार्ड संख्या 11 में मंगलवार की रात में दो पक्षों के बीच लक्ष्मी प्रतिमा की स्थापना को लेकर जमकर बवाल हुआ। इस दौरान ईंट-पत्थर भी चले। चौरीचौरा पुलिस ने बुधवार को आठ लोगों को सीआरपीसी की धारा 151, 107, 116 में चालान किया। बाद में आरोपितों को उप जिला मजिस्ट्रेट चौरीचौरा ने जमानत पर रिहा कर दिया। दिव्य नगर में चन्द्रशेखर गुप्ता व विक्कू बरनवाल के बीच रात में 11 बजे लक्ष्मी प्रतिमा की स्थापना को लेकर विवाद हुआ। बाद में विवाद इतना बढ़ गया कि दोनो पक्षों ने बीच खूब लाठी-डंडा चला। इस दौरान पथराव भी हुआ। सब

वाराणसी जौनपुर के गाँव की लड़की का योग शिक्षक बनने का सपना पूरा करने के लिए आगे आये सचिन मिश्रा / सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड ||

(वाराणसी ब्यूरो सन्तोष कुमार सिंह) जौनपुर :- उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की केराकत तहसील के अंतर्गत ग्राम - सरौनी पूरब पट्टी की रहने वाली दीक्षा चौबे की बचपन से ही योग में रूचि थी और कठिन आसनों को भी सरलता से करते देख कर सभी लोग अचंभित हो जाते थे. दीक्षा की भी तीव्र इच्छा थी कि वह योग शिक्षक बनें | काफी मेहनत के बाद दीक्षा चौबे को देश के सबसे प्रसिद्ध योग संस्थानों में से एक, कैवल्यधाम योग संस्थान (लोनावला, महाराष्ट्र) में 'योग शिक्षण में पी.जी. डिप्लोमा' - P.G. Diploma in Yoga Education में प्रवेश तो मिल गया मगर सबसे बड़ी समस्या पैसों की थी. फीस, कापी-किताब और हास्टल के साथ ही अन्य व्यय मिलाकर लगभग 2 लाख रूपये की ज़रुरत थी एक साथ इतनी बड़ी धनराशि का इंतजाम होना मुश्किल दिख रहा था और प्रतिभाशाली दीक्षा के सपने चकनाचूर होते दिख रहे थे | इसी बीच इस प्रकरण की जानकारी मेडिकल वेस्ट प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी, सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड वाराणसी के संस्थापक और प्रबंध निदेशक सचिन मिश्रा को मिली जिन्होंने इसके पूर्व भी कई गरीब परिवारों को सम्हालने का सराहनीय कार्य किया था | इसके बाद सचिन मिश्रा ने अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी का परिचय देते हुए, खुद ही उक्त लड़की के घर पहुँचने का फैसला लिया और उससे मिलकर बातचीत की, श्री सचिन मिश्रा उसकी प्रतिभा और लगन से इतना अधिक प्रभावित हुए कि दीक्षा की पूरी पढ़ाई का खर्च उठाने का प्रस्ताव दिया जिसे दीक्षा और उसके माता-पिता ने सहर्ष स्वीकार कर लिया | तत्काल ही सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, वाराणसी के प्रबंध निदेशक श्री सचिन मिश्रा ने दीक्षा चौबे के बैंक खाते में पूरी धनराशि ट्रांसफर कर दी और इसके बाद का दृश्य बहुत ही भावुक कर देने वाला था। दीक्षा और उसके परिजनों की आँखों से खुशी के आंसू निकल रहे थे जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे | अब दीक्षा पढ़ेगी और कोर्स पूरा करने के बाद योग शिक्षिका बनेगी और इसका पूरा श्रेय जाता है सी.पी.सी. के श्री सचिन मिश्रा जी जो की ब्रह्माराष्ट्र एकम, रोटरी क्लब सहित अन्य कई सामाजिक संगठनों में बड़ी सक्रियता से लगे रहते है साथ में उनके द्वारा कई ऐसे अनेक लोगों के कल्याण में वे सहायक बने है जैसे आज दीक्षा के घर का दीपक बनने का अमूल्य योगदान दिया ||

---

asi

iNEXT CITY FOCUS

i CITY BRIEFS

सचिन ने फीस देने का जिम्मा उठाया

VARANASI:योग शिक्षक बनने के लिए दीक्षा चौबे को एक नामी शिक्षण संस्थान में प्रवेश का मौका मिला, लेकिन आर्थिक दिक्कत की वजह से वह दाखिल नही ले पा रही थी. इसकी जानकारी होने पर सीपीसी पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक सचिन मिश्रा ने मदद का हाथ बढ़ाया. उन्होंने दीक्षा चौबे की पूरी फीस की धनराशि करीब दो लाख रुपये उसके बैंक खाते में ट्रांसफर कर दी.

स्वतंत्र चेतना

www.swatantrachetnanews.com

लड़की का योग शिक्षक बनने का सपना पूरा करने के लिए आगे आए सचिन मिश्रा

स्वतंत्र चेतना

वाराणसी/जौनपुर। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की केराकत तहसील के अंतर्गत ग्राम सरौनी पूरब पट्टी की रहने वाली दीक्षा चौबे की बचपन से ही योग में रुचि थी और कठिन आसनों को भी सरलता से करते देख कर सभी लोग अचंभित हो जाते थे,दीक्षा की भी तीव्र इच्छा थी कि वह योग शिक्षक बनें। काफी मेहनत के बाद दीक्षा चौबे को देश के सबसे प्रसिद्ध योग संस्थानों में से एक कैवल्यधाम योग संस्थान लोनावला, महाराष्ट्र में योग शिक्षण में पीजी डिप्लोमा पीजी डिप्लोमा इन योगा एजुकेशन में प्रवेश तो मिल गया मगर सबसे बड़ी समस्या पैसों की थी। फीस, कापी,किताब और हास्टल के साथ ही अन्य व्यय मिलाकर लगभग २ लाख रुपये की जरूरत थी। एक साथ इतनी बड़ी धनराशि का इंतजाम होना मुश्किल दिख रहा था और प्रतिभाशाली दीक्षा

के सपने चकनाचूर होते दिख रहे थे। इसी बीच इस प्रकरण की जानकारी, मेडिकल वेस्ट प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी, सीपीसी पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, वाराणसी के संस्थापक और प्रबंध निदेशक सचिन मिश्रा को मिली जिन्होंने इसके पूर्व भी कई गरीब परिवारों को सम्हालने का सराहनीय कार्य किया था। इसके बाद सचिन मिश्रा ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का परिचय देते हुए खुद ही उक्त लड़की के घर पहुँचने का फैसला लिया और उससे मिलकर बातचीत की, सचिन मिश्रा उसकी प्रतिभा और लगन से इतना अधिक प्रभावित हुए कि दीक्षा की पूरी पढ़ाई का खर्च उठाने का प्रस्ताव दिया जिसे दीक्षा और उसके माता-पिता ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। तत्काल ही सीपीसीपावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, वाराणसी के प्रबंध निदेशक सचिन मिश्रा ने दीक्षा चौबे के बैंक खाते में पूरी धनराशि ट्रांसफर कर दी और इसके बाद का दृश्य बहुत ही भावुक कर देने वाला था। दीक्षा और उसके परिजनों की आँखों से खुशी के आंसू निकल रहे थे जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। अब दीक्षा पढ़ेगी और कोर्स पूरा करने के बाद योग शिक्षिका बनेगी और इसका पूरा श्रेय जाता है। सीपीसी के सचिन मिश्रा जी जो की ब्रह्मराष्ट्र एकम, रोटरी क्लब सहित अन्य कई सामाजिक संगठनों में बड़ी सक्रियता से लगे रहते है साथ में उनके द्वारा कई ऐसे अनेक लोगों के कल्याण में वे सहायक बने है जैसे आज दीक्षा के घर का दीपक बनने का अमूल्य योगदान दिया।

दो दिवसीय ब्रह्मराष्ट्र एकम कार्यक्रम राष्ट्रचेतना जागृति का हुआ आयोजन

सनातन धर्म यात्रा का बस्ती में भव्य स्वागत

सनातन धर्म के आदर्शों से युवाओं को परिचित कराना यात्रा का उद्देश्य : सुधा मोदी

सनातन धर्म यात्रा का बस्ती में हुआ भव्य स्वागत

सनातन धर्म यात्रा का बस्ती में भव्य स्वागत

सनातन धर्म यात्रा का शुभारंभ

सनातन धर्म को एक कड़ी में जोड़ेगा ब्रह्मराष्ट्र एकम

धर्म यात्रा ने दिया कई शहरों में सनातन धर्म का संदेश

श्रृंगेरी मठ में हुआ सनातन धर्म यात्रा का समापन

सनातन धर्म यात्रा का भव्य समापन

भारतीयों को एक मंच पर लाएगा ब्रह्मराष्ट्र एकम

वाराणसी। सनातन धर्म के अनुयायियों को जोड़ने की मुहिम के तहत ब्रह्मराष्ट्र एकम का गठन किया गया है। समस्त भारतीयों को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से गुरुवार को गठित की गई। गठनकर्ता डॉ. सचिन मिश्रा एवं डॉ. सुधीर मिश्रा ने बताया कि इसके तहत यात्राएं निकालेंगे।

सनातन धर्म के मूल्यों और आदर्शों से युवाओं को कराना है परिचित

ब्रह्मराष्ट्रएकम कार्यक्रम के पूर्व निकली भव्य शोभायात्रा

परफेक्ट मिशन

वाराणसी। शृंगेरी मठ मे आयोजित ब्रह्मराष्ट्रएकम के कार्यक्रम को भव्यता देने के क्रम मे शुक्रवार को भारत माता मंदिर से शृंगेरी मठ तक शोभायात्रा निकली जिसमे सैकड़ो महिलाओं एवं पुरुषो ने भाग लिया।

शोभायात्रा मे बैंड बाजा, ढोल, ताशा और डीजे व ध्वज के साथ बग्घी घोड़ा रथ के साथ हर हर महादेव एवं ब्रह्मराष्ट्र एकम के नारे संग जुलूस के रूप मे लंबी शोभा यात्रा निकाली गई रास्ते भर लोगों का जबरजस्त समर्थन एवं सहयोग मिला। कार्यक्रम के आयोजक सचिन मिश्र ने शोभायात्रा के समापन अवसर पर सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य राष्ट्र के प्रति लोगों का प्रेम और भाईचारा बढ़ाने के साथ जागरूकता बढ़ाना है और किस तरह हम सभी हिन्दू समाज एकजुट रहकर भारत को विश्व गुरु बनाने मे सहयोग कर सकते हैं। संपूर्ण समाज को जाति पाति से परे रहकर बिना किसी भेदभाव के एक सशक्त राष्ट्र की कल्पना को साकार रूप देना एवं सनातन धर्म की रक्षा करना है। इसी क्रम मे शृंगेरी मठ मे यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसमे स्थानीय लोगों का जमावड़ा होगा। शोभायात्रा मे संस्कार अध्यक्ष दिवाकर महाराज। संचालन अध्यक्ष सतीश मिश्र, प्रधान अध्यक्ष रवींद्र नाथ मिश्र, शृंगेरी मठ के संचालक सुब्बा राव शास्त्री, प्रिया मिश्र, देवेन्द्र नाथ मिश्र, धर्मेंद्र त्रिपाठी, संतोष कश्यप, सुजीत दास समेत सैकड़ों लोग उपस्थित रहें।

नातन धर्म यात्रा 11 से

सी (रणभेरी)। ब्रह्मराष्ट्र द्वारा आयोजित 'सनातन धर्म के विषय में जो कि 11 सितंबर ह 10 बजे श्रृंगेरी मठ से प्रारंभ ये यात्रा विंध्याचल होते हुए ज में स्थानीय कार्यक्रम करेगी वास के बाद अगले दिन 12 को यात्रा प्रतापगढ़, सुल्तानपुर ए अयोध्या प्रस्थान करेगी वहां लला और हनुमानगढ़ी दर्शन के बाद विभिन्न मंचों पर ों को अपने धर्म और संस्कृति र प्रसार में सभी का सहयोग प्राप्त करेगी। ब्रह्मराष्ट्र एकम योजित इस यात्रा कार्यक्रम में जगह स्थानीय लोगो द्वारा अभिनंदन किया जाएगा। म की संपूर्ण जानकारी ट्र एकम के कार्यक्रम एवं न अध्यक्ष सचिन मिश्र ने । संचालन अध्यक्ष पंडित सतीश चंद्र मिश्र ने बताया कि इस सनातन धर्म यात्रा में युवा पीढ़ी को जागरूक कर उन्हें अपनी धर्म, संस्कृति से जोड़ा जाएगा। प्रधान अध्यक्ष रविन्द्र नाथ ने सबको एक साथ एक धर्म जो कि सनातन काल से चली आ रही है में जोड़ने की विनम्र अपील की है। सभी छायाकार और रिपोर्टर को कार्यक्रम के जनसंपर्क अध्यक्ष डॉ सुधीर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित कर उनकी सराहना की। प्रेसवार्ता में किशमिश गुरु, चंचल तिवारी, कुशाग्र मिश्र, अखिलेश रावत, सतीश मिश्र, संतोष कश्यप, अजय, शंकर विजय, भारत मिश्रा, हिमांशु राज आदि उपस्थित रहे।

सनातन धर्म हिन्दुत्व का आधारः मुकुल शर्मा

सनातन धर्म यात्रा के प्रचार-प्रसार हेतु तीन दिवसीय यात्रा 11 सितंबर से

वाराणसी (स्टेट मीडिया) ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित 'सनातन धर्म यात्रा के विषय मे जो कि 11 सितंबर 2021 को सुबह 10:00 बजे श्रृंगेरी मठ से प्रारंभ होगी। ये यात्रा विंध्याचल होते हुए प्रयागराज में स्थानीय कार्यक्रम करेगी रात्रि प्रवास के बाद अगले दिन 12 सितंबर 2021 को यात्रा प्रतापगढ़, सुल्तानपुर होते हुए अयोध्या प्रस्थान करेगी वहाँ पर रामलला और हनुमानगढ़ी दर्शन पूजन के बाद विभिन्न मंचों पर नागरिकों को अपने धर्म और संस्कृति के प्रचार प्रसार में सभी का सहयोग समर्थन प्राप्त करेगी। ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित इस यात्रा कार्यक्रम में जगह जगह स्थानीय लोगों द्वारा स्वागत अभिनंदन किया जाएगा, जिसमे जिला बस्ती होते हुए गोरखपुर में भी कार्यक्रम कर देवरिया देवरहा बाबा आश्रम पहुँचेगी जहाँ पर उनका दर्शन पूजन कर यात्रा कैथी बाबा मार्कण्डेय महादेव धाम पर पहुँचेगी। वहाँ पर भी दर्शन पूजन के पश्चात तीन दिवसीय सनातन धर्म यात्रा का समापन होगा, तत्पश्चात काशी में यात्रा का पूर्ण समापन किया जाएगा। प्रधान अध्यक्ष रविन्द्र नाथ ने सबको एक साथ एक धर्म जो कि सनातन काल से चली आ रही है में जोड़ने की विनम्र अपील की है। इसके अलावा कार्यक्रम एवं आयोजन अध्यक्ष सचिन मिश्र जी ने बताया कि भविष्य में इसी तरह की यात्रा संपूर्ण भारत वर्ष एवं विश्व स्तर पर भी आयोजित की जाएगी।

सनातन धर्म यात्रा का भव्य समापन समारोह संपन्न

धर्म यात्रा ने दिया कई शहरों में सनातन धर्म का संदेश

सनातन धर्म यात्रा का भव्य समापन समारोह संपन्न

सनातन धर्म यात्रा काशी से कल प्रारम्भ

वाराणसी। ब्रहमराष्ट एकम द्वारा आयोजित सनातन धर्म यात्रा ११ सितंबर को सुबह १०:०० बजे प्रारंभ होकर विंध्याचल होते हुए प्रयागराज पहुंचेगी प्रयागराज में एक दिन के बाद यात्रा पुन अयोध्या के लिए प्रारंभ होगा एक दिन प्रवास के बाद अगले दिन १२ सितंबर को यात्रा प्रतापगढ़, सुल्तानपुर होते हुए अयोध्या प्रस्थान करेगी वहां पर रामलला और हनुमानगढ़ी दर्शन पूजन के बाद विभिन्न मंचों पर नागरिकों को अपने धर्म और संस्कृति के प्रचार प्रसार में सभी का सहयोग समर्थन प्राप्त करेगी। ब्रह्मराष्ट्र एकम द्वारा आयोजित इस यात्रा कार्यक्रम में जगह-जगह स्थानीय लोगों द्वारा स्वागत अभिनंदन किया जाएगा। जिसमें जिला बस्ती होते हुए गोरखपुर में भी कार्यक्रम कर देवरिया देवरहा बाबा आश्रम पहुंचेगी वहां पर उनका दर्शन पूजन कर यात्रा कैथी बाबा मारकंडे महादेव धाम पहुंचेगी।

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥

दैनिक संचलन कार्य

- दैनिक गंगा आरती (अस्सी घाट)
- नि: शुल्क भोजन (नर-नारायण सेवा)
- राष्ट्रीय अंतराराष्ट्रीय बौद्धिक अधिवेशन
- रोज़गार/स्वालंबन
- धर्म यात्रा एवं धार्मिक अनुष्ठान

भावी योजनाएँ

- सप्तऋषि गुरुकुल
- श्री शक्ति बालाजी मंदिर
- धेनु गौशाला
- धन्वन्तरि अस्पताल
- षोडश संस्कार आयोजन

हर हर महादेव

सनातन | संस्कृति | सहयोग | समानता | सशक्तिकरण | सद्भावना | समर्पण

अंतरराष्ट्रीय सनातन अधिवेशन

दैनिक गंगा आरती

शक्ति स्वरूपा सम्मान

तिरंगा यात्रा

निवेदक

पं सतीशचन्द्र मिश्र

रविन्द्र नाथ मिश्र

श्री श्री दिवाकर द्विवेदी

डॉ.सचिन सनातनी

ब्रह्मराष्ट्र एकम् परिवार आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता है |

इस संगठन से जुड़ने के लिए संपर्क करें

9919313222, 7380650443, 7309547616, 9919243222 brekamofficial@gmail.com

bramharashtraekam http://bramharashtraekam/ www.bramharashtraekam.org

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

RE USE THINK CYCLE ENERGIZE

CPC POWER

Empowering structure...

CPC POWER INDIA PVT. LTD.

WASTE MANAGEMENT COMPANY

देश को प्लास्टिक रूपी बीमारी से मुक्त बनाने में सहयोग करें और सुरक्षित रहे, स्वस्थ रहें...

प्लास्टिक मुक्त भारत

#PlasticFreeBharat

प्लास्टिक मुक्त बनारस

#PlasticFreeBanaras

Rtn. Dr. Sachin mishra

Environmentalist & Socialist Member of ZRUCC, North Eastern Railway

D 58/12 A 38 Gandhi Nagar Sigra, Varanasi - 221010 ✉ cpcaddmin@gmail.com 🌐 cpcpowerindia.com ✆ 0542-2361022, 7380650446

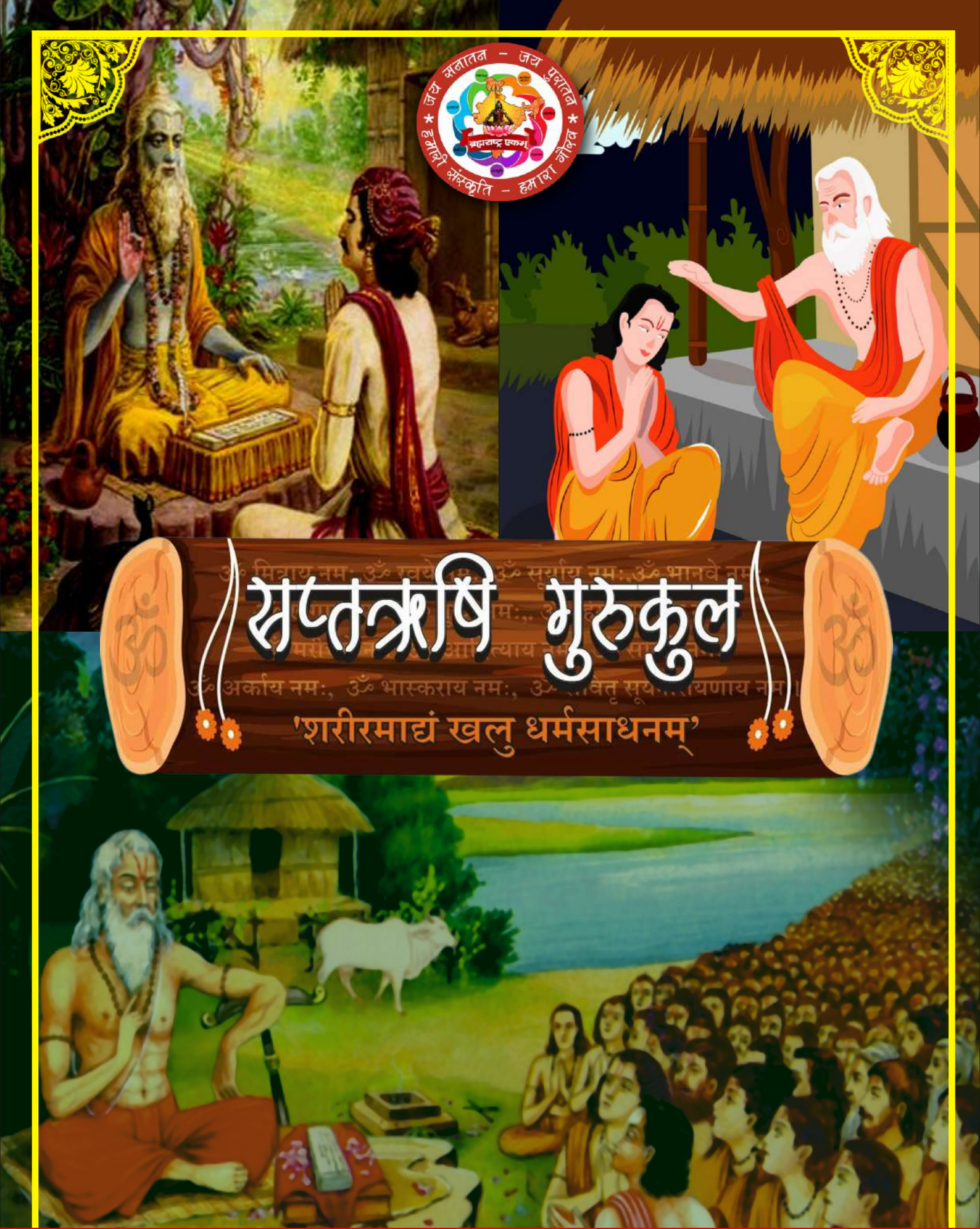

सनातन | संस्कृति | सहयोग | समानता | सशक्तिकरण | सद्भावना | समर्पण

ग्राम: गोबरदहा, जिला मिर्जापुर, (उ0 प्र0) संपर्क सूत्र: 9919313222, 9919243222, 7309547616, 7380650443